पण्डितजी से पैसे नहीं लेते, वो हमें धर्म की बातें बताते हैं, सुखी होने का मार्ग बताते हैं; जब मैं घर पैसे लेकर वापिस पण्डितजी के पास जाती, तब पण्डितजी कहते ओ फ्राकवाली मुई! अपने बाप से कहना ये पण्डित उधार नहीं करता, नगद सौदे वाला है। मैं नहीं मानती, तब प्यार से अमृत मन्त्र याद कराते और पुचकार कर कहते, बेटा! देख मैंने तुझे मन्त्र दिया, मैं तेरा गुरु हुआ, गुरु बाप से बड़ा होता है, जा पैसा दुकान पर देकर आ; आखिर पैसे दिये बिना पण्डितजी नहीं मानते थे। पण्डितजी की निर्लोभ वृत्ति ही आज वर्तमान में मङ्गलायतन के रूप में जिनमन्दिर एवं विश्वविद्यालय के रूप में प्रस्फुटित हुई है, वह अपने उद्देश्यों को जीवन्त रखें, यही भावना है।

मन्दिरजी में कक्षा में मुझे सबसे आगे बैठाते और मन्त्र सुनाने को कहते, जब मन्त्र सुनाती तो बहुत खुश होकर मुझे पुरुस्कार देते थे।

काफी वर्षों तक आदरणीय पण्डितजी से मुलाकात नहीं हुई। फिर मङ्गलायतन पञ्च कल्याणक में पण्डितजी को देखा तो हृदय कमल प्रस्फुटित हो उठा। पण्डितजी भी पहिचान गये, उन्होंने बहुत आशीर्वाद दिया और समाचार पूछे; पुनः मङ्गलायतन प्रवास में आदिनाथ विद्यानिकेतन के बच्चों को पढ़ाने अलीगढ़ से मङ्गलायतन आते थे तब पण्डितजी से पढ़ने का अवसर मिला। कभी लाल दवाईवाली, कभी फ्राकवाली, कभी बेटी वत स्नेह करते थे।

स्व में बस, पर से खस आयेगा, आत्मा में अतीन्द्रियरस, इतना करोगे तो बस, शरीर-मन-वाणी से भिन्न निजात्मा के आनन्द में डुबकी लगाते हुए पढ़ाते।

वे निश्चित ही भव्य हैं क्योंकि पद्मनन्दिपंचविंशति में आचार्यदेव कहते हैं - जिस जीव ने चैतन्यस्वरूप आत्मा की बात प्रसन्नचित्त से सुनी है, वह भव्य है और भावि निर्वाण का पात्र है।

क्योंकि आदरणीय पण्डितजी को बीमारी की अवस्था में भी यदि मन्त्र (वस्तु स्वरूप के सिद्धान्त) पढ़ते हुए बेहोशी में मैं ज्ञायक हूँ की धुनी रमाते रहते हैं, अपने सेवकों को भी शरीर अलग और आत्मा अलग का पाठ पढ़ाते हुए देखकर आँखें भींग जाती हैं।

पूज्य गुरुदेवश्री के सच्चे प्रहरी के रूप में रहकर जन-जन तक सुखी होने का पाठ पढ़ाया है 'धन्य है वे जीव नर भव पाय यह कारज किया' हम भी उनके पथानुगामी बनें यही भावना है।

मङ्गल समर्पण

संस्मरण

— **कामना जैन,** सोनगढ़

प्रकाशित सूर्य की तुलना, कभी दीपक से नहीं होती।
सुशीतल चन्द्र की गणना, कभी तारों से नहीं होती॥
बताया सिद्धसम निजरूप, कराया ज्ञान निज-पर का।
पूज्य पण्डितजी की महिमा, कभी वचनों से नहीं होती॥

इस निकृष्ट पञ्चम काल में हम भक्तों के तारणहार, निजस्वरूप की पहचान करानेवाले, भगवान आत्मा कहकर पुकारनेवाले परम उपकारी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समागम में रहकर तत्त्वाभ्यास करनेवाले, उनके अनन्यभक्त, भारतवर्ष के कोने-कोने में जाकर तत्त्वप्रचार कर उसे जन-जन को हृदयंगम करानेवाले वयोवृद्ध विद्वान पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी के बारे में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है।

मुझे याद है बचपन के वो दिन, जब आदरणीय पण्डितजी प्राय: देहरादून आया करते थे, और अपनी अद्भुत कक्षा पद्धति के माध्यम से देहरादून के सभी मुमुक्षुओं के साथ स्वाध्याय किया करते थे। उन्हीं की प्रेरणा से देहरादून मुमुक्षु मण्डल द्वारा स्वाध्याय भवन का निर्माण हुआ, जिसमें आज भी नियमितरूप से स्वाध्याय चलता है। मुझे लौकिक शिक्षा में व्यस्तता के कारण कभी-कभी ही स्वाध्याय का लाभ लेने का मौका मिलता था। लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका के 1-80 तक प्रश्नोत्तर सुनाने पर पारितोषिकस्वरूप मिले 100 रुपये को आज तक मैं भूली नहीं हूँ। भले ही उस समय मात्र याद करने से उसमें गर्भित भेदज्ञान समझ में नहीं आया था परन्तु आज उस समय के याद किये कुछ सिद्धान्तों का मर्म आत्मकल्याण में अवश्य निमित्तरूप होगा – ऐसा भासित होता है।

बाल्यावस्था से ही मेरे जीवन में तत्त्वज्ञान का बीजारोपण करनेवाले पूज्य पण्डितजी ही हैं। उनका सारगर्भित प्रिय पद – **'स्व में बस, पर से खस, आयेगा आत्मा में अतीन्द्रिय रस, यही है अध्यात्म का कस, इतना करो तो बस'** आज भी कानों में गुंजायमान होता है। उनके समागम का लाभ तो मुझे अधिक समय तक प्राप्त नहीं हो पाया परन्तु बाद में उनकी शिष्या श्रीमती बीना जैन, देहरादून के द्वारा कराये जानेवाले स्वाध्याय के माध्यम से जिनवाणी का मर्म समझने का अवसर मिला और उन्हीं के सहयोग से तत्त्व के प्रति रुचि होने के कारण पुण्योदय से मुझे पूज्य गुरुदेवश्री के प्रभावनायोग में, सम्मानीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी की प्रेरणा से वर्ष

मङ्गल समर्पण

2003 में निर्मित तीर्थधाम मङ्गलायतन में साढ़े पाँच वर्ष रहकर स्वाध्याय एवं चिन्तन-मनन करने का सुअवसर मिला। प्रारम्भिक एक-दो वर्ष तक पण्डितजी, मङ्गलार्थी बच्चों की कक्षा लेने के लिए अलीगढ़ से मङ्गलायतन आया करते थे। बाद में स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने के कारण मङ्गलायतन मात्र दर्शन हेतु पधारने लगे। आज भी पण्डितजी की बाहर में चाहे शरीर और इन्द्रियों में शिथिलता दिखायी देती हो परन्तु अन्तर में जागृत अवस्था निरन्तर चलती है। यह जीवनभर तत्त्वाभ्यास का ही फल है।

तीर्थधाम मङ्गलायतन में मुझे अनेक विद्वानों के स्वाध्याय द्वारा जिनवाणी के रहस्यों को समझने का अवसर मिला। उन्हीं की प्रेरणा से पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन को नियमितरूप से सुनकर तत्त्व को समझने की उत्कण्ठा एवं पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति अपार महिमा जागृत हुई।

माननीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी का मेरे जीवन पर अनन्त उपकार है। यदि बाल्यावस्था में तत्त्वज्ञान के संस्काररूप बीजारोपण न हुआ होता तो मेरे जीवन में आत्मकल्याण की भावना एवं तत्त्व के प्रति रुचि कभी जागृत नहीं होती।

अन्त में मैं कुछ पंक्तियां पण्डितजी को समर्पित करते हुए अपने मन में उदित असीमित भावों को विराम देने का प्रयास करती हूँ.....

निज आतम का ध्यान धरें, जल्दी से भगवान बनें।
जैनधर्म के पथ पर चलकर मुक्ति वधू का वरण करें॥

पूज्य पण्डितजी के चरणकमलों में मेरा बारम्बार नमन एवं कोटि-कोटि अभिनन्दन।

आदर्श आत्मार्थी अध्यात्मविभूषित पूज्य पण्डितजी

— **राजेन्द्रकुमार जैन,** विदिशा

आज का हमारा नगर विदिशा, मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से मात्र 50 किलोमीटर के अन्तर पर स्थित है और प्रसिद्ध बौद्धस्थली सांठा से लगभग 5 किलोमीटर पर है। प्राचीन भद्रिलपुर (मद्दलपुर) जो कि दसवें तीर्थङ्कर भगवान शीतलनाथस्वामी की गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान भूमि है, यहाँ की विंध्याचल पर्वतमाला की उदयगिरि पर अब भी शिलालेख और भगवान के चरण एवं प्रतिमाएँ हैं। यह ही मलयदेश, मालवा का मद्दलपुर है। पुरातत्त्व और जैनसंस्कृति की प्राचीन धरोहरों से चौथी शती से आठवीं शती तक का जैन पुरातत्त्व यहाँ उपलब्ध है। पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का यहाँ पदार्पण दो बार हुआ है और वे मेरे पूज्य पिताश्री स्व. श्रीमंत दानवीर सेठ खिताबराय लक्ष्मीचंद जैन से धर्मभाव रखते थे। मैं आज 78 वर्ष में चल रहा हूँ, पर मैं 14 वर्ष की उम्र से सोनगढ़ जाता रहा हूँ।

पूज्य वयोवृद्ध पण्डित कैलाशचन्द्रजी साहब की सरलता, अपार ज्ञान, सहज सरल प्रवृत्ति तन्मयता और ज्ञान का अपार भण्डार, विदिशा का मुमुक्षु समाज आज भी स्मरण करता है। वे यहाँ महीनों रहे हैं और स्वाध्याय द्वारा अन्तर आत्मा की अमिट छाप उन्होंने यहाँ के जनमानस पर छोड़ी हैं। मेरे पूज्य पिताश्री ने 1933 में ही ताड़पत्रीय प्रथम श्रुतस्कंध षटखण्डागम (धवला) का प्रकाशन प्रारम्भ कराया, इस ने उन्हें सभी में जाहिर कर दिया। यही प्रथम श्रुतस्कंध आज दिगम्बर संप्रदाय के पास है। इसके अब तो दो संस्करण छप चुके हैं। अनुवाद अंग्रेजी-संस्कृत में होकर 4-6 पुस्तके भी छप गयी है। पूज्य अध्यात्ममूर्ति गुरुदेव इसे बहुत सराहते थे।

पूज्य बड़े पंडितजी वयोवृद्ध कैलाशचन्द्रजी भी पूज्य पिताश्री के सान्निध्य से प्रसन्न थे। उनके स्वाध्याय में विभिन्न कक्षाओं में दिन भर तांता लगा रहता था। महिलाओं, बच्चों, मुमुक्षुओं और सर्वजनों को यथायोग्य वे ज्ञानधारा प्रदान करते और हमारे न्यास की शिक्षण संस्थानों में भी भ्रमण कर उनके व्याख्यान कराये गये हैं।

उनके परिणाम, अपने निज स्वभाव में ही रहते हैं और आज 98वर्ष की आयु में भी वे निजधारा में गोते लगाते रहते हैं।

हम सभी की मङ्गल कामना है कि उनके अंतश: में बैठी यह ज्ञानधारा वेगवती हो और उनके परिणाम अपनी गहराई में बैठें और वे निकट भवी हों। वे शतायु हों, वे दीर्घजीवी हों, उनके श्रीचरणों में वन्दना।

....उसका प्रकाश आज भी आलोकित कर रहा है

— **आरती-पुष्पराज जैन,** कन्नौज

पण्डित कैलाशचन्द्रजी साहब की जीवनशैली पर आधारित जो वृहद विशेषांक मङ्गलायतन टाइम्स में निकलने जा रहा है, उसके लिये हमारी महती शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

देवेन्द्रजी का पत्र पढ़कर मेरे मन में 30 साल पुरानी स्मृतियों की फिल्म चलने लगी। स्मृतियों के आलोक में अपने बचपन से लेकर शादी से पहले के दिनों पर दृष्टिपात करती हूँ तो उन भूली-बिसरी यादों में पण्डितजी साहब को विस्मृतियों की नगरी में जीवन्त पाती हूँ।

मण्डला (मध्यप्रदेश) में रहनेवाले डॉ. इन्द्रकुमार गोयल स्वाध्यायी एवं विद्वान मुमुक्षु मेरे पिता थे। धर्म-परायणा, वात्सल्यमूर्ति श्रीमती कमला गोयल मेरी माता हैं। उस समय मेरी शादी नहीं हुई थी। धार्मिक शिक्षा प्राप्त करने की तरफ मेरी बहुत रुचि थी। श्रीमती पुष्पादेवी 'जीजीबाई' के माध्यम से सन् 1981 में धर्म की क्लास में पण्डितजी साहब से मेरा प्रथम परिचय हुआ था। सफेद धोती, आसमानी कमीज, सर पर टोपी, हाथ में बेंत और कड़कती हुई बुलन्द आवाजवाले एक महामानव ने पहली बार में ही हमारे दिलों में अपना घर बना लिया था। पण्डितजी साहब का पढ़ाने व पाठ याद कराने का अन्दाज भी निराला था। क्लास में ही पढ़ाते थे और वहीं याद करा देते थे। दूसरे दिन सुनते थे और न सुनाने पर या क्लास में सुगबुग होने पर डण्डा खटकाते थे। हम सब उन्हें 'डण्डावाले पण्डितजी' कहते थे परंतु सिर्फ उनकी आवाज कड़क थी, वे तो सरल ह्रदय थे। सबके प्रति असीम-स्नेह की भावना उनके दिल में हिलोरें मारती थी। ज्ञान की आँख में पके हुए, निखरे हुए पण्डितजी ने हमारे अन्दर जो ज्ञान की ज्योति प्रज्वलित की, उसका प्रकाश हमें आज भी आलोकित कर रहा है।

हमारे जैसे न जाने कितने ही लोगों के जीवन में उन्होंने ज्ञान-ज्योति के द्वारा धर्म का प्रकाश फैला दिया है। यही दिव्य-प्रकाश उनके जीवन को चारितार्थता प्रदान करता है। ज्ञान की आग में जलकर कोई सूरज बने न बने, दीपक अवश्य बन जाता है, क्योंकि सूरज तो सिर्फ दिन में जगमगाता है परन्तु दीपक तो अहर्निश ज्योति प्रदान करता है। उन्होंने पूज्यश्री कानजीस्वामी की अनुकम्पा और ज्ञान की अलख ज्योति पूरे भारतवर्ष में जगाने के प्रति एकनिष्ठ साधना के बल पर जीवन में उस ऊँचाई को पाया जो, अहं शून्य थी। आपने शिक्षादान के क्षेत्र में मुमुक्षु समाज में एक अनूठा गौरव प्राप्त किया है।

ज्ञान कभी मरता नहीं, और ज्ञानी को विषमतम परिस्थितियों में भी संभालकर रखता है। अपने उसी ज्ञानदान के कारण स्व–पर हित में तत्पर रहनेवाले पण्डितजी साहब आज भी अपने आपमें एक सजग प्रहरी की तरह पूर्ण जागृत व श्रद्धावान हैं।

हमारी कामना है कि हम सबको उनका साथ एवं आशीर्वाद इसी तरह हमेशा प्राप्त होता रहे, तथा उनकी सजगता यूँ ही अनवरत साधना की तरफ अग्रसर होती रहे..... !

महाभाग्यशाली जीव : पण्डितजी

— श्रीमती भूरिबाई

दिगम्बर एजेंसी तुलाराम चौक, जबलपुर।

आदरणीय श्रीमान् हमारे आदर्श आत्मार्थी विद्वान, पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी के जीवन से देश के सम्पूर्ण मुमुक्षुभाई परिचित हैं। पूज्य गुरुदेवश्री के सान्निध्य में रहकर आपने जो तत्त्वज्ञान की कला सीखी, वो आपने सारे देश के आत्मार्थी भाई–बहिनों को अपना पूरा ज्ञान समर्पण करके सबको सिखाई।

चालीस साल पहले की बात है – आप गाँव–गाँव में जाकर, गुरुदेव का बताया हुआ तत्त्वज्ञान परोसते थे। सभी मुमुक्षुभाई आपसे अपने गाँव में पधारने को विनती करते। सबको ऐसा लगता कि कब पण्डितजी साहब, हमारे गाँव में पधारें। हमारे महान पुण्य के उदय से, पण्डितजी साहब हमारे गाँव में, जबलपुर रांझी में पधारे। एक माह तक रहे। जैन सिद्धान्त के छह भाग पण्डितजी ने सबको खूब अच्छी तरह से पढ़ाये। छोटी समाज थी, छोटा गाँव था, पहली बार पण्डितजी अपने घर आये। सबको बहुत उत्साह था, चार बजे सबेरे उठना, कुएँ से पानी निकालना, मुँह–हाथ धोकर घूमने जाना, फिर 5 से 6 बजे तक मन्दिरजी में क्लास लेना। फिर नहा धोकर मन्दिर जाना, पूजन करना, तथा 9 से 10 बजे तक प्रवचन करना, घर में भी वही तत्त्वज्ञान की चर्चा करना।

फिर 3 से 4 बजे तक दोपहर में क्लास, फिर रात को प्रवचन, इस तरह पण्डितजी की दिनचर्या थी। एक महीने तक ऐसा लगता था, मानो रांझी में छोटा–सा शिविर लगा हो। पण्डितजी महा भाग्यशाली जीव हैं, भविष्य में भगवान बनेंगे, तथा सबको भगवान बनने का मार्ग बता रहे हैं। उस समय तीव्रता से गुरुदेव का विरोध चल रहा था, लेकिन पण्डितजी अपना तत्त्वज्ञान का डंका बजाते रहे।

मङ्गल समर्पण

एक बार बिजौलियाँ में भी पण्डितजी की वाणी का लाभ मिला। इतना विरोध होने के बावजूद पण्डितजी ने अपना काम नहीं छोड़ा। शिविर लगाना, क्लास लेना, परीक्षा लेना पण्डितजी का काम चलता रहा। आपने ऐसा काम किया जो अनेक पीढ़ियों तक चलता रहेगा।

आपने मङ्गलायतन की स्थापना करके, सारे देश में गुरुदेव के तत्त्वज्ञान को जीवित रखा। आपने साक्षात कैलाशपर्वत बनवाया, तथा भगवान आदिनाथ को पधराया। दर्शन करके ऐसा लगता है कि इस पंचम काल में भी, हमको साक्षात् कैलाशपर्वत के दर्शन हुए हों। वहीं विद्यालय खोलकर विद्यार्थियों को तत्त्वज्ञान की शिक्षा दी जा रही है।

पण्डितजी साहब ने तो तत्त्वज्ञान का देश में डंका बजाया, पर उनके सुपुत्र श्रीमान पवनकुमारजी ने तो, विदेश में भी तत्त्वज्ञान परोसा। लन्दन में, अमेरिका में पञ्च कल्याणक कराये, तथा गुरुदेव के नाम का डंका बजाया। इस तरह पण्डितजी की अपूर्व क्षमता है , उनका हम सब मुमुक्षु के ऊपर बहुत बहुत उपकार है। मङ्गलायतन की रचना, तथा धन्य मुनिदशा की रचना, सारे देश में एक अपूर्व कलाकृति है। ऐसी रचना पूरे देश में, कहीं देखने को नहीं मिलती। आपने अपने जीवन में गुरुदेव के तत्त्वज्ञान की खूब प्रभावना की, और आज भी मङ्गलायतन के द्वारा, गुरुदेव के तत्त्वज्ञान की प्रभावना हो रही है।

ऐसे हमारे पूज्य आदर्श पण्डितजी साहब की हम, बार-बार भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं, तथा हमने व हमारे बच्चों ने (अशोककुमार, अभयकुमार ने) जो उनसे तत्त्वज्ञान सीखा है, उससे हम अपना जीवन सार्थक मानें, आगामी समय में अपना कल्याण करें।

ऐसी मंगल भावना है कि पण्डितजी अपने जीवन में स्वस्थ व दीघायु हों व अब भी अपनी वाणी से सद् उपदेश करें।

उत्कृष्ट आत्मार्थी – पण्डित कैलाशचन्दजी

— **विनोदकुमार सिंघई,** जबेरा, दमोह (मध्यप्रदेश)

इस हुण्डावसर्पिणी पंचम काल में पूरे विश्व में जिनधर्म ध्वजा फहरानेवाले धर्माकाश में ध्रुवतारे की तरह चमकनेवाले अध्यात्म युगपुरुष पूज्य गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी के स्वानुभूतिमय प्रभावना योग में सम्पूर्ण भारतवर्ष व विदेशों में भी जिनेन्द्र कथित तत्त्व को गहराई से समझनेवाले अनेक जीव तैयार हुए, जिससे सोनगढ़ अध्यात्म विद्या का एक बड़ा केन्द्र बन गया। आत्महित की बुद्धि से सहज ही सैकड़ों विद्वान, तत्त्व की अद्‌भुत प्ररूपणा करने में कुशल हुए। उनमें से जिनवाणी के गूढ़ तत्त्वों को सरल एवं सुबोध शैली में क्लास पद्धति से प्रसारित करनेवाले निस्पृह एवं निर्लोभ वृत्तिवाले आत्मार्थी विद्वान पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी जैन, बुलन्दशहर, पूज्य गुरुदेवश्री के अंतेवासी शिष्य के रूप में आज भी अपने ९8 वर्ष में चल रहे हैं।

प्रथम तो पूज्य गुरुदेव एवं पूज्य बहिनश्री ने इस काल में आत्मानुभवरूप सम्यग्दर्शन प्रगट किया, यह बड़ा आश्चर्य है; ऐसा लगा तब पण्डितजी ने सोनगढ़ में ही रहकर जिनागम के सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्त्वों का गहराई से अभ्यास किया। उसमें सिर्फ आत्मानुभूति का लक्ष्य रखा, तदनुसार गहन पुरुषार्थ भी चलता रहा। फिर तो पूरे भारतवर्ष में गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्व को जन-जन में क्लास पद्धति से तैयार कराया। जिससे जिनागम के रहस्य को एवं गुरुदेवश्री के अध्यात्म को समझने में सभी को सरलता हुई।

आपकी शैली प्रवचन की नहीं थी, किन्तु क्लास पद्धति से प्रत्येक विषय को श्रोताओं को वहीं तत्काल याद करा देते थे। यह शैली पण्डितजी के पास ही है। इनके खास विषय थे – द्रव्य-गुण-पर्याय; छह सामान्यगुण, छह द्रव्य, षट्कारक, सात तत्त्व, निमित्त-उपादान, उपादान-उपादेय, पाँच भाव आदि तथा छहढाला की दूसरी ढाल एवं मोक्षमार्गप्रकाशक सातवें अध्याय में निश्चयाभासी की 10 भूलें, व्यवहाराभासी की नौ भूलें, उभयाभासी की तीन भूलें, और फिर निश्चय-व्यवहार के दस बोलों द्वारा उनका सुन्दर स्पष्टीकरण अनेक दृष्टांत में लगाना आदि थे। इन सभी विषयों की व्यवस्थित विधि से समझाने व याद करने के उद्देश्य से पण्डितजी ने जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के आठ भाग तैयार किये। जिसमें उन विषयों का प्रश्नोत्तर पद्धति से सुन्दर-स्पष्टीकरण किया गया है।

मङ्गल समर्पण

हमारे जबेरा (दमोह) मध्यप्रदेश में पण्डितजी का पाँच बार शुभागमन हुआ, जिससे हमारी पूरी जैन समाज को विशेष तत्त्वलाभ प्राप्त हुआ।

उक्त सभी विषयों को आप बोलों की पद्धति से याद कराते थे। जैसे उपादान-उपादेय सम्बन्ध को 25 बोलों द्वारा तैयार कराते थे, जो प्रवेश रत्नमाला भाग-2 में लिपिबद्ध किया गया है।

ऐसे ही छहढाला दूसरी ढाल में 'चेतन को है उपयोगरूप..... न्यारी है जीव चाल' में प्रत्येक के बोल लगाकर अनेक दृष्टान्त द्वारा याद कराते रहे हैं।

इसी प्रकार मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवें अध्याय में निश्चयाभासी प्रकरण में पण्डित टोडरमलजी ने प्रथम शक्ति अपेक्षा भगवान ने पाँच बातें बतलाईं हैं, उसे यह प्रगट पर्याय में मान लेता है -

(1) मैं सिद्धसमान शुद्ध हूँ। (2) केवलज्ञानादि सहित हूँ। (3) भावकर्म, द्रव्यकर्म नोकर्म से रहित हूँ। (4) परमानन्दमय हूँ। (5) जन्म-मरणादि दुःख मेरे नहीं हैं, तथा

दूसरे, भगवान ने शुभभावों को बन्ध का कारण हेय बताया है, तो उसे छोड़ अशुभ में प्रवृत्ति करता है, जैसे - (1) शास्त्राभ्यास करना निरर्थक बतलाया है। (2) द्रव्यादिक के तथा गुणस्थान, मार्गणा आदि के विचार को विकल्प ठहराता है। (3) तपश्चरण करने को वृथा क्लेश मानता है। (4) व्रतादिक करने को बंधन में पड़ना मानता है। (5) पूजनादि कार्यों को शुभास्रव जानकर, हेय प्ररुपित करता है।

इसी प्रकार व्यवहाराभासी प्रकरण में 9 भूलों को स्पष्ट किया जाता है -

(1) कोई कुल अपेक्षा धर्म को मानते हैं। (2) कोई परीक्षारहित शास्त्रों की आज्ञा को धर्म मानते हैं। (3) कोई परीक्षा तो करते हैं, पर मूल प्रयोजनभूत बातों की परीक्षा नहीं करते। (4) कोई संगति से जैनधर्म धारण करते हैं। (5) कोई आजीविका के लिये, बड़ाई के लिये जैनधर्म धारण करते हैं। (6) कोई देव भक्ति, गुरु भक्ति एवं शास्त्र भक्ति का अन्यथारूप श्रद्धान करते हैं। (7) कोई प्रयोजनभूत सात तत्त्वों का अन्यथारूप श्रद्धान करते हैं। (8) कोई सम्यग्ज्ञान का अन्यथारूप विश्वास करते हैं। (9) कोई सम्यक्चारित्र का अन्यथारूप आचरण करते हैं।

उक्त दोनों आभासों के अध्ययन से यह मालूम होता है कि पण्डितजी की लेखनी में विषय की मौलिकता तो है ही, किन्तु प्वाइंट टू प्वाइंट विवेचन किया है। उनकी यह शैली समझ में आने पर विषय को समझने व याद रखने में बहुत सरलता होती है। जिसे पण्डित कैलाशचन्दजी ने निकालकर अपनी पुस्तकों में प्रस्तुत किया है।

इसी प्रकार उभयाभासी का प्रकरण तो और भी रोचक एवं निश्चय-व्यवहार के स्वरूप को स्पष्ट खोलनेवाला है। उभयाभासी की तीन भूलों का जिक्र किया है – (1) वह दो मोक्षमार्ग मानता है, जबकि एक वीतरागभाव ही मोक्षमार्ग है, निरूपण अपेक्षा दो प्रकार मोक्षमार्ग जानना।

(2) वह दोनों को उपादेय मानता है। जबकि एक वीतरागभावरूप निश्चय मोक्षमार्ग प्रगट करने योग्य उपादेय है; व्यवहार, बन्ध का कारण होने से हेय है।

(3) वह कहता है कि हम श्रद्धान तो निश्चय का रखते हैं और प्रवृत्ति व्यवहाररूप। जबकि निश्चय का निश्चयरूप और व्यवहार का व्यवहाररूप श्रद्धान करने का सुन्दर स्पष्टीकरण पण्डितजी ने किया है – जैसे, मिट्टी के घड़े को मिट्टी का ही मानना, यह निश्चय का निश्चयरूप श्रद्धान है तथा घड़ा, घी का बिल्कुल नहीं है – ऐसा मानना, वह व्यवहार का व्यवहाररूप श्रद्धान है। इसी प्रकार अनेक सिद्धान्तों में लगाकर घटाना।

उक्त तीनों मान्यताओं को मिथ्यादृष्टिपना बताया, तब अंत में टोडरमलजी का शिष्य अति विनयवंत होकर कहता है कि हमारी सभी मान्यताओं को आपने मिथ्या बता दिया तो हम निश्चय-व्यवहार को कैसे समझें – उसके उत्तर में निश्चय-व्यवहार का सच्चा स्वरूप बहुत ही सुन्दर तरीके से स्पष्ट किया है, जिसे पण्डित कैलाशचन्द्रजी ने दस बोलों द्वारा प्रवेश रत्नमाला, भाग 6 में निकाल कर रखा है। (मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 250 से 253 तक)

जिसे अनेक उदाहरण में लगाकर घटाया है।

इस तरह से मोक्षमार्गप्रकाशक का अभ्यास करने से इसकी विषयवस्तु एवं क्रम ख्याल में आता है, अर्थात् मोक्षमार्गप्रकाशक पढ़ने का तरीका समझ में आने पर बहुत आनंद प्राप्त होता है। ऐसा चिंतन हमें पण्डितजी से ही मिला है।

समयसार आदि ग्रंथों की गाथाओं को भी बोल द्वारा पढ़ाने की शैली रही है।

इस प्रकार **पण्डितजी के हृदय में पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति अत्यंत भक्तिभाव रहा है। वे अपनी प्रत्येक कक्षाओं में गुरुदेवश्री का स्मरण किये बिना नहीं रहते थे।** आज भले शरीर की क्षीणता के कारण उनका लाभ हमें प्राप्त नहीं हो पा रहा है, पर उनकी लेखनी से उनका प्रयोजनभूत तत्त्वों के सम्बन्ध में चिन्तन उनके गहरे श्रद्धान-ज्ञान का अवलोकन कराता है। वे बहुत ही निर्भीक एवं स्पष्टवादी हैं, शैली कड़क रही है, पर सत्य होने से किसी को बुरा नहीं लगता था। सभी जन बड़ी ही रुचि से प्रत्येक विषय को समझते थे एवं कापियों पर लिपिबद्ध करते थे। सभी जगह आप डण्डावाले पण्डितजी के नाम से जाने जाते हैं।

मैंने उनकी कक्षाओं का लाभ सोनगढ़ एवं जबेरा में रहते हुए बहुत लिया तथा विषय को अच्छी तरह पकड़ने का प्रयत्न किया है, और अभी भी प्रवचनार्थ जाता हूँ तो मोक्षमार्गप्रकाशक के तीनों आभासों में बतलाई हुई भूलों एवं उभयाभासी प्रकरण में निश्चय-व्यवहार के दस बोलों द्वारा ही उनके यथार्थ स्वरूप का ही क्लास पद्धति से विश्लेषण करता हूँ, जिसे सभी श्रोतागण विशेष जिज्ञासापूर्वक सुनते हैं, लिखते हैं एवं याद करते हैं, और अपने भ्रम को निकालकर मिथ्यात्व निकालने का पुरुषार्थ शुरु करते हैं। इस प्रकार से कक्षाओं का प्रयोग मैं इन्दौर, मलकापुर, मेरठ, मणिनगर, तलौद एवं इस वर्ष रतलाम में कर चुका हूँ। सभी जगहों पर विशेष लाभ मिलने पर इसकी सराहना भी बहुत हुई है, मुझे स्वयं भी पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रदत्त तत्त्व को पकड़ने में बड़ी ही सरलता हुई है।

सभी प्रवचनार्थ जानेवाले विद्वानों को मेरा सुझाव है कि वे सभी पण्डितजी द्वारा लिखित भागों का गहन अभ्यास करें, तथा इसी पद्धति से एक क्लास अवश्य लें, जिससे श्रोताओं को विशेष लाभ मिल सके। इसी प्रकार प्रत्येक विद्यालयों में शास्त्री करनेवाले विद्यार्थी भी इसी पद्धति द्वारा जगह-जगह तत्त्वज्ञान करावें।

इस कलिकाल में जगह-जगह जाकर तत्त्वज्ञान का डंका बजानेवाले पण्डित कैलाशचंदजी एक उत्कृष्ट आत्मार्थी हैं, विरक्त परिणति हैं, उनका जीवन सिद्धान्त, न्याय एवं सत्यता की कसौटी पर खरा उतरता होने से हम सबको अनुकरणीय है। कहीं पर एवं कभी भी उनने किराये के रूप में भी एक पैसा नहीं लिया।

मङ्गल समर्पण

वे स्वस्थ हो, दीर्घायु हों, एवं आगामी भव में देव-शास्त्र-गुरु के सानिध्य में रहकर, आत्मानुभूति द्वारा संयम की आराधना करते हुए शीघ्र ध्रुव, अचल व अनुपम मोक्षदशा को प्राप्त होवें - ऐसी मेरी मंगल भावना है।

— राजा बहादुर जैन
अध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल खण्डवा

आदरणीय पण्डितजी ने जीवन भर वीतरागी तत्त्वज्ञान का प्रचार, अपनी अद्‌भुत 'कक्षा' प्रणाली से सम्पूर्ण भारत में लगन एवं निष्ठापूर्वक किया। आप खण्डवा 'कक्षा' लेने कई बार पधारे। आपका वात्सल्य खण्डवा के मुमुक्षु भाई-बहनों पर, छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सब पर बराबर रहता था।

आपने पूज्य कानजीस्वामी के सम्पर्क में सोनगढ़ जाकर उनके सम्बन्ध में पूर्ण जानकारियाँ लेकर, अध्ययन कर, उनकी जीवनशैली को निहारकर, संध्या घूमने जाते समय प्रश्न पूछा-परखा और उनके अनन्य भक्त हुए।

आप स्वस्थकारी हो। खण्डवा में भोजन लेने के बाद आपको इतना लगता था - कि यह मुझे बहुत भारी है कि मैं आपकी रोटी खाता हूँ। आप पोस्टकार्ड के स्वयं पैसे देते थे, कभी नहीं लेते थे। जिसके घर भोजन होता था, आप स्वयं बोल देते थे, लौकी की सब्जी में लाल टमाटर ज्यादा डालना। मीठा बिल्कुल नहीं खाऊँगा। इतना सहज आपका जीवन था।

विदाई समारोह में आपने कभी भी नारियल, शाल, खादी आदि ग्रहण नहीं किये, उल्टे हमें आपने डांट पिलाई थी। शिक्षा तथा धर्म प्रचार हेतु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका रत्नमाला देहरादून से प्रकाशित है। सातों भाग का सेट बुलन्दशहर से छोटे से छोटे मन्दिर में पहुँचाये थे। जिसका लाभ मिला। तीर्थधाम मङ्गलायतन आपकी याद बनाये रखेगा।

खण्डवा मुमुक्षु मण्डल से सभी भाई-बहन आपके स्वस्थ्य ठीक मिले तथा आप दीर्घायु हों - ऐसी कामनाएँ हार्दिक शुभकामनाएँ करता है।

आपके चरणों में नमस्कार हो!

जिन खोजा, तिन पाइयां

— **विवेक शास्त्री,** इन्दौर

जिनशासन अगम्य है जिसकी सन्मतिरूपी किरणों को छूकर भव्य जीवों के जीवन कमल खिल रहे हैं। भव्य जीवों के भाग्यवश मिथ्यात्व के घटाटोप अंधकार को चीरते हुए सोनगढ़ (गुजरात) के संत श्री कहानगुरु ने अपनी पुरातन मान्यता त्याग, दिगम्बर जैनधर्म की मंगल छाया में समकित सावन का आनन्द तथा जीवन भर स्वाध्याय परमं तप: से स्व-पर को कल्याण मन्त्र दिया।

आपकी समकित शिविर शैली से लोगों में उत्साह का संचार हुआ जगह-जगह गोष्ठियाँ स्वाध्याय शैली मुमुक्षु मण्डलों ने जिनवाणी से जीवन सजाने का संकल्प लिया, क्योंकि जिनवाणी दिशाबोधक यन्त्र है।

गुरु कहान की ही देन है कि तत्त्वप्रचार की गंगा बही। उस पावन अमृत कलश को ले पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी, बुलन्दशहर (अलीगढ़) ने गाँव-गाँव में छिड़का समाज को जगाया –

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ तू सोवत है,
जो जागत है सो पावत है, जो सोवत है, सो खोवत है॥

आपकी तत्त्व प्रचार शैली अद्भुत वन्दनीय, अभिनन्दनीय है। छोटे से छोटे गाँव जाना, साहित्य बैनर साथ ले जाना, बोर्ड पर छह द्रव्य, सात तत्त्वों का मर्म समझाना पूछना 'हाजिर जबाव घरेलू दवा' लोग मुँह लटकाये कक्षा में जाते प्रसन्न होकर लौटते, यह शिक्षक की कलाकारी का प्रभाव है। उन्होंने प्रतिकूलता, मान-सम्मान की ओर जीवन भर देखा नहीं; मात्र जिनशासन ध्वज फहराया। तत्त्व प्रचार प्रभावना का जुनून आपके रोम-रोम में बसा रहा और अपनी बकुटी टेकते हुए वय का ध्यान न करते हुए विद्यार्थी बने विद्यार्थियों को पढ़ाते रहे, मोक्षमार्ग रस लेते रहे। आप उत्साह की मूर्ति, जिनवाणी उपासक रहे। आपकी प्रतिभा आपके सात भागों के संकलन में छलकती है, लौकिक शिक्षा में तो शायद... पास होंगे परन्तु शास्त्री विद्वानों के शास्त्रीय विद्वान शिरमौर या लाल बहादुर जैसे निस्पृही जननायक विद्वान हैं।

आपके व्यक्तित्व-कर्तृत्व से झलकता है विद्या का वय से सम्बन्ध नहीं, विद्या

वही जो मुक्ति प्रदान करे, ज्ञान समान न आज जगत में सुख कौ कारण, यह परमामृत जन्म जरा मृत रोग निवारन।

आपका जीवन पाठशालामय रहा, जीवन को जिनालय बनाया, तभी तो महावीर के संदेशों को घर–घर पहुँचाया।

आपके बारे में जो भी लिखा जाय, उतना कम है। आपकी भक्ति भावना के प्रभावक मङ्गलायतन धर्मतीर्थ, महा विद्यालय, जिनशासन का ध्वज फहराते रहेंगे, ज्ञानज्योति जलाते रहेंगे। अपूर्व साधक की कार्यशैली का अनुभव कर पथानुगामी तो हुआ जा सकता है – शब्द वर्णन असक्य कार्य है।

आपकी परम भावना हम बालकों में जिनागम का उत्साह संचार करे, ऐसी मंगल भावना के साथ।

हम सब चकित रह गये

—**विनोद मोदी,** दलपतपुर, सागर (मध्यप्रदेश)

बात 1974–75 की होगी, जब पण्डित कैलाशचन्द्रजी (बुलन्दशहर) शाहगढ़ (सागर), मध्यप्रदेश में जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की कक्षायें चलाते थे।

एक दिन पण्डितजी साहब दोपहर में मोदी रमेशकुमारजी की टेलरिंग की दुकान पर पहुँच गये, पण्डितजी को आया देखकर उनको आदर से बैठाया।

पण्डितजी बोले – मोदीजी ! मुझे दो चड्डी–दो बनियान बनवा दीजिये – मोदीजी ने हाथ जोड़ बनवाने की सहमति दे दी।

दूसरे दिन पण्डितजी आये, बनियान–चड्डी देखी, अपने अनुरूप बनी देख पैक करने को कहा। मोदीजी ने पैक करके पैकेट पण्डितजी को थमा दिया, तब पण्डित बोले पैसा कितना है ? तब मोदीजी बोले – काहे के पैसे, मैं गुरुजी को थोड़ी सी भेंट नहीं दे सकता ? मैं गुरुओं से पैसा नहीं लेता।

तब पण्डितजी साहब बोले – मैं जिनवाणी सुनाकर भेंट (चढ़ौती) नहीं लेता। शिष्यों का भार अपने ऊपर लेना कहाँ का न्याय है – कबीर ने कहा है कि

गृही का टुकड़ा एक लो, छै छै अंगुल दाँत।
भजन करे तो उबरे, नहिं तो काढ़े आँत॥

गृहस्थ का एक टुकड़ा भी लो, वह छह-छह अंगुल लम्बे दाँतों से चबाया जाय तो भी मुश्किल से नहीं पचता है, भजन करे तो पच सकता है, नहीं तो आँत को फाड़ देता है – इतना कह पण्डितजी दुकान के नीचे उतर गये। मोदी रमेशजी नीचे उतरे पण्डितजी के हाथ जोडे पैकेट हाथ में दिया और उचित पैसे लेकर विदा किया।

पण्डितजी की जीवन में निर्लोभता जिनवाणी का आदर देख, हम सब चकित रह गये और विचार आया –

चाह गई चिंता गई मनुआ वे परवाह।
जिनको कछु न चाहिए ते नर शहंशाह॥

पूज्य पण्डित कैलाशचन्द्र जैन का मिथ्यादर्शन के मूल पर प्रहार

— **मुकेश जैन,** मेरठ

पूज्य पण्डितजी बहुत बड़े मनोवैज्ञानिक थे। वे जानते थे कि जीव, शरीर, पत्नी तथा बच्चों के प्रति अगाढ़ मोह के कारण संसार में फँसा हुआ है, इसी कारण प्रत्येक कक्षा में यही समझाते थे कि तू शरीर, पत्नी व बच्चों (हम चार) से भिन्न चैतन्यतत्त्व है। यदि जीव इनसे दृष्टि हटा ले तो अपने निज चैतन्यतत्त्व पर दृष्टि आ जायेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि पूज्य पण्डितजी को अनुभव प्राप्त है क्योंकि वे आत्मा की चर्चा के अतिरिक्त किसी की भी चर्चा नहीं करते थे। इस सम्बन्ध में मैं कुछ घटनाओं का वर्णन करना चाहता हूँ।

1. एक बार पूज्य पण्डितजी, आदरणीय शीतलप्रसादजी बुलन्दशहरवालों के यहाँ कक्षा ले रहे थे। सौभाग्य से मेरा भी वहाँ जाना हुआ। मैं भी ऊपर पण्डितजी के कमरे में सोया हुआ था। रात्रि के लगभग दो-तीन बजे का समय हुआ होगा, जब मेरी आँखें खुली तो मैंने देखा पूज्य पण्डितजी मोक्षमार्ग प्रकाशक के पृष्ठ 251-252 का स्वाध्याय कर रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ कि जिस विषय को वे कक्षा में हजारों बार पढ़ा चुके हैं, जो कि उनको पूर्णत: कण्ठस्थ भी है तो भी उसका इतनी रात को स्वाध्याय कर रहे थे। इससे ज्ञात होता है कि उनकी दृष्टि एक चैतन्यतत्त्व पर ही रहती है।

2. मेरठ प्रवास के दौरान में पूज्य पण्डितजी के साथ घूमने जाता था, रास्ते में कई बार ऐसा अवसर आता था कि वे रुक जाते थे, तथा मेरा कन्धा दबाकर सम्बोधन करते थे और बड़े स्नेह से तत्त्व की बात समझाने लगते थे।

3. पूज्य पण्डितजी का श्रद्धान इतना दृढ़ है कि वे कहा करते थे कि धर्म का फल तुरन्त मिलता है; यदि नहीं मिलता तो रास्ता उल्टा है।

पण्डितजी कहा करते थे कि साधर्मी भाई-बहन तो दामाद से भी अधिक सम्मानित हैं क्योंकि दामाद तो ससुराल में अक्सर आ जाया करते हैं तथा जब आते हैं तो राग की चर्चा होती है लेकिन साधर्मी भाई-बहनों का समागम तो बहुत पुण्य से मिलता है, क्योंकि जब-जब साधर्मीजन का मिलना होता है, तब-तब तत्त्वचर्चा ही होगी। वे साधर्मीजनों के लिये सब कुछ अर्पण करने के लिये तैयार रहते थे।

पूज्य पण्डितजी को कक्षा में प्रतिदिन आनेवालों के प्रति माता की तरह राग था। जिस प्रकार माता, बच्चे को डांटती है लेकिन उसके पीछे उसका उद्देश्य बच्चों को सही दिशा दिखाकर रास्ते पर लाना होता है; उसी प्रकार पण्डितजी कभी-कभी बहुत कड़ी डांट लगा देते थे, फिर समझाते थे कि यदि अब नहीं सुधरे तो यह अवसर दोबारा आनेवाला नहीं है। मैं अपने उपकारी पूज्य पण्डितजी के प्रति आत्मश्रेय की भावाना भाता हूँ।

सब उन्हीं का प्रताप है

— **श्रीमती रजनी जैन,** मेरठ

पूज्य पण्डितजी का आशीर्वाद मेरे ऊपर सदा रहा है और उनका अनन्त उपकार है। मैंने जीवन में जो कुछ सीखा है, वह उन्हीं का प्रताप है।

हमारे मेरठ शहर में मुमुक्षु मण्डल में धार्मिक रुचि बढ़ाने का श्रेय, पूर्णत: पूज्य पण्डितजी को ही जाता है। उन्होंने सबसे पहले अपनी कक्षा में लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका कण्ठस्थ करायी, जिससे सबको शास्त्रों के अर्थ व भाव समझने की योग्यता हुई और रुचि बढ़ी। उन्होंने यहाँ पर मोक्षमार्गप्रकाशक तथा श्री समयसारजी ग्रन्थ की 100-100 प्रतियाँ मंगवाई और सिखाया कि स्वाध्याय में सबके हाथों में ग्रन्थ होने चाहिए। वे समय के बड़े पाबन्द थे। वे ऊपर से जितने कठोर दिखते थे, अन्दर से उतने ही नर्म थे। मैं उनके आशीर्वाद को हमेशा अपने साथ रखना चाहती हूँ। उनकी दीर्घ आयु की भावना भाती हूँ।

एक बार मेठर प्रवास के दौरान पूज्य पण्डितजी से मैंने कहा कि मैं शास्त्रदान में कुछ धनराशि देना चाहती हूँ, परन्तु आप किसी से बताना मत। जैसे ही शास्त्रसभा आरम्भ हुई, पूज्य पण्डितजी ने सबसे पहले बैठते ही यह बात सबके सामने बता दी कि यह ऐसे कह रही हैं। वे अपने मन में विकल्पों का जरा भी भार नहीं रखते थे।

हम कैसे भूल सकते हैं ?

— **श्रीमती कविता जैन,** मेरठ

गुरु गोविन्द दोनों खड़े किसके लागू पाँय।
बलिहारी गुरु आपने भगवन दियो बताय॥

भगवान बनने की सच्ची कला भी गुरु के ही माध्यम से प्राप्त होने के कारण, गुरु की मुख्यता बतानेवाली यह कहावत एकदम सही चरित्रार्थ होती है। हमारे परिवार के जीवन को तत्त्व के माध्यम से बलनेवाले गुरु को हम कैसे भूल सकते हैं ?

तत्त्व की बात पहले हमने कभी सुनी नहीं थी, धार्मिक रुचि भी नहीं थी। एक दिन अचानक मन्दिरजी दर्शन करने गये तो पण्डितजी की कक्षा का लाभ मिला, परन्तु पहले कभी इस प्रकार की धार्मिक कक्षाओं में गए नहीं थे, शाम को कक्षा में नहीं गये क्योंकि अजीब सा लगता था। सुबहवाली कक्षा यद्यपि बहुत रुचिपूर्ण लगी थी परन्तु हिचकिचाहट इतनी थी कि शाम को जाना नहीं हुआ। आदरणीय पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी ने शाम की कक्षा में बार-बार पूछा कि सुबह जो नयी बहु कक्षा में आयी थी, वह क्यों नहीं आयी। कारण यह था हमारे शुभकर्म के उदय से जो पण्डितजी साहब ने पढ़ाया था तथा फिर सबसे साथ सुना तो हमने ठीक वैसा ही जवाब दे दिया था। शाम को पण्डितजी के बार-बार पूछने पर हम अगले दिन से कक्षा में जो गये फिर आज तक तत्त्व की बात सुनने से वंचित नहीं रहे। पण्डितजी की कक्षा में जो छह द्रव्य व सात तत्त्व सम्बन्धी भूल के बारे में सुना तो लगा हम अनादि काल से अपने सही स्वरूप को ना जानकर ही संसार में भटक रहे हैं। पण्डितजी बार-बार कक्षा में शरीर, स्त्री, पुत्रादि से भेदज्ञान कराने का अभ्यास मुख्यत: करते थे। तभी से रुचि निरन्तर तत्त्वज्ञान में लगाकर, अपने सच्चे स्वरूप को समझने की ओर अग्रसर हुई। जिन परम उपकारी गुरु ने हमें सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया व चतुर्गति परिभ्रमण से छूटने का मार्ग बताया, उन आदरणीय पण्डितजी का हमारे परिवार के जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

हमारी भावना भी यही है कि पण्डितजी द्वारा बताये गये तत्त्वों का सच्चा निर्णय हमारे

जीवन में हो। जिस प्रकार पण्डितजी अपने जीवन में तत्त्वनिर्णय की दृढ़तापूर्वक इस अवस्था में भी अचेतन मन में शरीर से भिन्न अपने भगवान आत्मा का ही भेदविज्ञान करते हैं। ऐसे परम उपकारी गुरु महाभाग्य से ही मिलने संभव हैं।

पण्डितजी हमेशा कक्षा में कहते कि कोई शंका-समाधान करना हो तो पोस्टकार्ड पर लिखकर अपनी शंकाएँ भेज सकते हो। हमने पत्रों के माध्यम से भी अपनी शंकाओं का समाधान जिनवाणी के आधार पर पण्डितजी साहब से प्राप्त किया। पण्डितजी जो भी उत्तर हमें लिखकर भेजे, हम सभी घर के सदस्य बार-बार पत्रों को पढ़कर पण्डितजी की प्रेरणाओं के आधार पर अपने आत्मकल्याण के मार्ग में लगे हैं - ऐसे परम उपकारी पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी को मैं शत-शत बार अपने परिवार की ओर से नमन करती हूँ।

परम हितैषी व्यक्तित्व

— **जगनलाल,** लखनऊ

श्री पण्डित कैलाशचन्द्रजी के बारे में मुझे जो जानकारी है, वह निम्न प्रकार है -

श्री पण्डित कैलाशचन्द्र जैन, जब से हमारा विद्यालय जूनियर हाईस्कूल था, तब से इण्टर कालिज स्तर तक वे हमारे विद्यालय के वरिष्ठ आजीवन सदस्य हैं। वह आजीवन सदस्य होने के साथ विद्यालय के परम हितैषी व्यक्ति हैं। वह विद्यालय के अध्यापकों तथा कर्मचारियों से बहुत प्रेम करते हैं।

हमारे विद्यालय को जूनियर हाईस्कूल से इन्टरमीडिएट शीघ्र कराने के लिए प्रधानाचार्यजी, प्रबन्धकजी तथा प्रबन्धसमिति को प्रेरणा दी थी और पूर्ण सहयोग दिया था। उनकी प्रेरणा व सहयोग से आज विद्यालय इन्टरमीडिएट कालिज है। विद्यालय के उत्थान के लिए विद्यालय की धन-रुपये पैसे से बहुत सहायता की है।

मैंने पण्डितजी की आध्यात्मिक बातें भी सुनी हैं, उनके अनुसार धन (रुपया-पैसा) बहुत कुछ तो है परन्तु सब कुछ नहीं है। पण्डितजी बिल्कुल लोभी-लालची नहीं हैं। पण्डितजी जैसे व्यक्ति प्राय: दुर्लभ हैं।

श्री शीतलप्रसादजी, पण्डितजी के पदचिह्नों पर चलकर प्रगतिशील व महान बने, जिनके सदृश बुलन्दशहर में कोई व्यक्ति नहीं है।

मेरा इन दोनों सन्तों को शत-शत प्रणाम।

खुली किताब है उनका जीवन

— राजेन्द्रकुमार जैन, गाजियाबाद

मुझे 1999 से 2005 तक अलीगढ़ रहने के दौरान माननीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी के सान्निध्य का सुअवसर प्राप्त हुआ। पण्डितजी की कानजीस्वामी के प्रति अगाध श्रद्धा है। श्रद्धा रखते हुए उन्होंने उनके उपदेशों को नगर–नगर, गाँव–गाँव में जन–जन तक पहुँचाया। वे आत्मा और शरीर के अलग –अलग होने की बात बड़े प्रभावी तरीके से बताते हैं। पण्डितजी का आचरण एक खुली किताब है, जो वह कहते हैं, वह उनकी चर्या में होता है। 'मेरी भावना' की प्रत्येक लाइन उनके आचरण में है। अहंकार उन्हें दूर से भी छू तक नहीं गया है।

मङ्गलायतन जो आज इस ऊँचाई पर पहुँच रहा है, यह मात्र पण्डितजी की ही सोच है तथा उनके पुण्य का सुपरिणाम है। बड़े वात्सल्य से यहाँ बच्चों की शिक्षा हो रही है। आदरणीय पवनजी, वात्सल्यपूर्वक अपने से ज्यादा बच्चों का ध्यान रखते हैं, यह शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता है।

व्यक्ति घर छोड़कर ही साधु नहीं बन सकता है, **पण्डितजी घर में रहते हुए भी सन्तों में निराले सन्त हैं। संसाररूपी कीचड़ में कमल की भाँति हैं।**

पण्डित कैलाशचन्द्रजी की आराधना, आधि–व्याधि–उपाधि से परे समाधि की साधना है।

पण्डितजी संयम का दीर्घ काल से पालन कर रहे हैं, यही कारण है उनके आभा मण्डल पर आज भी शान्तपना, निर्मलता व सौम्यता चमकती है।

हम पण्डितजी के रत्नत्रय की कुशल कामना करते हैं। उनको शत–शत नमन करते हैं। उनके आचरण को हम अपनी चर्या में लायें तो हमारा भी कल्याण होगा। पण्डितजी का व्यक्तित्व समाज के लिये प्रेरणा है।

पण्डितजी का डण्डा, गाढ़े तत्त्वज्ञान का झण्डा

— डॉ. अरविन्दकुमार जैन
सुजानगढ़ (चुरू) राजस्थान

सरल, सहज, वात्सल्ययुक्त जीवन; तत्त्वज्ञान से युक्त करुणामयी वज्रवाणी; मिथ्यात्व के भूत को भगानेवाला हाथ में डण्डा लिए माननीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी बुलन्दशहरवालों की मुमुक्षु समाज में अमिट छाप है। अनादि कालीन तीर्थंकरों की दिव्यदेशना को पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के माध्यम से वर्तमान समय में जो आध्यात्मिक चेतना का प्रचार हुआ, उसमें माननीय श्री रामजीभाई, श्री खेमजीभाई, श्री बाबूभाई, श्री लालचन्द्रभाई, डा. हुकमचन्द भारिल्ल आदि विशिष्ट विद्वानों के साथ डण्डावाले विद्वान माननीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी साहब ने मुख्य गणधरों जैसा कार्य किया।

सन् 1981 में सोनगढ़ शिविर में जयपुर महाविद्यालय के विद्यार्थी के रूप में पण्डितजी की तत्त्वनिष्ठा एवं वाणी प्रताप के दर्शन हुए। जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला, कक्षा में शिक्षण पद्धति एवं तत्त्वप्रचार में समर्पित जीवन– आपके अनुकरणीय कार्य हैं, जो आज मील के पत्थर सिद्ध हो रहे हैं।

बाई रोटी नहीं बनाती तथा पेट्रोल से मोटर नहीं चलती – जैसे सरल उदाहरणों ने जनसामान्य को तत्त्वज्ञान के प्रति आकर्षित किया, वहीं मुमुक्षु समाज को तत्त्वज्ञान की समझ एवं दृढ़ता प्रदान की।

पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान के प्रचार में पण्डितजी ने गणधर जैसा कार्य किया, वहीं आज उन्हीं के पदचिह्नों पर चलते हुए उनके पुत्ररत्न श्री पवनजी मङ्गलायतन के माध्यम से स्वामीजी के 'अध्यात्म रथ' के प्रमुख सारथियों में अग्रणी सिद्ध हो रहे हैं। मङ्गलायतन शिविरों, पञ्च कल्याणकों में उनकी उपस्थिति एवं सिंहनाद करते पण्डित द्वारा बोले जानेवाले प्रमुख सूत्र, साधर्मियों में अदम्य उत्साह भरने में तथा पूज्य गुरुदेवश्री के शासन को सजीव करने में सक्षम होते हैं।

पण्डितजी का समर्पण ग्रन्थ एवं समारोह, गुरुदेव के तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का ही अंग है। पण्डितजी के प्रति मुमुक्षु समाज का कृतज्ञता ज्ञापन करने का अनुकरणीय यह प्रयास प्रशंसनीय है।

पण्डितजी की रत्नत्रय धारा वृद्धिंगत हो, स्वरूप एवं दीर्घायु हों – ऐसी मैं भगवान महावीर दिगम्बर जैन विद्वत् समिति की ओर से मंगल कामना करता हूँ।

मेरी जीवनधारा ही बदल गयी

— **नेमीचन्द्र जैन,** दाल बाजार, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

आज से लगभग 29 वर्ष पूर्व सन् 1982 के जून माह में आदरणीय पण्डितजी साहब का लश्कर ग्वालियर में दस दिनों की क्लास आयोजित थी। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती शीला जैन उनके क्लास में जाया करती थी। मेरी धर्मपत्नी ने पण्डितजी साहब से आगामी जुलाई माह में उपनगर ग्वालियर के श्री वासपूज्य दिगम्बर जैन पंचायती मन्दिर के लिये दस दिनों की स्वीकृति प्राप्त कर ली। उस समय मैं उस मन्दिर की प्रबन्ध समिति में मन्त्री के पद पर था; अत: पण्डितजी के क्लास के आयोजन की व्यवस्था करने का उत्तरदायित्व होने के कारण मैंने हरसंभव व्यवस्था की। पोस्टर छपवाकर सब मन्दिरों में भी लगवा दिये थे।

शासकीय कार्यवश अन्यत्र जाने का मेरा कार्यक्रम पूर्व में ही निर्धारित था, अत: मैंने पण्डितजी साहब से अनुमति माँगी। पण्डितजी साहब ने कहा – मैं यहाँ केवल तुम्हारे लिये आया हूँ; अत: दस दिनों के लिए कहीं नहीं जाना है। पूर्व संस्कार एवं भली होनहार थी, काललब्धि पक गई थी, पण्डितजी साहब जैसे ज्ञानी धर्मात्मा जीव का उत्तम निमित्त उपस्थित हो गया था; अत: मैंने उनका आदेश शिरोधार्य कर लिया।

दस दिनों के तीस क्लासों में पण्डिजी साहब ने छह द्रव्य, सात तत्त्व, चार अभाव, छह सामान्य गुण, द्रव्य-गुण-पर्याय के समस्त भेद-प्रभेद के पाठ पढ़ा दिये, याद भी करा दिये। मेरे धारणाज्ञान में इस प्रकार वे पाठ बैठ गये कि आज तक याद हैं। उनकी सरलता, निस्पृहता, तलस्पर्शीता, निर्भयता, वात्सल्य, सत्यवादिता, स्पष्टवादिता, ओजस्वी वक्तता, गुणग्राहकता, गूढ़ एवं महान विषयों का सरल एवं मार्मिक शैली में हृदयग्राही, यथार्थ एवं विशद विवेचन करने की उनकी कला, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति उनकी समर्पणता आदि अनेकों गुणों ने मुझे उनका दास बना लिया। मेरा जीवन उनके निमित्त से पूर्णत: बदल गया।

उनके सत्संग के पूर्व देव-कुदेव, गुरु-कुगुरु, धर्म-अधर्म आदि का मुझे कोई विवेक नहीं था। रात्रिभोजन, अनछना जल, एवं नित्य देवदर्शन का भी मुझे कोई नियम नहीं था। दस दिनों के क्लास से उपरोक्त समस्त दोष स्वयमेव चले गये। उनके निमित्त से मुझे महादिशा मिल गयी। मेरी जीवनधारा ही बदल गयी।

मेरा उनसे पत्र व्यवहार होता रहता था। वे मेरे प्रत्येक पत्र का उत्तर अवश्य देते थे। अभी भी मेरे पास उनके अनेक पत्र सुरक्षित रखे हैं। उनका सान्निध्य प्राप्त करने हेतु मैं अनेक

स्थानों पर जाता था। देहरादून, छिन्दवाड़ा, भोपाल, इन्दौर, बिजौलियाँ आदि अनेकों स्थानों पर मैंने सपरिवार जाकर उनके क्लासों से लाभ उठाया। उनके निमित्त से मुझे जैनधर्म के मूलभूत सिद्धान्तों को समझने का अवसर मिला। बड़े से बड़े विद्वान के सूक्ष्म विषयों का विवेचन भी स्पष्ट समझ में आने लगा। उनके निमित्त से ऐसी पारखी दृष्टि मिल गई कि कुछ वचन सुनकर ही वक्ता के अभिप्राय का ज्ञान होने लगा। स्वाध्याय करने की कला भी उनसे ही मैंने सीखी। निश्चय-व्यवहार, क्रमबद्धपर्याय, कारणशुद्धपर्याय, स्व-पर प्रकाशक आदि अनेक विषयों का यथार्थ ज्ञान मुझे उनके निमित्त से ही समझ में आया है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के दर्शन एवं प्रवचनों का साक्षात् लाभ तो मुझे नहीं मिला लेकिन पण्डितजी साहब के निमित्त से ही प्रतिदिन पूज्य गुरुदेव के प्रवचन पढ़ने एवं सुनने का नियम बना। पण्डितजी साहब ही मेरे गुरुदेव हैं, जो स्थान पण्डितजी के हृदय में पूज्य गुरुदेव के लिये है, वैसा ही स्थान मेरे हृदय में पण्डितजी साहब के लिये है। वे ही मेरे आदर्श हैं। उनका मुझ पर अनन्त उपकार है।

पण्डितजी साहब जैसा वात्सल्य मैंने किसी अन्य में नहीं देखा। लगभग 25 वर्ष पूर्व शासकीय कार्य बस मेरा मण्डला (मध्यप्रदेश) जाना हुआ। प्रातः जब मैं वहाँ के दिगम्बर जैन मन्दिर में दर्शनार्थ गया तो मुझे वहाँ पण्डितजी साहब के क्लास बावत पोस्टर लगा दिखा। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। क्लास लगने में देरी थी, अतः मैं वापिस आ गया। जब पुनः मन्दिरजी पहुँचा तो क्लास चल रही थी। मैं पीछे जाकर बैठ गया। जब पण्डितजी साहब की दृष्टि मुझ पर पड़ी तो उन्होंने मुझे आवाज देकर आगे बुला लिया। जब क्लास खत्म हुई तो पण्डितजी साहब ने पूछा – कब आये, कहाँ रुके हो? मैंने बताया – रात्रि में आया था, एक लॉज में रुका हूँ। वे नाराज हुए। मेरे साथ स्वयं लॉज गये, स्वयं सामान उठाया एवं मुझे साथ लेकर ए. के. जैन साहब (छिन्दवाड़ा) जो उस मण्डला में कार्यपालक मन्त्री थे, के बंगले पर आये, जहाँ पण्डितजी साहब रुके थे; मैं उनके साथ तीन दिन तक रहा। मेरी हर आवश्यकता का वे अपने सगे पुत्रवत् ध्यान रखते थे। सम्यक्त्व के आठों अंगों का दिग्दर्शन मुझे उनमें स्पष्ट परिलक्षित हुआ। मेरा पूर्ण विश्वास है कि वे अल्पकाल में मुक्तिवधू का वरण करेंगे। मेरा उनको शत-शत वन्दन!

संस्मरण

— आत्मार्थी भागचन्द कालिका, उदयपुर

आदरणीय पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी साहब की स्मरणशक्ति विशाल थी, इसलिए उनकी सदैव यही इच्छा रहती थी तथा कक्षा में पढ़ाने का तरीका भी यही होता था कि कक्षा में ही मुमुक्षुओं को तत्त्वाभ्यासपूर्वक तत्त्व की बात उनकी स्मृति में बैठ जाए तथा यथार्थ भेदज्ञानपूर्वक वस्तुस्वरूप का निर्णय हो सके। उनके चित्त में यह बात अच्छी तरह समाई हुई थी कि भ्रमजनित दुःखों को दूर करने का उपाय यथार्थ तत्त्वनिर्णय करना ही है। कितना ही जटिल रहस्य छिपा हो तो भी तत्त्वनिर्णय कराने के लिए उसका समाधान वे सरल प्रश्नोत्तरों के माध्यम से, शास्त्राधार से प्रमाण देकर श्रोताओं को विश्वव्यवस्था, द्रव्य-गुण-पर्याय, अनेकान्त-स्याद्वाद, कारण-कार्य व्यवस्था, मोक्षमार्ग, निश्चय -व्यवहार, उपादान-उपादेय, निमित्त-नैमित्तिक आदि चारों अनुयोगों के विभिन्न विषयों का विशेष स्पष्टीकरण करके किया करते थे।

उनके विचार में जीवों को सत्य बात समझ में न आने का मुख्य कारण, जिनेन्द्रदेव की आज्ञा का पता न होना और जिनागम के रहस्य दृष्टि में न आने से अपनी मिथ्या मान्यताओं के अनुसार शास्त्रों का मिथ्या अभ्यास करना है। जिसके फलस्वरूप अज्ञानी जीव स्वयं की मिथ्याबुद्धि से संसारमार्ग का श्रद्धान-ज्ञान-आचरण करते हैं; इसलिए उनकी हमेशा यही भावना रहती थी कि आत्मार्थीगण धर्म के मर्म को न केवल समझ ही सकें, बल्कि उनके दिमाग में अच्छी तरह बैठकर, उसी समय स्मृति में बैठ जाए तथा गले में उतर जाए। इसके लिए वे शरीरादि सम्बन्धी अन्य बातों पर ध्यान दिए बिना, अपनी पूरी ताकत से धाराप्रवाही तत्त्व परोसने में लगे रहते थे। इस सम्बन्ध में मैं एक निम्न संस्करण लिखकर विराम लेना चाहता हूँ —

करीब आठ-दस वर्ष पूर्व पण्डित टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में मई शिविर में दोपहर में एक कक्षा लेते समय अचानक बिजली चले जाने से माइक बन्द हो गया। डीजी सेट भी उस दिन किसी कारण से कार्य नहीं कर रहा था। माइक बन्द हो जाने पर वे जरा भी विचलित हुए बिना तथा समय गँवाए बिना और ज्यादा ऊँची आवाज में, पसीने से लथपथ होते हुए भी वीतरागी जिनेन्द्रदेव की तत्त्व की बात समझाने लगे। लेकिन उसी कक्षा में विराजमान उनके सुपुत्र आदरणीय पवनजी भाईसाहब उद्वेलित हुए बिना नहीं रह सके कि कहीं पूज्य

पिताजी को कुछ हो न जाए, तथा बाद में डीजी सेट की व्यवस्था के बारे में अपने विचार प्रकट किए बिना भी नहीं रह सके।

इस संस्मरण से पता चलता है कि पण्डितजी साहब की कितनी हार्दिक इच्छा रहती थी कि एक क्षण भी समय गँवाए बिना, आत्मार्थियों को उसी समय वस्तुस्वरूप का निर्णय हो जाए।

मैं अपने आपको उनसे उपकृत मानता हुआ सर्वज्ञ भगवान कथित तत्त्वाराधनापूर्वक उनकी दीर्घायु की शुभकामना करता हूँ।

संस्मरण

— **रोमेश जैन,** अहमदाबाद

(1) करीब इस्वी सन 1973 से 1974 की घटना है, आप (पण्डितजी) हमारे घर पर लगभग पन्द्रह दिन ठहरे थे। हर रोज सबेरे साढ़े पाँच बजे, घर के सभी छोटे-बड़े व्यक्तियों को जगा देते थे। 'छहढाला' का स्वाध्याय हर रोज आधा घण्टा कराते थे। आपकी कड़क सूचना थी कि हर एक व्यक्ति के हाथ में अपनी अलग पुस्तक होना चाहिए। 'हर एक व्यक्ति के पास अपनी पुस्तक' - यह पूज्य गुरुदेवश्री की स्वाध्याय प्रणाली का आप बराबर पालन करवाते थे। घर के सभी सदस्यों को तत्त्व के प्रेम में लगाते थे।

(2) मैं रात्रि को पण्डितजी के साथ ही सोता था। एक बार रात को करीब साढ़े चार बजे मुझे जगाया। उनको कुछ शारीरिक तकलीफ लगती थी, पर इस बात पर ध्यान न देकर मुझे कहा - 'मोक्षमार्गप्रकाशक लाओ।' तुरन्त मैं ग्रन्थ लाया, अभी बराबर याद नहीं है, पर शायद सातवें अध्याय का एक पन्ना उन्होंने निकाला। मुझे कहा - 'ये पढ़ो।' मैंने पढ़ना शुरु किया। करीब 20-25 मिनिट तक सबेरे की नीरव शांति में एकाग्रता से स्वाध्याय किया। बाद में आप, अपने चिन्तन में बैठ गये। मुझे लगा कि इतनी शारीरिक तकलीफ के समय में भी, वे शरीर से भिन्नता का प्रयोग करते थे।

इस प्रसंग से यह बोध मिलता है कि - जब शरीर सामान्य है, निरोगी है, उस वक्त अपने ध्रुव ज्ञायकभाव का विश्वास होगा, अन्तरंग में भेदज्ञान का गहरा (ऊँचा) संस्कार पड़ेगा। उस वक्त शान्ति और समता रख सकेंगे। आदरणीय पण्डितजी के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में उनके प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

मेरे जीवन के प्रेरणास्त्रोत : कैलाशचन्द्रजी

— **के.सी जैन,** बेलई, जिला-सागर

मुझे तो केवल इतना स्मरण आ रहा है कि पण्डित साहब सागर में चमेली चौक स्थित श्री भगवानदास शोभालाल जी समैया मन्दिरजी में पता लगा कि डण्डावाले पण्डितजी आये हैं। मैं गौरझामर में हायर सेकेण्डरी स्कूल में व्याख्याता था। मेरी उम्र उस समय करीब 30-35 वर्ष होगी। इतनी उत्कण्ठा-उत्सुकता-उत्साह था कि कब हम लोग गोरझामर से 10-15 लोगों से सुना कि पण्डितजी का 'आत्मा', स्वामी जी की 'भगवान आत्मा' का प्रयोग द्वारा अनुभव कराते हैं, बस फिर क्या था? सभी लोग डटकर पण्डितजी की प्रश्नोत्तरमाला वाली पुस्तकें लेकर बैठ गये। पुनः पण्डितजी ने उदाहरण द्वारा इस प्रकार बताया। समझाया - यह कि लड़की की जब सगाई पक्की हो गयी, तब उसके माँ-बाप ने लड़के के पिता को लड़की देखने के लिये आमन्त्रित किया, तब लड़की को देखने लड़का, लड़के पिता व मामा, अपने घर से चले। बसों में बहुत भीड़ थी, सीट पर बैठने के कारण से अन्य लोगों से जमकर झगड़ा हो गया कि एक अन्य व्यक्ति मौत हो गयी व पुलिस केस बना, तीनों लोग जेल चले गये परन्तु जब न्यायालय में प्रकरण चला, तो जज ने पेशी पर लड़की को बुलाया और कहा कि इस केस में तीनों को मौत की सजा बोली गयी परन्तु लड़की की गवाही पर, उससे कहा कि 'वह इन तीनों में से एक को बचा सकती है' तो बताओ उस लड़की ने तीनों में से किसको बचाने की जज से याचना की होगी? हाल खचाखच भरा था, लोग अपनी-अपनी सांस रोके बैठे थे, तब पण्डितजी का डण्डा हवा में लहराया, एक सुधीर जैन की तरफ, तब पण्डितजी ने दबंग आवाज में पूछा और कहा बोल लड़के! तेरा क्या जवाब है? तब लड़के ने, अर्थात् सुधीर ने समझकर बेबाक उत्तर दिया कि वह जज से लड़के (वर) को बचाने की याचना करेगी। पण्डितजी पुनः उच्च स्वर में जब बोले - देखो जिस लड़की ने वर को देखा नहीं, उसे बचाने की याचना की, हम तो अचंभित थे-सन्नाटा छाया था, गर्जती आवाज में सुना - कि ऐसा ही हमारा आत्मा है, उसका हम पल-पल में अनुभव करें - समझें - जाने तो हमारा-तुम्हारा कल्याण होगा।

ऐसा है हम सभी का 'भगवान आत्मा' अभी भी मुझे महसूस हो रहा है, इस 65 वर्ष की उम्र में, वे पण्डितजी के शब्द गूंज रहे हैं और तो और उसी दिन से श्रद्धान पक्का और आज तक अभ्यास, सतत चल रहा है, सत्संग-शिविरों में जाना प्रारंभ है, स्वयं व दूसरे लोगों का भी।

जैसी उसकी होनहार होगी

— **जैनबहादुर जैन,** कानपुर

वैसे तो आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी से 1962 से सम्पर्क रहा। उनके साथ सोनगढ़ में भी रहने का सौभाग्य मिला।

पण्डितजी कानपुर अक्सर आते थे। वहीं की एक घटना ने अपनी छाप छोड़ दी।

श्री पवनजी जब प्रथम बार इलाज/ आपरेशन के लिए विदेश जानेवाले थे, तब पण्डितजी कानपुर में ही थे। प्रात: स्वाध्याय करने के लिए गद्दी पर बैठे ही थे कि देहरादून से श्री आर. के. जैन आदि चार भाई पण्डितजी को बीमारी की सूचना देने के लिए आये। उन्होंने पण्डितजी को बीमारी की सूचना दी एवं चलने का आग्रह किया। बीमारी की बात सुनकर पण्डितजी कुछ समय के लिए मौन हुए फिर बोले कि 'उसकी (पवनजी की) जैसी होनहार होगी, वैसा होगा, मैं उसमें चलकर क्या करूँगा?' इतना कहकर स्वाध्याय प्रारम्भ कराया।

यह घटना आस्था की दृढ़ता को दर्शाती है तथा हम लोगों को आगे का मार्गदर्शन कराती है। पण्डितजी ने निरन्तर घूम-घूमकर देश में तत्त्व की अलख जगाई। ऐसे पण्डितजी भविष्य में स्वस्थ होकर फिर घूम-घूमकर तत्त्वप्रचार करते रहें, यही मंगल भावना है। पण्डितजी पुरा तत्त्वप्रचार बिना खर्च कराये किया। हम उनके आदर्श जीवन के प्रति अपनी आस्था समर्पित करते हैं।

पथ प्रदर्शक आदरणीय पण्डितजी

— **शिखरचन्द पुजारी**
खनियाधाना, जिला-शिवपुरी

परम श्रद्धेय पण्डित कैलाशचन्द्रजी देहरादून से हमारे यहाँ करीबन सन् 1975 से हर वर्ष आते रहे और अपने खुद के मार्ग व्यय से आते, अगर उन्हें शेव के लिए एक ब्लेड चाहिए तो वह अपने पैसों से मँगवाते। उस समय पोस्टकार्ड पाँच या दस पैसा का आता था, वह भी अपने पैसों से उपयोग करते थे। अगर कोई कहे, दस पैसा भी वह नहीं लेते थे, कहते थे मुझे 1000 रुपया महीना आता है, सब खर्च मेरा उसी में हो जाता है। जहाँ-जहाँ पण्डितजी साहब गये, वहीं पर सब उन्हीं की देन है। सब जगह उन्हीं के उपदेश से जगह-जगह मुमुक्षु मण्डल

बने और समाज में तत्त्व के प्रति जागृति हुई जो आज तक चल रही है। विरोध पहले भी था, मगर जिसे आत्मा की बात समझ में आयी, वह आज भी चल रही है। कभी-कभी तो हमारे घर पर ही रुकते थे, कभी-कभी धर्मशाला रुकते थे। एक बार धर्मशाला का कार्य चल रहा था, उसमें लेट्रीन की सुविधा नहीं थी तो टेम्परेरी टाट के पर्दे से लेट्रीन का काम चलाया। कहने लगे हमें तो समाज को तत्त्व समझाना है, जिसकी जितनी योग्यता होगी, उतना समझ लेता है। उनकी भावना रहती थी कि यह तत्त्व की बात समझे, तभी कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा।

जिसकी समझ में आया, उसने समझकर धारण किया और आज भी समझ रहे हैं। कल्याण का मार्ग यही इसे ही समझना पड़ेगा, चाहे आज मानो, चाहे कभी मानो, मार्ग तो यही है। इसके समझने पर ही संसार का अन्त हो सकता है, यही भावना उनके मन में रहा करती थी। एक बार क्लास के बाद परीक्षा हुई, उसमें पच्चीस कॉपी की जाँच के बाद कहा, इसमें दस कॉपी तो पुजारी परिवार की है, बाकी पन्द्रह और सबकी हैं, तो सबको यह बात समझ नहीं आ रही या समझना नहीं चाहते, उनमें सबके प्रति करुणाभाव था, सब समाज इस बात को समझकर अपना कल्याण करें। पण्डितजी का स्वास्थ्य सुधार पर है, बड़ी खुशी की बात है, उन्हें हमारा चरण वन्दन।

मेरे जीवन शिल्पी : पूज्य पण्डितजी

– **सौभाग्यमल जैन,** स्वतन्त्रता संग्राम सैनानी

इतवारा, भोपाल (मध्यप्रदेश)

सर्व प्रथम आदरणीय पण्डित कैलाशचन्दजी बुलन्दशहरवालों से सोनगढ़ में मेरा परिचय हुआ था। सोनगढ़ में श्रावन मास में लगनेवाले शिक्षण-शिविर में भोपाल मुमुक्षु मण्डल के सदस्यों के साथ मैं भी सोनगढ़ गया था। वहाँ पर प्रातः पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन के पश्चात्, प्रवचन मण्डप में स्व. पण्डित खेमचंदजी भाईजी की क्लास चलती थी। क्लास का विषय – जैन सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमाला, भाग 3 पर एवं विषय – 'कारण अनुविधायनि कार्याणि' चलता था।

उस समय पण्डित कैलाशचन्दजी प्रमुख विद्यार्थी (श्रोता) के रूप में सबसे आगे विराजमान होते थे। पण्डितजी तीक्ष्ण बुद्धि के धनी होने से विषय को तुरन्त ग्रहण कर लेते थे। देहरादून निवासी श्री नेमचन्दजी भी उनके साथ होते थे।

श्री खेमचन्दजी भाईजी जो भी विषय पढ़ाते या समझाते थे, उसको पण्डित कैलाशचन्दजी तुरन्त अपनी कॉपी में नोट कर लेते थे। बाद में पण्डितजी ने अपनी उस कॉपी के आधार से 'प्रश्नोत्तर रत्माला नाम' से सात भाग देहरादून मुमुक्षु मण्डल द्वारा प्रकाशित कराये थे।

द्वितीय क्लास दोपहर को चलती थी, जिसका विषय मोक्षमार्गप्रकाशक होता था।

पूज्य गुरुदेवश्री के समक्ष स्वाध्यायभवन में आदरणीय श्री रामजीभाई एडवोकेट द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक, व्यवहाराभास पर चलती थी। उसमें भी पण्डित कैलाशचन्दजी प्रमुख श्रोता के रूप में सबसे आगे विराजमान होते थे। सोनगढ़ में श्रावन मास में लगनेवाले शिविर में भाग लेने के लिये लगभग 2000 मुमुक्षु भाई पूरे भारत से सोनगढ़ पहुँचते थे। वहाँ 20 दिन का शिविर लगता था। वहाँ के वातावरण में ऐसा लगता था, मानो हम विदेहक्षेत्र में आ गये हों। समय, दिनांक, दिन का कुछ भी याद नहीं रहता था। प्रात: 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक तत्त्वचर्चा के सिवाय और कुछ भी लौकिक वार्ता का नाम भी नहीं आता था। जो भी व्यक्ति विरोध भावना लेकर वाद-विवाद करने की भावना से सोनगढ़ जाता था, वह भी गौतम गणधर की तरह वहाँ का अनुयायी हो जाता था।

आदरणीय पण्डित कैलाशचनदजी की भावना थी कि जो माल हमें पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राप्त हुआ है, उसको हम जन-जन तक पहुँचाएँगे। इसी भावना को लेकर पण्डितजी ने मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, गुजरात आदि पूरे भारत में जगह-जगह जाकर जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, मोक्षमार्गप्रकाशक आदि ग्रन्थों की क्लास के माध्यम से तत्त्वज्ञान का काफी प्रचार व प्रसार किया है। उनके साथ मैं भी कई दिनों तक बिजौलिया, कोटा, ग्वालियर, इन्दौर, उज्जैन आदि कई नगरों व शहरों में रहा हूँ। भोपाल पर भी उनकी बड़ी कृपा रही है। कई बार वे भोपाल में एक-एक माह तक रहकर तत्त्वज्ञान व मोक्षमार्गप्रकाशक की क्लास लेते रहे हैं। भोपाल मुमुक्षु मण्डल उनका बहुत-बहुत आभारी है। उनका सबसे बड़ा मन्त्र एक ही था - **अनादि निधन वस्तुएँ भिन्न-भिन्न अपनी मर्यादा लिये परिणमती हैं, कोई किसी के आधीन नहीं, कोई किसी के परिणमाये परिणमती नहीं। परिणमन कराने का भाव, अज्ञान है।** वे कहते थे कि णमोकारमन्त्र से भी बड़ा मन्त्र, भेदविज्ञान है।

देहरादून स्वाध्याय भवन के उद्घाटन समारोह में भाग लेने का भी अवसर मुझे प्राप्त हुआ था। रात्रि के सांस्कृतिक कार्यक्रम पर श्री पवनकुमारजी के पुत्र चिरंजीव स्वप्निल जैन जो

उस समय करीब 5 या 6वर्ष के होंगे। श्रीमती बीनाजी द्वारा चिरंजीव को पण्डित टोडरमल की ड्रेस पहनाकर बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम करवाया था, इतनी छोटी उम्र में इतनी तीक्ष्ण तार्किक बुद्धि का होना भविष्य की उज्ज्वलता का सूचक है।

मेरा पण्डित कैलाशचन्दजी से बहुत निकट का घनिष्ट सम्बन्ध रहा है। मैं उनके गुणों का व उनकी भावनाओं का जितना भी वर्णन करूँ, वह कम ही है। उनका पूज्य गुरुदेवश्री पर इतना समर्पण भाव था कि वाणी से उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। 'उसका प्रतिफल ही यह मङ्गलायतन' है। श्री पवनभाई ने भी पूज्य पिताजी की भावनाओं को समझकर और उन्हीं भावनाओं से अपनी भावनाओं को जोड़कर 'मङ्गलायतन' एवं 'मङ्गलायतन विश्वविद्यालय' की स्थापना करके अभूतपूर्व कार्य किया है। भारत में ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में यह मङ्गलायतन एक अद्भुत धरोहर होगी। मोक्षार्थी, आत्मार्थी बन्धुओं के लिये यह एक प्रेरणास्रोत होगा। मेरी तो यह भावना है कि भविष्य में यह मङ्गलायतन और मङ्गलायतन विश्वविद्यालय दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति करे और सत्य सनातन दिगम्बर जैनधर्म की ध्वजा को पूरे विश्व में लहराये, और पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी की मङ्गलमयी वाणी को घर-घर में पहुँचाये, भूले-भटकों को सच्चा मार्ग बतलाये।

सोनगढ़ में आदरणीय पण्डितजी, श्री खेमचन्दभाईजी 20 दिवसीय शिक्षण शिविर समापन के अवसर पर कुछ आशीष वचन कहते थे -

1. सर्प रूप संसार है, नोल रूप नर जान। संत बूटी संयोग ते, होत अहि विष हान॥

2. पर से खस, स्व में बस, आयगा आत्मा में अतीन्द्रिय रस।
यही है अध्यात्म का कस, इतना कर तो बस॥

3. अनादि काल से आज तक जिसका कर रखा है स्मरण, अब उसका करना होगा विस्मरण। (काम, भोग, बंधन की कथा का विस्मरण)

अनादि काल से आज तक जिसका कर रखा है विस्मरण, अब उसका करना होगा स्मरण। (ज्ञायकभाव का स्मरण)

तब होगा सम्यग्दर्शन। यही है भवछेदन का उपाया। यही है अतीन्द्रिय सुख का सच्चा उपाय।

मङ्गल समर्पण

हमारे सन्मार्ग प्रेरक : पूज्य पण्डितजी

— **दिनेश जैन (नीनू भाई),** बैटरी मास्टर, मेरठ

बात फरवरी 1998की है, जब पण्डितजी पहली बार मेरठ आये थे। हम मन्दिरजी देवदर्शन हेतु गए, तब वहाँ 'पागल-पागल', 'शराबी-शराबी' शब्द सुनाई पड़े। सुनकर बड़ा अचम्भा हुआ। पता लगा कि अलीगढ़ से पण्डित कैलाशचन्द्रजी आए हुए हैं। हमने स्वाध्यायकक्ष में जाकर देखा कि कड़क आवाज में पण्डितजी लाठी दिखा-दिखाकर पढ़ा रहे थे। बड़ा अजीब-सा लगा। हमने भी उनकी बातें सुनी परन्तु समझ में कुछ न आया। जब दो-तीन दिन निकल गए और पण्डितजी बराबर यह कहते रहे कि तुम अभी यह मान लो कि तुम 'दिनेश जैन' नहीं हो तो तुम्हें अभी सम्यग्दर्शन हो जाएगा।

पण्डितजी यह हमेशा कहते कि किसी का कोई प्रश्न हो तो बताओ; तब हमने डरते-डरते पूछा कि हमने तो आज तक लोगों को पढ़ाई-लिखाई करते, कमाते हुए, शादी करके गृहस्थी में व्यस्त हुए, बच्चों को पढ़ाते-लिखाते, समय व्यतीत करते हुए, मरते देखा है, तो मनुष्य यह जन्म क्यों लेता है ? तब पण्डितजी ने बताया कि बेटा ! तुम्हें यह जन्म, मोक्ष में जाने के लिए मिला है, क्योंकि तुम 'दिनेश जैन' नहीं हो तुम तो 'ज्ञान-दर्शन उपयोगमयी जीवतत्त्व हो। जीव तो अत्यधिक मोह के कारण शरीर, पत्नी, बच्चों, मकान, दुकान आदि में फँसा हुआ है। इन सबको अपना न मानो, तो अभी सम्यग्दर्शन हो जाएगा। वे कहते थे कि धर्म का फल तुरन्त ही मिलता है, नहीं तो रास्ता उल्टा ही है।

इस बात ने हमें बड़ा प्रभावित किया। हमारी रुचि कक्षा में बैठने की हुई। जब पण्डितजी दोबारा मेरठ आए, तब उन्होंने अपने झगड़े (पत्नी) बच्चों व घर-परिवारवालों को कक्षा में लाने के लिए कहा। सभी पण्डितजी के कहे अनुसार सन्मार्ग पर लगे, जिससे हमारा जीवन ही बदल गया। सभी की रुचि धर्ममार्ग में लगने लगी।

पण्डितजी प्यार से मुझे बैटरी मास्टर कहकर सम्बोधित करते हैं। पण्डितजी कक्षा में उनका पढ़ाया पाठ सुनाने पर **मोक्ष के टिकट** के रूप में, रुपये कक्षा में बाँट दिया करते थे। वे रुपये मैंने आज भी संभालकर रखे हैं कि वह मेरा 'मोक्ष का टिकट' है। उसे देखकर हम पण्डितजी का बताया पाठ आज भी याद करते हैं। **वास्तव में सच्चा मार्ग हमें पण्डितजी ही ने दिखाया है।**

जब तक पण्डितजी का स्वास्थ्य ठीक रहा, तब तक वह हमें पत्रों के माध्यम से

सम्बोधते रहे और उनका आदेश रहा कि 'लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका' घर में सभी को याद होनी चाहिए। पण्डितजी अपनी कक्षा में पूज्य गुरुदेवश्री की बातें बता-बता कर रो पड़ते थे। हमने गुरुदेव को तो कभी देखा नहीं, परन्तु पण्डितजी ही हमारे लिए पूज्य गुरुदेव समतुल्य है। हमें व हमारे परिवार को सन्मार्ग पर लगानेवाले पण्डितजी का उपकार कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

हमारे परिवार के अभिन्न अंग

— **पंकज जैन,** मुम्बई

किसी भी मुमुक्षु के लिए आध्यात्मिक प्रगति करने के लिए सत्पुरुष का समागम प्रसंग अनिवार्य होता है, वैसे ही हमें आदरणीय पूज्य श्री कैलाशचन्द्रजी का पावन सत्संग हमारे पिताजी के कारणवश प्राप्त हुआ। हमारे पिताश्री एवं पण्डितजी, सोनगढ़ के स्वाध्याय भवन के सत्अध्यायी थी। वह जब भी अहमदाबाद स्थित हमारे घर पर आगमन करते थे, तब वह हमें अपना जीवन स्वाध्याय प्रेरित होना अति आवश्यकतापूर्ण होने का सूचन करते थे एवं साधर्मी प्रति वात्सल्य, सभी को साथ लेकर चलने की चेष्टाभाव और सादगीपूर्वक स्वयं का कार्य, स्वयं करने की भावना प्रेरित करने की सीख हमें प्रदान कर रही थी।

आज भी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की अनुपस्थिति में भी वह हमें मङ्गलकारी निर्ग्रन्थगुरु के वीतराग वचनों का आत्मसात करने के भावनापूर्ण प्रवर्तन हेतु दीवादांडी के समान प्राप्त हुए हैं और हमें वह साधर्मीबन्धु के रूप में सदा सम्बोधन करते हैं। आप सभी को यह विदित करना अति आवश्यक है कि इन्हीं के द्वारा हमारे पिताजी को स्वाध्याय हेतु सत्शास्त्रों का पार्सल वह समय-समय पर अपने योगदान से भेजते रहे और मार्गदर्शक बने रहे। हमारे परिवार के साथ सदा ही पूर्णतया जुड़े रहे और खाड़िया दिगम्बर जैन मन्दिरजी के आदिनाथ भगवान की प्रतिष्ठा के प्रसंग की पावन प्रसंग के अनुमोदक श्रेय इन्हीं का ही है। आपकी यह जीवनशैली एक अद्भुत आश्चर्यकारी सेवक के रूप में सदा अनूठी है।

मङ्गलायतन के मङ्गलार्थी के सदस्य के नाते इन्हीं के दिव्य संस्मरणों का दर्शन कराने का यह मेरा अथक प्रयास है और हमें शीघ्र ही ज्ञानीजनों के बताए हुए मार्ग पर गमन करने का सन्देश दिग्दर्शन कराता है।

देहादि से सर्वथा भिन्न, ज्ञानस्वरूप निज आत्मा का निर्णय करना ही सम्पूर्ण जिनशासन का सार है। ऐसे सारभूत महामन्त्र एवं जिनेन्द्र भगवान से कथित विश्वव्यवस्था का मार्ग सदा जयवंत वर्तो।

पण्डितजी का बोया बीज वटवृक्ष के रूप में

— **श्रीमती आशा जैन,** ग्वालियर

हर्ष का विषय है कि आत्मार्थी विद्वान पण्डित कैलाशचन्द्र जैन की जीवनशैली को आगामी पीढ़ियों तक पहुँचाने के उद्देश्य से एक विशेषाङ्क प्रकाशित हो रहा है। मेरी एवं मेरे परिवार का भी कुछ खुशनुमा यादगार वक्त का साथ पण्डितजी के साथ था।

श्री पण्डितजी ने ग्वालियर में श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ ट्रस्ट में सन् 1978से 1980 तक काफी समय व्यतीत किया। उन्होंने अपनी वीतरागवाणी द्वारा सभी धर्म प्रेमी मुमुक्षुओं को अधिक से अधिक ज्ञान देने का प्रयत्न किया है। यह मेरा अति ही पुण्य का उदय था कि अग्रवाल कुल में जन्म होने के बाद मेरा विवाह श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ ट्रस्ट के संस्थापक श्री कन्हैयालालजी जैन (अग्रवाल) के परिवार में हुआ। जहाँ मुझे विवाह के तुरन्त बाद ही पण्डितजी का मार्गदर्शन मिला। पण्डितजी, पार्श्वनाथ ट्रस्ट में दिन में तीन बार कक्षाएँ लिया करते थे और मैं भी उस समय उनमें से एक या दो कक्षा में ही उपस्थित हो पाती थी परन्तु चूंकि मेरे जीवन में शुरु से ही धर्म की लगन थी और मैं जीवन में 'धर्म में आस्था जीवन की सार्थकता' को ज्यादा महत्व देती थी। उस समय पण्डितजी 'जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला' के भाग 1 से भाग 7 की कक्षाएँ लिया करते थे। मेरे लिये जैनधर्म की सभी बातें एकदम नयी थी परन्तु पण्डितजी की समझाने की शैली इतनी अधिक अच्छी थी तथा उनका डण्डा लेकर ब्लेकबोर्ड पर लिख-लिखकर समझाने से 10 या 15 दिन में ही मुझे जैनधर्म के बारे में बहुत कुछ समझ में आने लगा तथा मैं पण्डितजी के प्रश्नों के उत्तर सबसे पहले देती थी। पण्डितजी ने मेरा बहुत उत्साह बढ़ाया तथा कितनी ही बार मुझे पुरस्कार भी दिये। मैं आज भी पण्डितजी की आभारी हूँ कि जिनके कारण आज मेरा मानव जीवन सफल हो गया। मैंने उसके बाद बहुत से शास्त्रों का अध्ययन किया। पार्श्वनाथ ट्रस्ट में हमेशा जयपुर एवं सोनगढ़ से विद्वान आते रहते थे, जिनका मार्गदर्शन मिलता रहा तथा कई शिविरों में भी भाग लिया। आज मेरा जीवन जो इस समय बहुत ही शान्ति एवं धर्म की आराधना तथा संयम के साथ बीत रहा है, यह सब पण्डितजी के मार्गदर्शन का प्रभाव ही है।

आज भी ग्वालियर में पण्डितजी के प्रवचनों का लाभ लेनेवाले मुमुक्षु उनकी प्रेरणा के कारण आज करीब 10-15 मन्दिरों में रोज शास्त्र, स्वाध्याय एवं प्रवचन करते हैं। पण्डितजी ने जो धर्म का बीज ग्वालियर में बोया था, वह आज वटवृक्ष के रूप में लहराकर धर्मप्रभावना का कार्य कर रहा है।

मेरे धर्मपिता : आदरणीय पण्डितजी

— **कान्तिप्रसाद जैन**, शाहदरा, दिल्ली

सितम्बर 2011 की मङ्गलायतन पत्रिका से ज्ञात हुआ है कि श्रद्धेय पिताश्री के जीवन सम्बन्धी विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। आपको ज्ञात ही है कि श्रद्धेय पण्डितजी मेरे धर्म पिता हैं। आप कई बार यहाँ शाहदरा शिवाजीपार्क में पधारे हैं। आप मेरे केवल धर्मपिता ही नहीं, बल्कि आपने मेरे बालपन से ही धर्म सम्बन्धी देख-रेख रखी है। जब मैं छोटा था, आप मुझे घर से ले जाकर श्री मन्दिरजी में पूजन-पाठ कराते थे तथा धर्म पढ़ाते थे। शाम के समय आप श्रीमन्दिरजी के कक्ष में पाठशाला लेते थे, जिसमें बुलन्दशहर की समाज के सभी बच्चे पाठशाला में पढ़ते थे। इस प्रकार आपने शिक्षा और धर्म की दीक्षा का भी कार्य किया है, जो मेरे जीवन में ताना-बानारूप से कार्य कर रहा है।

आपने निस्वार्थभाव से सारे देश की सेवा की है। आप अपने निजी व्यय से धर्म के प्रचार-प्रसार में जाते थे। विशेषरूप से गुजरात, मध्यप्रदेश में आप अधिक रहे हैं। देहरादून मुमुक्षु मण्डल आपकी ही देन है। बिजौलियाँ में श्री मंदिरजी और अतिथि भवन का निर्माण भी आपके रहते ही हुआ है। मुझे भी दो बार बिजौलियाँ जाने का अवसर मिला है। एक बार आपश्री नागपुर थे, मुझे आपके पास जाने का अवसर मिला है।

दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र जैसे मेरठ, खतौली, मुजफ्फरनगर, बढ़ौत आपके धर्म प्रचार के विशेष क्षेत्र रहे हैं। आपने यौवन अवस्था में ही ब्रह्मचर्य व्रत अङ्गीकार कर लिया था। आप, जब तक पूज्य गुरुदेवश्री सोनगढ़ रहे, आप भी गुरुदेव के जीवन पर्यन्त अधिकतर सोनगढ़ में ही रहे है। सारी समाज में आप डण्डेवाले पण्डितजी कहलाते हैं।

मेरी और मेरे परिवार की श्री जी से यही प्रार्थना है कि आपका जीवन शताब्दी को पूरा करे और धर्म जागृति निरन्तर बनी रहे।

आत्महित के प्रेरणास्त्रोत

पण्डित मिश्रीलाल जैन, खनियांधाना

श्रीमान् आदरणीय भव्य सत्पुरुष पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी हमारे खनियांधाना दो बार पधारे तथा जब उन्होंने क्लास में योगसार लिया था तो घोटा ठोक-ठोककर पढ़ाते थे, किसी को झपकी नहीं लेने देते थे। तभी हमने योगसार कण्ठस्थ कर लिया था। तब प्रतिदिन पाठ करने की श्रद्धा बनी जो पाठ चालू है तथा तब से तो जीवन भी निहाल हो गया। हमने बीड़ी का कारखाना डाला था तो पण्डितजी बोले कि मिश्रीलाजी! आप जैसे मुमुक्षुओं को यह काम शोभा नहीं देता तो हमने उसी समय से बन्द कर दिया था। अब तो निवृत्ति से रहकर आत्मानन्द का अनुभव करते हैं। वह तो बार-बार कहते थे मैं ज्ञायक भगवान आत्मा हूँ, इसकी माला फेरो। श्वांस-श्वांस में मैं भगवान आत्मा हूँ। तभी हर समय मैं ज्ञायक हूँ - ऐसी पक्की श्रद्धा पण्डितजी के समगम से ही बनी। उनका हमारे जीवन पर परम उपकार है, जिसे भुलाया नहीं जाता। अन्त में उनका देहरूपी पड़ोसी का स्वास्थ्य अनुकूल रहकर शताधिक आयु प्राप्त करे, जिससे हमें उन जैसी आत्मानुभूति का संबल प्राप्त होता रहे।

पिता-पुत्र का आध्यात्मिक हास-परिहास
पूज्यवर इसीलिए तो मैं आया हूँ

— चन्द्रकुमार जैन 'सम्यक्', शिवपुरी

ग्वालियर (मध्यप्रदेश) के श्री महावीर परमागम मन्दिर में पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी द्वारा आयोजित धार्मिक शिक्षण शिविर चल रहा था। शताधिक श्रोताओं के साथ उनके सुपुत्र श्री पवनकुमारजी भी वहाँ उपस्थित थे। पण्डितजी, तत्त्वप्रचार की अपनी अक्खड़ शैली के लिये प्रसिद्ध रहे ही हैं। प्रवचन के दौरान पण्डितजी ने उच्च स्वर में कहा 'जिसे सम्यग्दर्शन हो जाता है, उसके बाप को भी मोक्ष जाना पड़ता है।'

इस परम सत्य तथ्य को सुनकर श्री पवनकुमारजी ने तुरन्त कहा - 'पूज्यवर, इसीलिए तो मैं आया हूँ।'

पिता-पुत्र के इस आध्यात्मिक हास-परिहास से पिता-पुत्र सहित शताधिक श्रोतागण भी आनन्दविभोर हो गये।

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन : एक विरल व्यक्तित्व

— महेशचन्द्र वर्मा

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, जौलीगढ़, बुलन्दशहर।

श्रद्धेय पण्डित कैलाशचन्द्र जैन एक भारतीय संस्कृति के प्रतीक हैं। वह धोती, कुर्ता, तथा टोपी पहनते हैं। सादा जीवन, उच्च विचार के पथगामी हैं। उनकी जीवन शैली सरल एवं सहज है। प्रवचन सुनने और सुनाने के धनी हैं। एकान्त में रहकर गूढ़ विषयों का अध्ययन, चिन्तन, मनन करना उनके जीवन का एकमात्र ध्येय रहा है। प्रवचन में उन्हें अत्यन्त आनन्द आता है। नियमित दिनचर्या उनके जीवन का लक्ष्य रहा है। निश्चित समय पर सात्विक भोजन, भजन, शयन तथा भ्रमण (टहलना) में कभी भी चूक न हुई। मुझे उनके सम्पर्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। वे सदैव ही जीवन में प्रफुल्लित रहे। सदचरित्रता, संयमी, मृदुल स्वभाव उनके गुण हैं। उनका मानव प्रेम अद्वितीय है।

पण्डितजी का व्यापारिक जीवन भी अत्यन्त सफल रहा। उन्होंने दिखा दिया कि छोटे संस्थान के द्वारा भी व्यापार का विस्तार किया जा सकता है। उनका सिद्धान्त है कि थोड़े से लाभ पर भी वस्तुओं को बेच देना चाहिए। ग्राहकों के प्रति उनका व्यवहार बड़ा मृदुल रहा।

मैं उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

परम-उपकारी, निस्पृह व्यक्तित्व

— अशोक जैन 'वैभव', गोपालगंज, छिन्दवाड़ा

परम-उपकारी, निस्पृह, निरपेक्ष, निर्भय आदरणीय पण्डितजी के चरणों में सादर नमन-जय जिनेन्द्र!

जैसे, उपयोग लक्षण से भगवान आत्मा की प्रसिद्धि होती है; उसी प्रकार पूज्य पण्डितजीरूप लक्षण से पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की प्रसिद्धि होती है। सम्पूर्ण दुःखों का अभाववाला महामन्त्र अनादि-निधन वस्तुएँ भिन्न-भिन्न अपनी-अपनी मर्यादासहित परिणमित होती है, कोई किसी के आधीन नहीं है, कोई किसी के परिणमित कराने से परिणमित नहीं होती, पर को परिणमित कराने का भाव, निगोद है। यह वस्तु की स्वतन्त्रतावाला महामन्त्र जिसके समझते ही कर्ता-कर्म की भ्रान्ति टूटकर सम्यग्दर्शन का जन्म

होता है और श्री प्रवचनसार के आधार से जिनेन्द्रकथित विश्व-व्यवस्था, जिसको समझते ही सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो जाती है; पण्डितजी ने घुटाया है।।

पण्डितजी ने जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के माध्यम से जीवादि सात तत्त्व एवं उनकी भूल; जीवबन्ध, पुद्गलबन्ध, उभयबन्ध; उपादान-उपादेय के चौबीस प्रश्नोत्तर, मोक्षमार्गप्रकाशक सातवाँ अधिकार, उसमें भी उभयाभासी का प्रकरण बहुत अच्छी तरह से याद कराया एवं समझाया तथा लिखाया; उसका ही फल है कि आज हम अध्यात्म शास्त्र को समझने में सक्षम हैं। मैंने बहुत विद्वानों को सुना, किसी ने यह नहीं कहा जो पण्डितजी साहब कहते थे कि मैं ज्ञान-दर्शनमय जीवतत्त्व हूँ, इसके बदले मैं कैलाशचन्द हूँ - ऐसा मानू तो निगोद जाऊँ - इतनी निर्भीकता से ही लोग उन्हें निगोद भेजनेवाले पण्डितजी एवं डण्डेवाले पण्डिजी के नाम से जानते हैं। **छिन्दवाड़ा मुमुक्षु मण्डल को सोनगढ़ आने की अत्यधिक प्रेरणा पण्डितजी के द्वारा ही दी गयी, जिसका फल यह हुआ, पहली बार छिन्दवाड़ा से 80 लोग सोनगढ़ गये।** आज भी पण्डितजी साहब से जो सीखा, वह शास्त्र-स्वाध्याय के समय याद आता है, जिसकी श्रोताओं में चर्चा होती है।

पण्डितजी निस्पृह, निरपेक्ष, निर्भय, स्वाभिमानी एवं साधर्मी वात्सल्य के धनी हैं। आपने समाज को बहुत तत्त्व दिया परन्तु किसी समाज की कोई ताकत नहीं थी कि 15 पैसे का पोस्ट कार्ड भी उन्हें दे देवे। पण्डितजी जिस नगर में आते थे, रिक्शा का पैसा स्वयं देते थे, और अपनी राशि से इनाम बहुत देते थे। उनका यही निरपेक्षभाव जिनधर्म की प्रभावना का मुख्य कारण बना। आपकी वज्रमय वाणी मिथ्यात्व को चकनाचूर करनेवाली तथा आपका हृदय अत्यन्त कोमल वात्सल्ययुक्त है। आप समाज / सम्प्रदाय के व्यामोह से अति दूर थे; इसलिए जहाँ जैनमन्दिर नहीं है - ऐसे छोटे सिंगोडी, जहाँ तारण समाज के चैत्यालय में जाकर कई बार क्लास ली एवं तत्त्व समझाया।

जिनशासन की प्रभावना में पूर्ण समर्पित आदरणीय भाई पवनजी एवं समस्त मङ्गलायतन परिवारसहित हम सब शीघ्र अपने कारणपरमात्मा को भजकर सिद्धपद को प्राप्त करें - ऐसी मेरी मंगल भावना है। पण्डितजी साहब शीघ्र निर्वाण को प्राप्त करें।

आत्मीयता के धनी : पूज्य पण्डितजी

— सुभाषचन्द्र जैन, देहरादून

मैं देहरादून मुमुक्षु मण्डल से हूँ। पूज्य पण्डितजी का देहरादून से विशेष सम्बन्ध व लगाव रहा है, जिसका हमें गर्व है। पण्डितजी का देहरादून आगमन हमेशा होता था। पूज्य पण्डितजी मुझे सुभाष बाबू अमेरिकावाले कहकर सम्बोधित करते थे। मेरी पत्नी बीना जैन, जो अब नहीं हैं, को बीना नम्बर दो कहा जाता था। मैं अक्सर पूज्य पण्डितजी से मिलने जाता था (जब वो देहरादून नहीं होते थे।) उनसे मिलने में आंबला के समीप कहीं (स्मरण नहीं), छिन्दवाड़ा, बिजौलियाँ, अलीगढ़, बुलन्दशहर, मेरठ, मुजफ्फरनगर गया हूँ। मेरठ तो कई बार गया क्योंकि वो मेरे दिल्ली-देहरादून के रास्ते में पड़ता था। एक बार मैं अपनी पत्नी के साथ बिजौलियाँ गया, पण्डितजी को इतनी खुशी हुई कि मैं बता नहीं सकता। पण्डितजी के शब्दों में-मुमुक्षु को देखकर दामाद जैसी खुशी होनी चाहिए। मैंने पण्डितजी से कहा - मैं दो दिन रुकूँगा। पण्डितजी ने कहा - नहीं, आप एक सप्ताह रुकेंगे, आपका जो नुकसान होगा, हम देंगे। ऐसा प्यार पण्डितजी का था।

पण्डितजी ने छहढाला पर एक पुस्तक लिखी है, उसमें मुझे पन्ने-पन्ने पर 'चेतन को है उपयोगरूप' दिखायी दिया, मैंने उत्सुकतावश गिना की यह वाक्य पुस्तक में कितनी बार आया है। फिर मैंने पण्डितजी को बताया कि इसमें 'चेतन को है उपयोगरूप' 95 बार आया है। पण्डितजी ने कहा 'तुमने एक बार भी नहीं माना, एक बार मान लो तो कल्याण हो जाए।'

एक बार पण्डितजी देहरादून छह महीने के लिये आये थे। पहले ही दिन उन्होंने कहा 'आपको सिर्फ यह समझाना है - शरीर अलग है, तुम अलग हो और कुछ नहीं।' चाहे आज समझ लो, चाहे कल समझ लो, चाहे छह महीने बाद समझ लेना; कल्याण इस बात को समझने से होगा; अन्यथा निगोद तैयार है। (यह बात वे अक्सर कहते थे।)

एक बार मैंने पण्डितजी से पूछा था, संवर-निर्जरा तो हमें प्रगट नहीं हुए, उनको कैसे जाने पहचाने ? उन्होंने कहा आस्रव-बन्ध तो प्रगट है, उनको पहचाने तो काम हो जायेगा।

एक बार किसी विद्वान के प्रवचन में यह बात आयी थी कि 'अभी तो हम अशुभ में पड़े हैं, सम्यग्दर्शन बहुत दूर है।' यह बात पण्डितजी के सामने आयी, उन्होंने कहा - यह सब मायाचारी है। तीव्र अशुभ में पड़ा हो, तब भी उसी समय स्वभाव का आश्रय होकर जीव अपना कल्याण कर सकता है, चारों गतियों में कहीं भी संज्ञी पञ्चेन्द्रिय अपना कल्याण कर सकता है।

मेरी पत्नी हमेशा सभा में बैठकर ही उत्तर देती थी, पण्डितजी कहते थे फेरे बैठकर हुए थे या खड़ा होकर ?

पूज्य पण्डितजी आदर्श पुरुष हैं, उनका असीम प्यारा हमेशा दिल में रहता है। एक बात पण्डितजी हमेशा कहते थे – अभी मानो, अभी कल्याण होगा; एक समय की भी देर लगती है तो माना नहीं; रास्ता उल्टा है। धर्म नगद है; उधार का काम नहीं है।

अरे भाई, तुम तो सुना करो!

— **टी. सी. जैन,** इन्दौर

आज से लगभग 35 वर्ष पूर्व की घटना है। मुझे जब वह क्षण याद आ जाता है तो मेरा मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है। मेरी उम्र उस समय लगभग 25 साल की रही होगी, मैं जन्म से श्वेताम्बर जैन समाज का युवक था। कोई पुण्य उदय से मैं इन्दौर के मारवाड़ी दिगम्बर जैन मंदिर में स्वाध्याय हेतु प्रतिदिन दोनों समय जाता था, उस समय पण्डित कैलाशचन्द्रजी, बुलन्दशहरवाले (डण्डेवाले पण्डित के नाम से जाने जाते हैं), उनका शिविर जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला पर चल रहा था। मैं सबसे आगे बैठकर बड़े ध्यान से सुनता था, मेरे मन में ऐसा विचार आया कि पण्डितजी को अपने घर-भोजन कराना चाहिए, तुरन्त मैंने रतनलालजी गंगवाल, लालचन्दजी व पण्डित कान्तिकुमारजी से सम्पर्क साधकर स्वीकृति प्राप्त की और घर आकर माताजी को बता दिया। मेरी माताजी ने सहर्ष हाँ कर ली। निश्चित तिथि को प्रवचन के पश्चात् 10 बजे पण्डितजी को मैं घर ले आया।

मैं एक साधारण परिवार का व्यक्ति था, हमारे यहाँ तीन कमरे एक साथ थे, पीछे दो कमरे में अंधेरा रहता था। आगे के कमरे में रसोई थी। पण्डितजी को मैंने पीछे के कमरे में आदरसहित बैठा दिया। जब मैं रसोईघर में गया तो मैंने देखा कि सिंगड़ी जल रही है, सब्जी तैयार है, आटा लगा हुआ, दूध गरम है परन्तु मेरी माताजी नहीं है, मैंने तुरन्त तलाश करी तो पता लगा माताजी स्थानक गयी हुई है। मैं घबरा गया, मेरी बोलती बन्द हो गयी। यह देखकर पण्डितजी ने कहा – भाई! त्रिलोकचन्द क्या बात है ? कहते हुए पण्डितजी रसोईघर में आ गये, वह एक मिनिट में सारी स्थिति समझ गये। वह बोले घर के लोग कहाँ गये ? मैंने बोला – माताजी स्थानक गयी, महाराज के दर्शन करने। कोई बात नहीं, सभी तो बातें तैयार है। सब्जी

बनी हुई है। आटा लगा हुआ है, सिगरी जल रही है। क्या तेरे को रोटी बनानी आती है, मैंने कहा हाँ, तो बस हो गया। मैंने गर्म रोटी बनाकर सामने रख दिया और उन्होंने कहा एक कटोरी दूध। मैंने देखा तो तपेली में दूध तुरन्त उन्हें एक कटोरी दूध रख दिया और मैं रोटी बनाने लगा, रोटी बना-बनाकर पण्डितजी को परसोता गया तो पण्डितजी बोले जरा कड़क-कड़क सेक अच्छा लग रहा है। भोजन समाप्त हो चुका था, मेरी माताजी नहीं आ पायी।

दूसरे दिन प्रवचन में नीची गरदन करके मैं बैठा था तो पण्डितजी ने डण्डे से ईशारा करते हुए बोले - त्रिलोकचन्द, अरे भाई! तूने इतनी तकलीफ क्यों की? यहाँ मंदिर में भोजन की व्यवस्था करनेवाले बहुत है। भैया रतनलाल, इसे स्वाध्याय हेतु मेरी छह पुस्तक का सेट दो..... 'तुम तो सुना करो' और आज दिनांक तक में बराबर नियमित श्रोता हूँ; मुझे पण्डितजी की सरलता, सहृदयता एवं सहजता के प्रति अत्यन्त बहुमान है। उन्होंने मेरा जीवन बदला-ऐसे उपकारी के प्रति सादर नमन!

जिनवाणी सपूत : पूज्य पण्डितजी

— **जम्बु जैन धवल,** उज्जैन, मध्यप्रदेश

अनन्त सिद्ध भगवन्तों की तलहटी बना भारत का यह परम सौभाग्य रहा कि पौन्नूर हिल्स से देह विमान में विराजित हो एलाचार्य कुन्दकुन्दस्वामी, विदेह पहुँचे तथा सीमन्धरस्वामी की दिव्य देशना के मनहारी पुष्पों को अपने ज्ञान एवं वैराग्यरूपी परिणति से संग्रहित कर अपने चिन्तवन के निर्मल जल से सिंचित करते हुए पावन वसुन्धरा भारत में लाए तथा अनेकान्त की सुई से स्यादवाद के धागे में पिरोकर पञ्च परमागमरूपी माला यहाँ के पामर जीवों हेतु तैयार की है। उन पुष्पों की सौरभ से सुरभित नर रत्न तथा पञ्चम काल में अध्यात्म का परचम लहरानेवाले पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की सभा के चैतन्यरश्मिपुंज परम आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी साहब एक ऐसे व्यक्तित्व हैं, जिनके मुख मण्डल के तेज से अनुशासन एवं सिद्धान्तों की किरणें प्रवाहित होती हैं।

गूढ़ सिद्धान्तों पर मार्मिक कक्षा का सञ्चालन हो या विषय विशेष पर प्रवचन; वे विषय की धुरी को कभी नहीं छोड़ते। विषय के अन्तस तक पहुँचकर उसमें श्रोताओं को रमण करवाने की एक अद्भुत शैली आपमें विद्यमान है। भारत के ही नहीं, विदेशों में स्थित अध्यात्म प्रेमियों के आप आदर्श हैं।

मङ्गल समर्पण

पाप एवं पुण्य की आँधी के मध्य आपने जैनत्व के संस्कारों को जीवन्त एवं ज्वलन्त रखा है। इसका उत्कृष्ट उदाहरण आज हमारे बीच में है। पवनजी भाईसाहब, अनुज स्वप्निल एवं उनके चिरंजीव आर्जव के रूप में।

आदरणीय पवनजी भाईसाहब अध्यात्म जगत की बेजोड़ शक्ति एवं शौर्य पुरुष के रूप में मुमुक्षु समाज के क्षितिज पर अंकित तारे हैं। सहस्र दिनकर की पवित्र रश्मियाँ भी आपके पादप्रक्षालन करे तो कोई आश्चर्य नहीं क्योंकि तत्त्व प्रतिभा, बौद्धिक समृद्धि एवं अर्थ का अनुपमेय उदाहरण आदरणीय पवनजी भाईसाहब एवं आपका परिवार है। आदरणीय पण्डितजी साहब का द्रव्यपक्ष एवं भावपक्ष दोनों धवल एवं विमल हैं क्योंकि अनुशासन निर्भीकता एवं निशंकता आपकी जीवन शैली है।

तीर्थधाम मङ्गलायतन की स्थापना करके आपने शासननायक श्री वर्धमानस्वामी, आचार्य श्री कुन्दकुन्दस्वामी एवं पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी को मानव अवतरित कर दिया है। जिनधर्म के पवित्र सिद्धान्तों का परिपालन करता मङ्गलायतन विश्वविद्यालय, जहाँ जैन एवं जैनेतर बालकों को लौकिक जीवन की संरचना करने में अग्रणी स्थल पर पहुँचा है, वहीं पर मङ्गलायतन में सञ्चालित भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन, संयमित एवं पारलौकिक जीवन को आकार देने का महान निमित्त बना है।

आदरणीय पण्डितजी साहब ने अपनी बगिया के प्रत्येक पुष्प को अध्यात्म के निर्मल सलिल से पल्लवित किया है। यही कारण है कि हर पुष्प, अध्यात्म सौरभ से सुरभित हो महक रहा है। जीवन के माधुर्य मोड़ पर आपके जीवन शिल्पी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के मङ्गल सानिध्य ने आपके जीवन को प्रखरता एवं पुण्यता प्रदान की है, इसीलिए आपने अपना जीवन गुरुदेवश्री को समर्पित किया है।

हमारा भावविभोर मन मयूर इन शब्द कणिकाओं के माध्यम से यह मङ्गल सन्देश प्रवाहित करता है कि बुलन्दशहर के रत्नदीप आदरणीय पण्डितजी, आपके कुलदीपक भाई साहब पवनजी तथा ज्योति बहन वीणाजी, भाभी आशाजी का साकार स्वप्न अनुज स्वप्निल, आयुष्मती बहन प्रिया तथा पण्डितजी की बगिया का नन्हा पुष्प आर्जव - आप सभी मानव जीवन को सार्थकता प्रदान करते हुए कैलाशगिरि के प्रथम तीर्थेश आदिश्वरस्वामी द्वारा निर्दिष्ट स्वयं के अनादिनाथ भगवान की शरण लेकर अपनी चैतन्य बगिया को समकित की सौरभ से सुरभित करें।

आगामी पीढ़ियों के लिये भी आदर्श

— केवलचंद जैन (कुंभराजवाले)

अध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन परवार समाज, उज्जैन

आदरणीय पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी के सम्बन्ध में कुछ संस्मरण एवं प्रेरणास्पद घटनाओं का प्रकाशन आपके परिवार द्वारा एक स्मारिका प्रकाशन के भाव हुए हैं, यह अति प्रशंसनीय एवं सराहनीय है। इस प्रकाशन से पण्डितजी का जीवनशैली एवं तत्त्वप्रचार तथा जीवन जीने की कला आगामी पीढ़ी को अवश्य मार्गदर्शन बनेगा। इस भावना का हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

मैं मूल निवासी ग्राम कुंभराज जिला गुना का रहनेवाला हूँ। पूज्य पण्डितजी का मेरे परिवार से सन् 1965 से सम्बन्ध रहा है। मेरी पत्नी स्व. पुष्पादेवी हमारे श्रावण माह के शिविर में सभी चारों बच्चों के साथ जाया करती थी। उसी समय से चारों बच्चों में धार्मिक संस्कार शुरु हो गये थे।

पूज्य पण्डितजी साहब हमारे ग्राम में पधारकर 15 दिवस तक बाल कक्षाएँ चलाते थे और समाज को स्वाध्याय का पूर्ण लाभ मिलता रहता था। पण्डितजी साहब घर पर ही रुकते थे, इस कारण उनकी सेवा का मौका मिला। एक बार बच्चों को पाठशाला जाने में देरी हो गयी थी – मैंने उनको पाठशाला के बजाय ट्यूशन जाने के लिए कहा तो बच्चों ने ट्यूशन के बजाय पाठशाला जाने की जिद की, तब मैंने उन्हें समझाया परन्तु वह पाठशाला ही जाने की जिद करने लगे, तब मैंने उन्हें पीट दिया। तब वह पाठशाला चले गये और वैसी ही पूरी घटना पण्डितजी को सुना दी।

घर आने पर पण्डितजी ने मुझसे पूछा तो मैंने कहा – मैंने मारा नहीं, एक चांटा ही दिया था। तब पण्डितजी साहब ने कहा आपने यह अच्छा नहीं किया – बच्चों को प्रेम एवं प्यार से पाठशाला भेजना चाहिए। आप भी आकर बैठकर देखो तो धार्मिक जीवन कैसा होता है? लौकिक जीवन एवं पारलौकिक जीवन जीने की कला आपको पाठशाला के माध्यम से ही मिलेगी; इसलिए आप भी कल से पाठशाला आयेंगे ही और मुझसे वचन ले लिया। दूसरे दिन से पाठशाला जाना शुरु किया और वास्तव में मेरा जीवन ही बदल गया।

मुझ पर एवं मेरे परिवार पर पण्डितजी का बहुत बड़ा उपकार हैं। घर पर भी हम लोग तत्त्वचर्चा किया करते थे, हर चीज समझने की कोशिश करते थे और पण्डितजी बड़े प्यार से

समझाते थे, यही कारण है हमारे परिवार के चारों बच्चे – ऋषभकुमारजी इन्दौर में स्वाध्याय करते हैं; डा. अजित, डॉक्टर होते हुए भी नियमित स्वाध्याय में जाते हैं; राजेश–राकेश भी नियमित पूजन एवं स्वाध्याय में पहुँचते हैं। घर पर भी स्वाध्याय करते हैं, यह पूज्य पण्डितजी की देन हैं।

मेरी पत्नी को पण्डितजी ने आदेश दिया था अब तुम हमेशा पाठशाला चलाओगी एवं रात्रि में स्वाध्याय भी तुम्ही कराओगी। मेरी पत्नी स्व. पुष्पादेवी ने, जब तक हम कुंभराज में रहे, तब तक पाठशाला चलायी एवं स्वाध्याय भी किया। जिसका सभीजनों को बड़ा लाभ हुआ और सच्चे देव–शास्त्र एवं गुरु की पहिचान कर तत्त्वचर्चा करने में अपने आपको धन्य समझने लगे। आज भी पण्डितजी को याद किया जाता है। ऐसे महान व्यक्ति के मुखारबिन्द से तत्त्वज्ञान को सरल भाषा में समझकर अपने को धन्य मान रहे हैं।

मेरी और मेरे परिवार की ओर से, और कुंभराज जैन समाज की ओर से हम वीरप्रभु से कामना करते हैं कि पण्डित स्वस्थ रहें और अपनी ओजस्वी वाणी के द्वारा पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित अमृत वाणी का लाभ सभी समाजजनों को देते रहें – यही मंगल भावना है। समस्त दिगम्बर जैन परवार समाज संगठन न्यास की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

सत् धर्म के सच्चे निस्वार्थ प्रचारक

— **राजबहादुर जैन,** खण्डवा

डण्डेवाले गुरुजी के नाम से प्रसिद्ध, करुणामूर्ति, गुरुभक्त, सरलचित्त, निस्पृही, सत् धर्म प्रचारक, परम हितैषी, तत्त्वप्रेमी, तत्त्वरसिक, परम आदरणीय पण्डितजी साहब के गुणों का वर्णन करने में असमर्थ हूँ।

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के चरणों में रहकर तत्त्वों की गहराई से अध्ययन करके, निस्वार्थभाव से जैनधर्म के तत्त्वों को नगर–नगर, गाँव–गाँव, घर–घर पहुँचाने में आपने अपना अमूल्य जीवन लगा दिया। आपकी तत्त्वप्रचार की भावना बहुत ही प्रबल थी कि बच्चे, जवान, वृद्ध सभी तत्त्व को समझें।

आपकी पढ़ाने की शैली सबसे भिन्न थी। आपकी पाठशाला में उधार काम नहीं होता था। आप पहले खूब पढ़ाते, बारम्बार समझाते, बाद में सबसे पूछते थे, व जब तक सबको पक्का नहीं हो जावे, तब तक आगे नहीं बढ़ते थे।

पण्डितजी कहते थे पहले तो मैंने गुरुदेवश्री की सब पहलुओं से परीक्षा की, उनके तत्त्व की परीक्षा की, तभी मैंने निर्णय किया कि आज से गुरुदेवश्री ही मेरे सच्चे गुरु हैं, अब मुझे वे विष्टा के कुण्ड में भी कूदने को कहें तो मैं उसी समय कूद जाऊँगा किन्तु कारण नहीं पूछूँगा, ऐसे गुरुभक्त थे।

एक बार पण्डितजी बोले कि मैं आपके यहाँ खाना खाता हूँ, यह भी अच्छा नहीं लगता, पर क्या करूँ - मुझे खाना बनाना नहीं आता। विदाई समारोह पर हमने पण्डितजी साहब को श्रीफल व शाल देने लगे तो नाराज हुए और बोले कि लेनेवाला भी बेईमान और देनेवाला भी बेईमान, ऐसे निस्पृही हैं पण्डितजी।

ऐसे वात्सल्यमूर्ति आदि अनेक गुणों के धारक पण्डितजी साहब के गुणों का वर्णन करने में असमर्थ हूँ। पण्डितजी साहब के चरणों में बारम्बार नमन करता हूँ।

मुक्तिपथ की ओर अग्रसर

— भानुकुमार जैन
दादाबाड़ी, कोटा, राजस्थान

इस पञ्चम काल के हुण्डावसर्पिणी काल में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का वर्तमान युग में अवतरण एक अतिशय से कम नहीं है। जिन्होंने संसार के सभी प्राणियों के लिये अनन्त सुखी होने का मार्ग बताया। पूज्य गुरुदेवश्री के सानिध्य या सम्पर्क में जो भी आत्माएँ आयीं और जिन्होंने भी उनके भवान्तकारी उपदेश को आत्मसात् किया, उनमें पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी भी हैं। पण्डितजी साहब भी उनके अनन्य भक्तों में से एक हैं। पण्डितजी साहब, गहन तत्त्व के गूढ़ रहस्यों को अपने में समेटे हुए हैं। अनन्त तीर्थङ्करों के दिव्य उपदेश की सभी आत्माएँ भगवान हैं। पूज्य गुरुदेवश्री ने भी अपने जीवनकाल में यही दुनिया को सम्बोधित किया। पूज्य गुरुदेवश्री की प्रेरणा से प्रेरित होकर पण्डितजी साहब का भी जीवन धन्य हो गया। जिसका साकाररूप तीर्थधाम मङ्गलायतन व मङ्गलायतन विश्वविद्यालय है। जहाँ से यथार्थ तत्त्व का ज्ञान मिलता है और इस संसार सागर से पार हुआ जा सकता है। पण्डितजी साहब भी निकट भविष्य में मोक्षपथ की ओर अग्रसर होंगे यह निश्चित है। मैं पण्डितजी साहब के प्रति यह भावना भाता हूँ, जब तक वह इस संसार में हैं, तब तक नित्य ही स्व-पर के भेदज्ञान के द्वारा अपने निज स्वरूप भगवान आत्मा का ध्यान करते रहें।

एक चमत्कारी व्यक्तित्व

— रमेश धनोपिया
बिजौलियां-भीलवाड़ा, राजस्थान

पण्डितजी साहब श्री कैलाशचन्द्रजी का बिजौलियां पधारने का घटनाक्रम बड़े नाटकीय ढंग से हुआ। सन् 1980-81 के सामाजिक विवाद के फलस्वरूप श्री सीमन्धर जिनालय का निर्माण हुआ एवं 1982 के बधेरा पञ्च कल्याणक में श्री सीमन्धरस्वामी प्रतिष्ठित होकर विराजमान हुए, तभी से गुरुदेवश्री की तत्त्वज्ञानमयी वाणी निर्बाधरूप से प्रवाहित होने लगी। इसी क्रम में पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी का पत्र बिजौलियां मुमुक्षु मण्डल को प्राप्त हुआ कि 'मैं बिजौलियां प्रवचन हेतु आना चाहता हूँ।' साथ ही बाहर से अन्य मण्डल के सदस्यों के माध्यम से जानकारी हुई कि पण्डितजी बड़े तेज-तर्रार हैं, व कक्षा पद्धति से प्रवचन करते हैं; अतः उनको यहाँ आने के लिए मना कर दिया परन्तु पण्डितजी ने कहा कि 'मैं एक बार अवश्य आऊँगा' और मण्डल के सदस्यों की अनिच्छा होते हुए भी आप यहाँ पधारे। निश्चित् ही **यह हमारे मण्डल का सौभाग्य था कि जैसे मुमुक्षु समाज को पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी मिले, उसी प्रकार हमें पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी साहब का समागम मिला।** उनकी प्रवचन शैली से सभी सदस्य काफी प्रभावित हुए। फिर तो पण्डितजी साहब निरन्तर प्रतिवर्ष लम्बे समय तक बिजौलियां प्रवास पर रहे। उनके प्रवचनों में सात भागों का क्रमशः निरन्तर वाचन होता। उनके प्रवचनों का मुख्य सारांश होता 'शरीर एवं आत्मा भिन्न हैं एवं वस्तु की एकरूप स्थिति नहीं रहती।' सात तत्त्व एवं छह द्रव्य का भावभासन आपके प्रवचनों का मुख्य विषय था। आपकी ही प्रेरणा से मन्दिर परिसर के समीप ही विद्वानों के ठहरने के लिए कमरों का निर्माण हुआ। आपके यहाँ पर प्रवास के दौरान मण्डल के सदस्यों को आप परिवार के सदस्य के समान प्रतीत होते थे। आपकी जीवनशैली अत्यन्त सरल एवं सादगीपूर्ण थी। बिजौलियां मण्डल से आपका विशेष लगाव था, आप शारीरिकरूप से जब तक स्वस्थ थे, यहाँ पधारते रहे।

मैं उनके प्रति विनयांजली समर्पित करते हुए भावना भाता हूँ कि निकट भव में आपको पञ्चम गति प्राप्त होवे।

हमारे पथ प्रदर्शक

— मुकेशकुमार जैन
अध्यक्ष, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन, बिजौलियां

पूज्य पण्डित कैलाशचन्द्रजी, बुलन्दशहर हमारे लिये, मण्डल के लिये, इस युग के मार्ग विधाता के रूप में रहे हैं, आपका सर्व प्रथम बार बिजौलियां में आगमन 31 दिसम्बर 1982 को हुआ था, ऐसे समय हमारे छोटे से गाँव में न तो ठहरने की कोई व्यवस्था और न ही स्वाध्याय का कोई स्थान था, ऐसी परिस्थिति में भी आपने यहाँ आने की व रुकने की स्वीकृति प्रदान की। इसमें हमारा सौभाग्य मण्डल के अन्य सदस्यों से ज्यादा यह था कि पण्डितजी हमारे घर पर ठहरे, जिसका लाभ पूरे परिवार को रहा।

उस समय में जहाँ हमारे यहाँ पर श्री सीमन्धर जिनालय की नींव लगी, एवं स्वाध्याय हॉल का निर्माण का कार्य चालू हुआ, उस समय टाट की छत के नीचे स्वाध्याय की एक अटूट परम्परा चालू हुई, तब से आपके द्वारा स्थापित सुबह, दोपहर एवं शाम की स्वाध्याय की परम्परा अनवरतरूप से चालू है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा समझाया गया दिगम्बर जैनधर्म का स्वरूप आपने गाँव-गाँव, शहर-शहर में हर जगह पर पहुँचाया। उसे उसी रूप में समझाया जिस रूप में गुरुदेव चाहते थे। गुरुदेव के उपकार को आप हर समय याद किया करते थे। कहते थे – 'इस पंचम काल में चौथा काल बनानेवाले, भरतक्षेत्र को विदेहक्षेत्र बनानेवाले कोई व्यक्ति मैंने देखा तो वह कानजीस्वामी ही थे।' इसी प्रकार से अनेक उद्‌गार गुरुदेव के प्रति आपके हुआ करते हैं।

जितनी मेहनत कोई माँ-बाप अपने बच्चों के लिये नहीं करता, उतनी मेहनत से आप प्रत्येक जीव को समझाने की कोशिश करते थे; भावना रहती है कि संसार का प्रत्येक जीव सुखी रहे और सुखी रहने का कोई मार्ग है तो वह एकमात्र यही है कि जो वर्तमान में गुरुदेव ने बताया है एवं अनादि से तीर्थङ्करों ने बताया है, इसी एकमात्र मार्ग से जीव सुखी हो सकता है।

आप के द्वारा संकलित जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के सात भागों के माध्यम से आप ज्यादातर कक्षाएँ लिया करते थे, इसमें मुख्य जोर, द्रव्य-गुण-पर्याय, चार अभाव, छह कारक, निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध, व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध आदि के माध्यम से समझाया करते थे, इनमें भी मुझ आत्मा को कैसे लाभ हो ? इस बात पर ज्यादा जोर रहा करता था।

मङ्गल समर्पण

देश में कोने-कोने में घूम-घूमकर तत्त्वज्ञान का जो प्रचार आपके द्वारा हुआ, यह जैन जगत की आध्यात्मिक क्रान्ति में मील का पत्थर बन गया। आपके द्वारा स्थापित मण्डलों में बिजौलियां मण्डल आपका प्रिय मण्डलों में एक था। आपका जब प्रवास यहाँ पर रहता था, तब देहरादून, दिल्ली, मेरठ, भिण्ड, मुरेना, ग्वालियर, आगरा, छिन्दवाड़ा, बुलन्दशहर, कोटा, भीलवाड़ा आदि स्थानों के मुमुक्षु भाई भी यहाँ आकर स्वाध्याय कक्षाओं के लाभ लिया करते थे।

आपकी निर्लोभ प्रवृत्ति भी आपकी विशेषताओं में एक है। स्वभाव से कड़क दिखने पर भी आपके हृदय में कोमलता बहुत है, अध्यात्म का ज्ञान सभी को हो ऐसी निर्मल भावना रहती है।

समय की प्रतिबद्धता सदैव रहा करती थी, सुबह 2.30 बजे उठना व स्वाध्याय करना एवं सुबह व दोपहर में रोजाना घूमने जाना नियमित क्रिया में था, हमें भी साथ में घूमने ले जाया करते थे और वहाँ भी तत्त्व की ही बात किया करते थे। आपमें अन्तर व बाह्य में सम्पूर्णरूप से अध्यात्म ही बसता है। जिसका प्रमाण आपकी दैनिक डायरी में मिलता है।

ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी पूज्य पण्डितजी साहब कि शताब्दी वर्ष पर मुमुक्षु मण्डल बिजौलिया व जैन युवा फैडरेशन बिजौलियां शुभकामनाएँ प्रेषित करते हुए, आपकी छत्रछाया तीर्थधाम मङ्गलायतन पर व पूरे मुमुक्षु समाज पर बनी रहे - यह भावना भाते हैं।

मेरे दिशाबोधक पण्डित कैलाशचन्द्रजी

— **नरेन्द्र जैन**, बिजौलियाँ

आदरणीय पण्डित सा. श्री कैलाशचन्द्रजी का सन् 1982-83 में प्रथम आगमन से पूर्व, मैं मन्दिर में जिनदर्शन करने के लिये जाता था। बिजौलियां आगमन के पश्चात् कुछ दिनों तक तो पण्डितजी साहब की कक्षा में नहीं गया। कुछ दिनों पश्चात् कक्षा में डर-डरकर गया। इस डर से कक्षा में पीछे बैठता था कि पण्डितजी साहब खड़ा करके प्रश्न नहीं पूछे लें। धीरे-धीरे कक्षा में रुचि लगने लगी। पूर्व में णमोकारमन्त्र के अतिरिक्त कुछ नहीं आता था, धीरे-धीरे छह द्रव्य, सात तत्त्वों, नव पदार्थ, चार अभाव के नाम व अर्थ समझ आने लगा।

पण्डितजी साहब द्वारा पूज्य गुरुदेव का सोनगढ़ का खजाना बिजौलियां में खोल दिया। तब से ही आज तक प्रतिदिन शास्त्र-स्वाध्याय में जाता हूँ। श्रीमान् अनन्तभाई, मुम्बई द्वारा सन् 2000 में सीमन्धर जिनालय में पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन चलाने के लिए कम्प्यूटर व सी.डी. प्रदान की गयी, तब से सुबह प्रात: आठ बजे कम्प्यूटर पर पूज्य गुरुदेव का सी.डी. प्रवचन निरन्तर चलाता हूँ। उसके पश्चात् 30 मिनिट का श्री छगनलालजी धनोप्या द्वारा उपरोक्त प्रवचन पर सरलीकरण किया जाता है। यह सब आदरणीय पण्डितजी साहब श्री कैलाशचन्द्रजी का प्रताप, उपकार ही है। पण्डितजी साहब द्वारा बिजौलियाँ मुमुक्षु मण्डल को नयी चेतना प्रदान की। पण्डितजी साहब द्वारा हमेशा यह कहा जाता था कि नव-युवा को जैनधर्म की कक्षा लगाकर पढ़ावो, यह युवा ही जैनधर्म को सदी के अन्त तक ले जानेवाले हैं। पण्डितजी साहब के उपकार से ही बिजौलियाँ में महिला मण्डल की कक्षाएँ चलती हैं।

पूज्यनीय पण्डितजी साहब द्वारा ऐसा सीधा एवं सच्चा मार्ग बतलाया, जिसमें किसी प्रकार का पैसा नहीं लगता, क्योंकि अपन तो बनिये हैं, जहाँ फायदा हो, वहीं काम करना चाहते हैं। जो पण्डितजी साहब द्वारा 'पामर से परमात्मा' व 'आत्मा से परमात्मा कैसे बना जावे' बताया गया।

पण्डितजी साहब के उपकार की महिमा करने के लिये शब्दों का ही अभाव है। शब्द बहुत थोड़े है, पूज्य पण्डितजी साहब के गुणों का अथाह भण्डार भरा पड़ा है। जो पण्डितजी साहब द्वारा बिजौलियाँ को दिया गया, उनका वर्णन तो इस जन्म में तो क्या, आगे के कई जन्मों तक नहीं कर पायेंगे।

असीम उपकार : पण्डितजी का

— **प्रेमचन्द जैन,** गोहद, भिण्ड, मध्यप्रदेश

वीतराग जिनशासन की महान परम्परा में आचार्य भगवन्तों और दिगम्बर मुनिराजों द्वारा किया गया लेखन कार्य, सकल जगत को संजीवनी प्रदान करता है। इस कलिकाल में भविजनों को सुख का मार्ग बताने के लिये जिनवाणी ही श्रेष्ठतम साधन है। जिनवाणी के रहस्यों को समझकर उन्हें आत्मसात करना ही सुखी होने का एकमात्र उपाय है।

आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावनायोग में हमें पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी ने जो तत्त्वज्ञान पिलाया, वह अविस्मरणीय है।

पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी का जिनवाणी के प्रसार में जो योगदान रहा, उसका वर्णन करना सागर में बिन्दु के समान है।

हमारे परिवार व समाज के मार्गदर्शक पण्डितजी ही हैं, जिन्होंने डण्डा ठोंक-ठोंककर हमें व हमारे परिवार को तत्त्वज्ञान दिया, उसके लिए हम पण्डितजी के अत्यन्त आभारी हैं।

जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला, सातों भागों का अध्ययन भरी सभा में कराया। आपका नियम था कि जो क्लास में नहीं आयेगा, उसके यहाँ हम भोजन नहीं करेंगे।

मैंने स्वयं सन् 1990 के करीब पण्डितश्री नाथूराम बाबूजी जनता राइस मिल गोहदवालों का स्वागत किया, उसमें भी पण्डित कैलाशचन्द्रजी ने स्वयं आगे आकर समारोह की शोभा बढ़ाई थी, जिसके फोटो आज भी विद्यमान हैं। जिसमें हम लोगों ने पण्डितजी का भी स्वागत किया।

पण्डित जी का मूल उपदेश –

नरभव सुकुल सुथिल जिनवाणी बारबार नहीं पायेगा।
जो ये अवसर बीता तो, भैया पीछे पछताएगा॥
जो कुछ करना है सो कर लो, सुकृत तरुण अवस्था में।
पैसा पास निरोगी काया, इन्द्रिया ठीक व्यवस्था में॥
कर न सकोगे वृद्धापन में, बाल पौरुष थक जाने से।
आग लगी कुटिया में फिर का होता कुँआ खुदाने से।
ऐसे पूज्य पण्डितजी के प्रति हार्दिक विनयांजलि समर्पित करता हूँ।

सादर सविनय असंख्य नमन :
पूज्य पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी के चरणों में

— **श्रीमती सीमा जैन,** कोटा, राजस्थान

पूज्य गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी हमारे लिए तो मानो साक्षात् गुरुदेव के रूप में ही पधारे। उनके द्वारा दिये गये तत्त्वज्ञान ने हमें पूज्य गुरुदेवश्री के विरह को भुलाया है और गुरुदेवश्री का तत्त्वज्ञान सुलभ कराया है।

मैं तो प्रलोभन (पुरुस्कार) की वजह से ही याद करके सुनाती थी, परन्तु अब मर्म समझ में आने लगा कि उनके याद करवाने के पीछे क्या भाव थे? पण्डितजी साहब की दिव्य देशना का ही प्रताप है कि हम धर्म का मर्म समझ पा रहे हैं। धर्म की सारी विकृतियाँ व कृत्रिमताओं से परिशुद्ध होकर सत्य मार्ग को समझ पा रहे हैं।

मैं तो यही सोचती हूँ कि मेरा जन्मों-जन्मों का पुण्य संचय होकर महापुण्य में बदला है। इस कारण मुझे आप जैसे गुरु का समागम मिला है। मेरे पास ऐसा कोई द्रव्य नहीं, शब्द नहीं, जिसे देकर में उऋण हो जाऊँ।

मैं महान सौभाग्यशाली हूँ कि मुझे गुरु के रूप में आप सुलभ हुए। परम पूज्य पण्डितजी साहब हमेशा यही उपदेश देते हैं - 'स्व में बस, पर से खस, आयेगा आत्मा में अतीन्द्रिय रस, यही अध्यात्म का कस, इतना करो तो बस' शारीरिक अस्वस्थता में भी यही उपदेश देते हैं। हमने सुना, परन्तु अन्तर में नहीं उतारा, बार-बार यही कहते हैं कि मकड़ी के जाल से अब तो निकल, सब यही पड़ा रह जायेगा, अपनी आत्मा को समझ, स्व में बस जा!

पूज्य पण्डितजी साहब का समागम न मिला होता तो मैं भी कुधर्मियों की तरह पाखण्डी, रूढ़िवादी, अन्धविश्वासी, कोरे कर्मकाण्डी होती। आज आप के प्रताप से मुझे जैनधर्म, दर्शन का सार समझ में आने लगा है। जैनदर्शन क्या है? यह पण्डितजी साहब द्वारा रचित आठों भागों में बच्चों की भाँति समझाया व रटवाया, जिससे सारे विषय समझ आने लगे। मुझे कुदेव-कुगुरु-कुशास्त्र के पास जाने के भाव नहीं होते व विपरीत परिस्थितियों में शान्तभाव से तत्त्वविचार करती हूँ, यह सब पूज्य पण्डितजी साहब का उपकार है।

पूज्य पण्डितजी साहब का जीवन सहज, सरल, निश्चल व्यक्तित्व, साधर्मी वात्सल्य, विलासितामुक्त जीवनचर्या, शारीरिक स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के मध्य में भी तत्त्वज्ञान की

निरन्तर चिन्तनधारा, समय की पाबन्दी, तत्त्वज्ञान के लिये प्रेरित करना, शंका–समाधान के लिये हमेशा तैयार रहना व निस्पृहभाव से तत्त्वप्रचार करना, आपके जीवन की अनुकरणीय विशेषताएँ हैं।

आपके पुण्य संयोग से आज सारा मुमुक्षु समाज एक परिवार की भाँति मिलता व रहता है। आप जब बिजोलियां घर पर रहते थे तो पूरे परिवार में तत्त्वचर्चा होती थी। आज भी जिस क्षण आपके दर्शन हो जाते हैं, वह क्षण हमारे जीवन का अमूल्य, अभूतपूर्व क्षण होता है – यही भावना है –

युगों–युगों तक गूँजे, गुरुदेव की वाणी की बहार,
हमें आपके द्वारा मिलता रहे, धर्मवृद्धि का उपहार॥

स्वयं अपने परिवार के प्रति निर्मोही व्यक्तित्व

— **कृष्णचन्द्र जैन,** लाल दुकान, सागर

आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी साहब की कुछ विशेषताएँ, जो मेरी दृष्टि में आयी वे निम्न प्रकार हैं —

1. सोनगढ़ से हिन्दी भाषी समाज का परिचय करानेवाले महापुरुष।

2. गुरुदेवश्री के पास आत्मकल्याणार्थ भेजनेवाले महामना।

3. समाज से किसी प्रकार की किसी भी रूप में, यहाँ तक कि किराया, दवाई, डाक खर्च आदि की राशि भी नहीं लेनेवाले उदारमना।

4. कक्षाओं में स्वयं अपनी तरफ से पारितोषिक राशि देनेवाले प्रोत्साहनकर्ता।

5. कक्षा में काम आनेवाली पुस्तकों एवं जिनवाणी को कम से कम कीमत में उपलब्ध करानेवाले महानुभाव।

6. कड़क व्यक्तित्व होने पर भी किसी से नहीं उलझनेवाले उपशमी।

7. उदासीन रहनेवाले मुमुक्षुओं को प्रोत्साहित करने हेतु उनके घर तक जानेवाले परम हितैषी।

8. शास्त्रों का अर्थ समझने हेतु समन्वय की कला जाननेवाले तत्त्वदृष्टा।

9. कक्षा के एक-एक छात्र को व्यक्तिगत जाननेवाले और उसके स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहनेवाले संवेदनशील।

10. अनेक मुमुक्षु मण्डलों की आधारशिला रखनेवाले शिलान्यासकर्ता।

11. अनेक मुमुक्षु मण्डलों से लगाव बनाये रखनेवाले प्रीतिमान।

12. धर्म को किस्सा-कहानी न समझनेवाले, बल्कि धर्म को आत्मा की गहराई से जानने/समझने/पढ़नेवाले अध्येता।

13. समाज में किसी के व्यक्तिगत घर में रुकने की बजाय धर्मशाला आदि सार्वजनिक स्थानों पर रुकनेवाले 'रमता जोगी, बहता पानी' की उक्ति को चरितार्थ करनेवाले साधक।

14. श्रावक के घर अत्यन्त सादगीपूर्ण भोजन करनेवाले भोजनपायी।

15. धर्म अपने लिये होता है, दूसरों के लिये नहीं; इसलिए शरीर से भिन्न अपनी आत्मा को पहचान, उसमें लीन हो जाने का उपदेश देनेवाले श्रेष्ठवक्ता।

16. जो आज बड़े-बड़े पण्डित / अध्येता कहलाते हैं - उन्हें भी प्रारम्भिक अवस्थाओं में मार्ग पर लगानेवाले सच्चे शुभचिन्तक। जैसे हमारे सागर के प्रमुख विद्वानों में पण्डित मन्नूलालजी वकील साहब, पण्डित कपूरचन्दजी भायजी, पण्डित निर्मलकुमारजी, पण्डित सरतकुमारजी, पण्डित महेन्द्रकुमारजी बरायठा आदि विद्वानों के मार्गदर्शक।

17. स्वयं अपने परिवार के प्रति निर्मोही। उनका कहना कहना था कि अपने घरवालों को सन्तुष्ट करना बहुत कठिन बात है - ऐसी परिस्थिति 365 दिनों का अधिकांश समय सोनगढ़ रहना अथवा समाज में प्रचार-प्रसार हेतु कक्षाएँ लेने जाना - बस! यही जीवन था।

18. नैतिक शिक्षा को महत्त्व नहीं देनेवाले निस्पृह व्यक्तित्व। उनकी शिक्षा थी कि 'धार्मिक शिक्षा ग्रहण करो और ब्रह्मचर्य से रहो।' परन्तु मुझे खेद है कि मैं उनकी शिक्षा पर तब पूर्ण अमल न कर सका परन्तु बाद में उन शिक्षाओं ने मुझे और मेरे जीवन को बहुत परिवर्तित किया। - यह उनका ही उपकार है।

- ऐसे महान व्यक्ति को उनके शारीरिक जीवन की शताब्दी होने के उपलक्ष्य में हार्दिक कोटिशः शुभकामनाएँ समर्पित हैं।

पण्डितजी की प्रेरक जीवनशैली

— **धनसिंह जैन,** प्रध्यानाध्यापक, पिड़ावा

पूज्य पण्डित कैलाशचन्द्रजी वास्तव में एक अद्वितीय पुरुष हैं। उनमें निस्वार्थ तत्त्व प्रचार की ऐसी भावना है, जिसकी कोई सानी नहीं रखता।

वर्तमान काल में या तो पूज्य गुरुदेव कानजीस्वामीजी ने इस वीतरागधर्म का अकेले अडिग निशंक रहकर प्रचार-प्रसार किया या फिर बिना अन्य के सहारे पण्डित कैलाशचनद्रजी ने किया। जहाँ जाते हर स्थान पर एक, दो माह रहकर पूरी तरह से जनमानस में वीतरागता पहुँचाते। आज के समय में पण्डित वर्ग 2-4 दिन या एक, दो सप्ताह में घबरा जाते हैं, परन्तु आपके विचार तो थे कि जब तक आप कहोगे मैं धर्म सुनाता रहूँगा तथा छह-छह घण्टे प्रतिदिन जिनवाणी सुनाते थे।

हम बड़े दुर्भाग्यशाली थे कि उस समय गुरुदेव के विरोधी बन कर सुनते थे कि ये लोग क्या-क्या गलत बातें करते हैं। आज वह समय याद आता है तो बहुत रोना आता है, पश्चाताप होता है।

आप पिड़ावा में 2-3 बार पधारे थे। एक-एक माह रहे। पिड़ावा के बड़े मन्दिरजी में छोटे-बड़े सभी आप की कक्षा का पूरा लाभ उठाते थे। आपको सभी बड़े आदरभाव से देखते थे तथा डण्डेवाले पण्डितजी कहकर बुलाते थे।

ऐसा समय जब स्वामीजी एवं उनकी बातों की जगह-जगह अज्ञानतावश आलोचना होती थी, उनको मुनि विरोधी की संज्ञा दी जाती थी। पण्डित कैलाशचन्द्रजी ने जगह-जगह जाकर अज्ञानता को ही नहीं मिटाया अपितु सत्य धर्म का, अनन्त तीर्थङ्करों की वाणी का व वस्तुस्वरूप का ज्ञान करवाया।

आपने लोगों के भ्रम को दूर किया कि मोटर पेट्रोल से नहीं अपितु अपनी क्रियावतीशक्ति से चलती है। बाई से रोटी नहीं, अपितु अपनी उपादान योग्यता आटे से बनती है। छह द्रव्य, सात तत्त्व, वस्तुस्वरूप, उपादान-निमित्त व व्यवहार-निश्चय आदि अनेक पहलुओं का यथार्थ निरूपण समाज में अपने छोटे-छोटे भागों के प्रश्नोत्तर द्वारा समाज में भव्य जीवों के अन्त:पटल पर ऐसा उतार दिया है कि जिसे लोग जीवन भर भूल नहीं सकते।

पिड़ावा में पधारे उस समय की एक-दो झलकियाँ बयान कर रहा हूँ कि एक बार उनके बाल बहुत बढ़ गये, हमने निवेदन किया कि आपकी कटिंग करवा दें तो उन्होंने सहज

स्वीकृति दे दी। हम लोग कटिंगवाले को पैसे देने लगे परन्तु आप कहने लगे कि कटिंग मेरी हुई और आप पैसे देंगे नहीं और आपने तत्काल उसे पैसे निकाल कर दे दिये और कहा कि मेरा बेटा पवन मुझे प्रतिमाह रुपये भेजता है। मैं समाज पर बोझ नहीं बनूँगा; मैं धर्म नहीं बेचूँगा। लगभग 35-40 वर्ष पुरानी बातें हैं ये।

इसी प्रकार कभी जीवन में किराये तक का भी एक पैसा समाज से नहीं लिया। मजाक में हमारे यहाँ के पण्डितजी आपको कहते थे कि आप तो बड़े लखपति हो, तो आप भी मजाक में कह देते कि क्यों झूठ बोलते हो, मैं तो अनन्तपति और आप मुझे लखपति कहते हो ? और हाँ, लखपति नहीं लक्ष्यपति जरूर हूँ। मेरा लक्ष्य सिद्धपद है, उसे जरूर पाऊँगा।

ऐसे हमारे पण्डित कैलाशचन्दजी, जिनका बहुत-बहुत आभार, अभिनन्दन हम सभी उनके शतायु की कामना ही नहीं करते हैं अपितु हजारों वर्षों तक जीएँ, धर्म की सेवा-आराधना करें, तत्त्व प्रचार-प्रसार कर अपने जीवन का ध्येय लक्ष्यपति प्राप्त करें।

पुन: डण्डेवाले पण्डितजी पिड़ावा पधारकर अपनी अधूरी कक्षा को पूरी करें, क्योंकि अब हम स्वामीजी के विरोधी नहीं, उनके अनन्यभक्त हैं। पलक पाँवड़े बिछाकर हम आपकी आगवानी करेंगे।

जीवन की दिशा ही बदल गयी

— **दर्शनलाल जैन,** देहरादून

सन् 1972 गर्मियों में एक दिन पूज्य पण्डित जी का मेरे आवास पर भोजन था। अनायास ही भोजन करते समय प्रेम भरे मधुर शब्दों में अपनत्व की भावना से ओत-प्रोत होकर कहने लगे - इस बार आपको हमारे साथ सोनगढ़ चलना है, वहाँ पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों के साथ सर्व श्री रामजीभाई एवं खेमजीभाई की कक्षाओं में पढ़ने का भी लाभ मिलेगा। मैंने बड़े संकोचवश सरकारी कर्मचारी होने के कारण अपनी असमर्थता जतायी। मुझे एक माह की छुट्टी नहीं मिल सकेगी - ऐसा बताया। कहने लगे 'जहाँ चाह, वहाँ राह' - सब हो सकता है। पुन: मैंने अपनी अनिच्छा को छिपाते हुए कहा मेरे पास इतने पैसे नहीं हैं कि मैं जा सकूँ। उस समय तो वे भोजन के उपरान्त चले गये। अगले दिन प्रात: काल घर पर अचानक पधार गये, बैठकर अपनी जेब से चैक बुक निकाल कर मेरे सामने रख दी - जितना रुपया चाहिए, भर

लो, लेकिन चलना अवश्य पड़ेगा ही। मैं निरुत्तर हो गया। उस बात को याद करते ही मुझे रोमांच हो आता है कि कितना अगाध स्नेह है अपने गुरु पर तथा कितना वात्सल्य है साधर्मियों मुमुक्षुओं के प्रति आपका। उन्हें सभी श्रोताओं के प्रति ऐसा वात्सल्य उमड़ता देखा है कि सब अभी धर्म की प्राप्ति करें।

अनेक बार हम लोगों को धर्म में उत्साहित करने के लिये उन्होंने देहरादून मुमुक्षु भाई-बहनों को बिजौलिया, अलवर, अशोकनगर, कोटा, छिन्दवाड़ा, अलीगढ़, बुलन्दशहर, इन्दौर, दाहोद आदि अनेक स्थानों से अनेक बार अपने प्रवास काल में देहरादून निमन्त्रण भिजवाए और हम लोग वहाँ पर गये। उनका साधर्मियों के प्रति अति प्रेम रहा है। आजकल पूज्य पण्डितजी अस्वस्थ चल रहे हैं, हमारे पाप का उदय है। मेरी भावना है कि आप शीघ्र ही स्वस्थ हों और पहले की भाँति हमारा पुन: मार्गदर्शन करें।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के लघुनन्दन

श्रद्धेय पण्डित कैलाशचन्द्रजी बुलन्दशहर

— **अभयकुमार टडैया,** ललितपुर

जब पण्डितजी प्रथम बार ललितपुर पधारे, तब उनकी वह छोटी सी टीन की पेटी और एक कन्धे पर थैला, हाथ में एक गुटान ऐसा साधारण-सा रूप देखकर यह प्रतीत ही नहीं हुआ था कि यह इतने बड़े उद्योगपति के पिताश्री हैं।

श्री सीमन्धर जिनालय, ललितपुर उनके प्रयासों का फल है। नियमित घूमने जाते समय टडैयाजी को ट्रस्ट बनाने एवं जमीन देने की प्रेरणा करते थे। मेरे घर पर प्रवास के दौरान उन्होंने अपने जीवन का प्रेरणादायक प्रसंग सुनाया था कि मेरी पुत्री की शादी थी, बारात आ गयी थी और सुबह हमारे स्वाध्याय का समय हो गया था। अत: मैं तो मन्दिरजी चल दिया था और रास्ते में बारात के कुछ व्यक्ति मिल गये और उन्होंने मुझसे पूछा पण्डित कैलाशचन्द्रजी का घर कहाँ है ? सो मैंने उन्हें घर बता दिया एवं स्वाध्याय हेतु मन्दिर चला गया। जब लौटकर घर आया तो वही व्यक्ति मुझे देखकर हतप्रभ रह गये कि यही लड़की के पिता हैं।

यह पण्डितजी का स्वाध्याय के प्रति अगाध प्रेम था। पूरे बुन्देलखण्ड में जाकर उन्होंने पूज्य गुरुदेव के अध्यात्म का डंका, ठोंक-ठोंक कर बजाया।

लोहपुरुष का अभिनन्दन

— डा. सतीश जैन
दिल्ली पब्लिक स्कूल, अलीगढ़

भारतभूमि सदा से ही मुनियों, यतियों व विद्वानों से आप्लावित रही है। इसे जगद्गुरु की संज्ञा के पीछे मनीषियों का सदाचरण, व्यवहार, संयम, त्याग व तपस्या का ही परिणाम है। भगवान आदिनाथ से महावीर तथा गौतम गणधर, कुन्दकुन्द, अमृतचन्द्र, गुरुदेव कानजीस्वामी की परम्परा, संस्कृति व आध्यात्मिक चेतना को आगे बढ़ाने का श्रेय श्री पण्डित कैलाशचन्द्रजी बुलन्दशहर को है। अध्यात्म जगत के दिवाकर, परम दैदीप्यमान अध्यात्म चन्द्र, सर्व गुणसम्पन्न असाधारण व्यक्तित्व के धनी, प्रखर, निर्भीक लोकप्रिय वक्ता, मन-वचन-काय से जिनधर्म प्रचारक, सफल संस्था निर्माता, सत्य के शिखर, दूरदर्शी, जीवन में संयमी विचारों में दृढ़, विवेकशील, जिनवाणी के सच्चे सपूत पण्डित कैलाशचन्द्रजी जैन समाज के समकालीन विद्वानों में अग्रगण्य है।

पण्डित कैलाशचन्द्रजी ने अपनी साधना, ज्ञान, चिन्तन से जो कुछ अर्जित किया, उसे समाज को दिया। पण्डितजी का लक्ष्य जैनधर्म को सरल ढंग से स्पष्ट भाषा में सामान्यजन तक पहुँचाना था, उनका आन्तरिक हृदय जिनवाणी के प्रति अगाध श्रद्धा से भरा है। अध्यात्म को जनता की भाषा में गाँव-गाँव व घर-घर तक पहुँचाने के सफलता का श्रेय अध्यात्मक्रान्ति के अग्रदूत पण्डित कैलाशचन्द्रजी को है। जो दार्शनिकता की सीमाओं से बाहर निकलकर सातों भाग का ज्ञान जनसामान्य तक पहुँचाने में सिद्धहस्त हुए। जैन अध्यात्म का शंखनाद उनके द्वारा बनाए गए तीर्थधाम मङ्गलायतन के द्वारा होता रहेगा। तीर्थधाम मङ्गलायतन विद्वानों की फैक्ट्री है। भगवान बनने की कला सिखाने की अद्भुत पाठशाला है, जिसमें भगवान बनते हैं।

पण्डित कैलाशचन्द्रजी की वाणी में ज्ञान और भोग का मणिकांचन संयोग है। जटिल वैचारिक गुत्थियों को सरल सुगम शैली में समझाने के कारण जैन अध्यात्म साहित्य की पहिचान बन गये। अध्यात्म के प्रकाण्ड विद्वान होने से अध्यापन शैली के शिखर पुरुष अभिव्यक्ति व साधारणीकरण के कारण व सहृदयी पाठक के अन्दर धीरे-धीरे उतर गए - उन्हें अपना बना लिया।

डण्डावाले वयोवृद्ध पण्डित कैलाशचन्द्रजी से मैं सर्व प्रथम मौ कस्बे में मिला। वे जैनधर्म के एक आदर्श अध्यापक दिखायी दिये। मौ कस्बे में पूरा मुमुक्षुसमाज बाल-

वृद्धसहित पण्डित कैलाशचन्द्रजी की कक्षा में अध्ययन करता था। पण्डितजी ने लघु जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के सातों भाग पूरे समाज में ही नहीं, जन-जन के हृदय में उतार दिये। वे प्रश्नों के माध्यम से सभा में पूछते थे तथा उत्तर मिलने पर उसे सातों भागों का सेट देकर पुरस्कृत करते थे।

डण्डा लेकर स्वाध्याय की गद्दी पर खड़े होकर पढ़ाते थे, प्रश्नो के उत्तर दोहराते है - स्व में वस, पर से खस, तब आयेगा आत्मा में अतीन्द्रिय आनन्द का रस, इतना करो तो बस। पण्डितजी साहब का जीवन निस्पृह था, वे 15 पैसे का पोस्टकार्ड भी समाज से नहीं लेते थे। पूज्य गुरुदेव कानजीस्वामी के कथित सिद्धान्तों को अपनी सरल भाषा में सातों भागों में भरकर समझाया। ये जग जाहिर और स्वीकृत तथ्य है।

मङ्गलायतन द्वारा देश-विदेश में पञ्च कल्याणक प्रतिष्ठाएँ आदि कराना, प्रत्यक्ष इन्टरनेट के माध्यम से विदेश में भी जिनधर्म के बीज अंकुरित करना व उसका विकास करने में पण्डित कैलाशचन्द्रजी महत्वपूर्ण योगदान है। धर्मप्रभावनापूर्ण जीवन के पलों में भूत-वर्तमान-भविष्य का मंगल लौकिक प्रसंग भी अध्यात्म पक्ष से सराबोर रहता है। लौकिकता में अलौकिकता का बोध दिखायी देता है। आपके परिवार के उत्सव, महोत्सव सभी ज्ञान गंगा को लिए हुए होते हैं।

पूज्य गुरुदेव के अनन्य शिष्य, धर्मप्रणेता कुन्दकुन्द के कुन्दन, मङ्गलायतन के स्वप्नदृष्टा, सत्य के पुजारी, धुन के पक्के, समाज के मार्गदर्शक, जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के दिवाकर, इन सबका मिश्रण बनाकर जिस व्यक्तित्व का निर्माण होता है, वे हैं पण्डित कैलाशचन्द्रजी।

आपने सहज तर्क प्रधान शैली, शान्तरस में निमग्न, शीतलता प्रदान करनेवाला, शुभ्र चाँदनी की शीतल किरणों के समान, जैनदर्शन के अन्तरंग को स्पर्श करनेवाला, जैन सिद्धान्त प्रवेशमाला सत्साहित्य लिखा है। उसके अध्ययन से समाज के लोगों की भ्रान्तियाँ दूर होकर जिनधर्म के प्रति अगाध श्रद्धा उत्पन्न होती है। आकाश के अनगिनत तारों के मध्य में ध्रुव तारे के समान आपकी भाषा जिनवचन, जिनवाणी के मार्मिक रहस्य को क्षीर समुद्र के जल के समान स्पष्ट झलकाती है। आपके साहित्य की महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसको समझने के लिए पाण्डित्य की आवश्यकता नहीं है, बल्कि मन की पवित्रता होना आवश्यक है। आप उच्चकोटि के वक्ता होने के साथ-साथ कलम के धनी हैं। जैनतत्त्व के विविध क्षेत्रों में गहरी पैठ है। विचारों की पकड़ है। आपको अध्यात्मशास्त्र गत सिद्धान्त को नयी रीति से प्रस्तुत

करने में सफलता मिली है। आप जैनदर्शन साहित्य के 'कलम के सिपाही' सिद्ध हुए। तीर्थङ्करों की वाणी की अनुगामिनी आपकी लेखनी से लिखा गया साहित्य, सभी भव्य भाग्यशाली जीवधारियों एवं सभी मङ्गलार्थियों को अतिप्रिय है।

आपने धर्म प्रचार के क्षेत्र में वीरयोद्धा की तरह महान कार्य किया है। आपने तीर्थधाम मङ्गलायतन का स्वप्न देखा। मङ्गलायतन ने अध्यात्म परम्परा का प्रचार-प्रसार भारत में ही नहीं अपितु सुदूर विदेशों में भी जिनधर्म का ध्वज फहराया। अध्यात्म विषय का पान करते हुए आप स्वाध्याय में लीन रहते हैं। स्वाध्याय की ऐसी लगन कि जब तक स्पष्ट न हो, तब तक सोचते रहना।

पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी बेजोड़ चिन्तक एवं कुशल कक्षाध्यापक हैं। दुरुह प्रतिपाद्य विषय को उदाहरण शैली व सरल प्रस्तुतिकरण से बच्चों के हृदय में भी उतार देते हैं। आपकी कक्षा में विकथा को कभी स्थान नहीं मिला। समस्त शैली आगम सम्मत दिखायी दी। नैतिक मूल्यों से संचालित, मर्यादित सत्यनिष्ठा और विश्वनीयता की स्पष्ट झलक है। सकारात्मक सोच के साथ युवा वर्ग व बच्चों को धर्म से जोड़ना वर्तमान युग की अनिवार्यता है। वृद्धों का जीवन भी धर्मयुक्त व सम्मानित होना चाहिए।

फूल खिलते हैं बहुत, मगर कुछ ही महकते हैं
तारे उगते हैं, बहुत मगर कुछ ही चमकते हैं।
कक्षाओं में पढ़ाते हैं बहुत, इस वसुन्धरा पर
असाधारण व्यक्तित्व के धनी पण्डित जैसे विरले ही होते हैं।

शुभकामना

— **इन्द्रकुमार जैन,** छिन्दवाड़ा

आदरणीय पण्डित कैलाशचन्दजी साहब बुलन्दशहरवालों ने पूज्य गुरुदेव कानजीस्वामी का प्रचार-प्रसार जगह-जगह देहातों में भी - छिन्दवाड़ा, उभेगांव आदि-आदि देहातों में रह-रहकर एक-एक माह कक्षायें लगाकर प्रचार-प्रसार किया है किन्तु अस्वस्थ होने के कारण पण्डितजी जाने-आने में असमर्थ हैं। हम गुरु महाराज से यही प्रार्थना करते हैं कि उनकी दीर्घ आयु की कामना करते हैं, तथा धर्मप्रचार होता रहे।

प्रभावना के धनी : पण्डितजी

— सुषमा जैन, शहडोल

पण्डित कैलाशचन्द्र जैन के प्रति प्रेरणास्पद संस्मरण आज मेरे जीवन हृदय पटल पर उतरा है। जब मैं 12 वर्ष की थी, तब मेरे घर करेली में पण्डितजी दो माह रहे थे, उन्हीं का दिया हुआ तत्त्वज्ञान आज भी याद है। जब स्कूल से आये तो पूछते थे, बैग कौन लाया ? चाय किसने पी ? खाना कौन बनाता है ? यदि भूल से हमने कह दिया – चाय मैंने पी, तो डण्डा ठोककर, पण्डितजी डांटते थे और कहते थे – मैं जीवद्रव्य मात्र जाननेवाला हूँ, चाय का क्षेय से क्षेत्रान्तर हुआ, चाय अजीवद्रव्य है – ऐसा भेदज्ञान तत्त्व स्वभाव का आज भी याद है।

पण्डित धन्नालालजी, पण्डित कपूरचन्दजी करेली, और पण्डित कैलाशचन्दजी बचपन के शिक्षा गुरु हैं। मेरे यहाँ तो पिताजी ने पण्डितजी के सैकड़ों लघु जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, सातवाँ भाग छपवाये, मेरी शादी में, सगाई में सातवाँ भाग बाँटे थे। आज हमारे यहाँ शहडोल में उसी की क्लास चलती है। उनका दिया हुआ बचपन का ज्ञान, मेरी जीवन की कुंजी है, कोई भी कार्य करती हूँ, वही ज्ञान मेरे ज्ञान का ज्ञेय बनता है। **पण्डितजी जो प्रभावना के धनी हैं, मेरा सहज जीवन उन्हीं के द्वारा बना। पण्डितजी को मैं शत-शत बार प्रणाम।** जो कार्य आप कर रहे हैं, उस कार्य की अनुमोदना करती हूँ।

आपकी वाणी सदैव कानों में गूँजती है

— श्रीमती स्नेहलता मानोरिया,
अशोकनगर (मध्यप्रदेश)

मेरे अध्ययन को सही दिशा पर लाने का श्रेय, परम विद्वान, श्रद्धेय, परोपकारी पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी जैन को जाता है। अशोकनगर में रहकर उन्होंने हमारी, जिनमार्ग पर पकड़ मजबूत की। बाद में पत्राचार द्वारा भी उन्होंने सदैव ज्ञानदर्शन उपयोगमयी आत्मा के चिन्तन की प्रेरणा दी। आपके पत्रों में सांसारिक बातों की चर्चा होती ही नहीं थी। आपका रोम-रोम जैनदर्शन, जैन तत्त्व के प्रचार-प्रसार को समर्पित रहा। अपनी इस विद्वता एवं उपलब्धि को आप श्री कानजीस्वामी की देन मानते हैं। उन्हीं के शब्दों में – **'इस पंचम काल में (70 वर्षों में : दिनांक 30.7.91 का पत्र) पूज्य श्री कानजीस्वामीजी का जन्म अचंभा था, जिन्होंने पंचम काल को चौथा काल एवं भरतक्षेत्र को विदेहक्षेत्र बनाया।'**

स्वयं विद्वान होते हुए भी, अन्य विद्वानों के प्रति आपमें अत्यन्त आदरभाव एवं विनम्रता है। वे कोई भी तत्त्व सम्बन्धी शंका समाधान के लिये सदैव तत्पर रहते हैं। वे लिखते हैं – 'कोई भी प्रश्न हो लिखिये, (मैं) तुरन्त उत्तर दूँगा।' ऐसे जिन आराधना के उपासक श्रद्धेय पण्डितजी की, मैं एवं हमारा अशोकनगर समाज सदैव कृतज्ञ रहेगा। आपने अशोकनगर (मध्यप्रदेश) रहते हुए हम मुमुक्षुओं को परम उपकारी जिन सिद्धान्तों को सही ढंग से समझाया। वीतरागता से परिपक्व आपकी ओजस्वी वाणी मेरे कानों में सदैव गूँजती है।

आप लिखते हैं : 'तुम भगवान हो, अकृत्रिम चैत्यालय हो; शरीर नहीं हो, बस इतनी सी बात है।' प्रभावना एवं हौसला बढ़ानेवाले परम उपकारी विद्वान शिक्षक ही इस तरह की बात लिख सकते हैं। आपकी शिक्षण शैली विलक्षण एवं अनूठी रही। जब तक बात शिष्य के अन्दर पूरी तरह बैठ न जाये, आप विभिन्न माध्यमों एवं दृष्टान्तों से अनवरत प्रयासरत रहते हैं। आपका एकमात्र ध्येय मुमुक्षुओं को सुशिक्षित करना है ताकि वे अपना आत्मकल्याण कर सकें।

डगमगाते बच्चों की ऊँगली पकड़कर, उन्हें भयमुक्त कर, सही ढंग से पग बढ़वाना, एक महती कार्य है, क्योंकि फिर तो बालक चल पड़ता है, दौड़ पड़ता है... और आपने यही किया। आप सरीखे विद्वान पण्डित ही बेजान भूमि को उपजाऊ बनाकर, उसमें सत् बीजों का रोपण करते हैं। आपका सम्पूर्ण जीवन इसी कार्य को समर्पित रहा, तभी तो चहुँओर फसल

लहलहा रही है। आपमें आज भी असीम क्षमता है। विश्वास है आप शीघ्र स्वस्थ होकर अपनी ऊर्जा से बालबुद्धि को सन्मार्ग में लगायेंगे।

आपको शत शत नमन!

करुणा से ओतप्रोत हृदय

— श्रीमती निर्मला गोइल

द्वारा- डा. आर. के. गोइल, महावीर कोलोनी, अशोकनगर

आदरणीय पण्डितश्री कैलाशचन्दजी का हृदय सदैव करुणा से ओतप्रोत रहा है। आपकी सदैव ही यह पवित्र भावना रही है कि सभी जीव वस्तु को समझें, जाने और अपना कल्याण करें।

अशोकनगर के जीवों के भाग्य से 6-7 बार अशोकनगर आये और दीर्घ प्रवास पर यहाँ रुके भी। वे अशोकनगर जब आते थे तो अक्सर मेरे पिताजी श्री सुमेरचंदजी के घर पर ही रुकते थे, मुझे 2-3 बार उनके सान्निध्य से तत्त्व को जानने-सीखने का अवसर मिला और तभी से मेरी तत्त्व के प्रति रुचि लगी - जागृत हुई। आपने बहुत सरल और सीधी शैली से जैन आगम के गूढ़ रहस्यों को, जिनको पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा आलोकित किया गया, उनको जैन सिद्धांत प्रवेश रत्नमाला और मोक्षमार्गप्रकाशक तथा छहढाला आदि ग्रन्थ के आधार से द्रव्य-गुण-पर्याय आदि के सिद्धान्तों का, सात तत्त्व का स्वरूप और उनके सम्बन्ध में जीव की भूल के, बहुत सरल शैली से समझाया है जो आज भी याद है।

'अमूर्तिक प्रदेशों का पुंज, प्रसिद्ध ज्ञानादि गुणों का धारी, अनादि-निधन वस्तु आप है' तथा 'मूर्तिक पुद्‌गलद्रव्यों का पिण्ड, प्रसिद्ध ज्ञानादि गुणों से रहित, जिनका नवीन संयोग हुआ है - ऐसे शरीरादि पर हैं।'

आपकी कक्षा सुबह 5 बजे से चलती थी। आपकी कक्षा में सारा जोर भेदज्ञान पर वर्तता था। भेदज्ञान की ही प्रमुखता से आप छहढाला के प्रसिद्ध छन्दों को बोल के माध्यम से समझाते थे - यथा: 'ताको न जान विपरीत मान करि, करे देह में निज पिछान॥'

मैं कैलाशचन्द्र आदि चार हैं, हम सुबह उठते हैं, नहाते-धोते, खाते-पीते हैं; इस प्रकार यह जीव, प्राप्त शरीर के संयोग में ही स्वरूपता स्थापित करके शरीर को और शरीर की सब क्रियाओं को अपना मानता है। वे बड़ी करुणा और कड़क शैली से बार-बार पूछ कर 'ताको न

जान' किसको न जान-आदि आदि अनेक प्रकार से पूरी तत्त्व की बात सरलता से हृदय में प्रवेश करा देते थे। आपका एक प्रिय छन्द था 'चेतन को है उपयोग रूप, चिनमूरत विनमूरत अनूप'

मुझे याद है - वे कहते थे कि जब तक शरीर को अपना मानते रहोगे, तब तक चार गतियों में घूम-घूम कर डंडे खाना पड़ेंगे। तुम भगवान हो; शरीर नहीं - बस इतनी बात है। अपने को भूला है, यही भूल है। इस भूल के निकालने से ही संसार से निकलना हो सकेगा। ऐसे परम उपकारी पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी और उनके द्वारा उद्घाटित जिन आगम के रहस्यों को तरलता और सरलता से आत्मसात करा देनेवाले पण्डितजी श्री कैलाशचन्द्रजी का उपकार भी अविस्मरणीय है। उनको मेरा सादर शत शत नमन है।

तत्त्व-अभ्यास के धनी व्यक्तित्व

— **सुरेशचन्द जैन (नोटरी) एडवोकेट**
निवासी ग्यारसपुर, जिला विदिशा
— **डॉ. विद्यानंद जैन,** विदिशा

पूज्य गुरुदेव कानजीस्वामी के सानिध्य को पाकर श्रद्धेय पण्डित कैलाशचन्द्रजी, बुलन्दशहर ऐसे तत्त्वज्ञानी जिज्ञासु हुए कि उन्होंने अपना जीवन तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में समर्पित कर दिया। जिसकी पुण्यपरिणति, सम्प्रति 'मङ्गलायतन' के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज पर महिमावंत हो रही है। उन्होंने सम्पूर्ण देश में अपने सत्प्रयासों से सुधिजनों को जो तत्त्वज्ञान कराया, वह भी आज हमें 'जिनागमसार' जैसी अपूर्व धरोहर के रूप में विद्यमान है।

विगत बीसवीं सदी के आठवें दशक के उत्तरार्द्ध में हम ग्राम ग्यारसपुर, जिला विदिशा मध्यप्रदेश की महान-महान पुण्योदय से सौभाग्य उदित हुआ, कि आदरणीय पण्डितजी साहब, बिजौलियां से विदिशा होकर ग्यारसपुर पधारे। तब मात्र ग्यारसपुर के 15 तारणपंथी जैन परिवारों की तत्त्वरसिकता एवं आध्यात्मिक अभिरुचि की पड़ताल कर उन्होंने ग्यारसपुर ठहरने का अल्पकालीन कार्यक्रम बनाकर, 'जिनेन्द्र कथित वस्तु व्यवस्था' का शिक्षण देना क्रमवार प्रारम्भ किया। ग्यारसपुर वासियों को तो वे देवदूत सिद्ध हुए। फलत: समाज अपनी दैनिकोपार्जन की गतिविधियों को गौण कर, पण्डितजी साहब की निरन्तर तीन शिक्षण कक्षाओं में समूहरूप से उपस्थित होने लगे। हमें ज्ञात है कि तत्त्वज्ञान का ऐसा शिक्षण

चैत्यालय जी के इतिहास में अपूर्व था। फिर तो इन कक्षाओं की सुगन्धि रिश्तेदारों और समीप के ग्राम औलिंजा, मानौरा, हैदरगढ़ तथा नगर विदिशा, बासौदा के साधर्मी बन्धुओं में भी पहुँची, बेटियाँ भी अपने बच्चों के साथ अवकाश में ग्यारसपुर आकर तत्त्वज्ञान शिक्षण का लाभ लेने लगी।

यहाँ यह भी अति उल्लेखनीय है कि जितने अभिरुचि से सभी वर्ग के साधर्मी पण्डितजी साहब के शिक्षण का लाभ ले रहे थे, उतनी ही करुणा के साथ पण्डितजी साहब भी अपने तत्त्वज्ञान से प्रकाशित जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला के क्रमश: 1 से 8 भागों को देहरादून मुमुक्षु मण्डल से डाक द्वारा मंगाते और शिक्षित करते जाते। आज भी वे भाग, ज्ञान की धरोहर घर-घर में समादरणीय है। इस शिक्षण का सुफल यह भी हुआ कि तभी से समाज में यह सिलसिला चल पड़ा कि विवाह, प्रभावना अथवा मृत्युभोज आदि के प्रसंगों पर ये तत्त्वज्ञान सम्बन्धी भाग ही साधर्मीजनों में वितरित किये जाने लगे। इस शिक्षण क्रम में तथा समागत त्यागीवृत्तियों के सम्मान में भी यही भाग वितरित किये जाते हैं। इस शिक्षण क्रम में पण्डितजी ने आचार्य कुन्दकुन्दस्वामी विरचित ग्रन्थराज समयसारजी, प्रवचनसारजी, आचार्यकप पण्डित टोडरमलजी द्वारा विरचित मोक्षमार्गप्रकाशक, पण्डित दौलतराम जी विरचित छहढाला तथा तारणस्वामी विरचित पण्डितपूजाजी ग्रन्थों के माध्यम से निश्चय-व्यवहार का समन्वय करके, एक-एक कथन का निरूपण वात्सल्यपूर्वक आत्मसात कराया है।

पण्डितजी साहब की साधारण जीवन शैली से हम अभावग्रस्त परिवार प्रभावित हुए कि उनका निरभिमानी जीवन, दाल-दलिया-रोटी का भोजन, छोटे-छोटे बच्चों के साथ बच्चे बनकर अपार स्नेह देनेवाले पण्डितजी, अपने अभिन्न साथी 'डण्डे' के साथ चश्मा लगाये हर साधर्मी के घर पर 'जय जिनेन्द्र' की टेर लगाकर सभी को आल्हादित कर देने की असीम क्षमता विद्यमान दृष्टिगोचर हुई। पण्डितजी की इस असीम कृपा के कारण ही तारण-तरण जैन समाज ग्यारसपुर आदि के साधर्मी देहरादून के प्रभावनामयी स्वाध्याय भवन के उद्घाटन समारोह में उपस्थित होकर पण्डितजी के विराट व्यक्तित्व और कर्तृत्व को देख आनन्दित हुए। इसी के अनन्तर सकल तारण-तरण समाज को असीम प्रसन्नता तो तीर्थधाम मङ्गलायतन के प्रभावनामयी पञ्च कल्याणक महोत्सव में उपस्थित होकर साक्षात्कार करने पर ग्यारसपुर एवं विदिशा, बासौदा के सभी जिज्ञासुओं को चरण स्पर्श के बाद संबोधित करते हुए पण्डिजी ने आशीर्वाद दिया 'मुझे मत देखो, अपने अपने भीतर देखनेवाले को देखो' क्या तुम भूल गये कि

मङ्गल समर्पण

'स्व में बस, पर से खश, आयेगा आत्मा में अतीन्द्रिय रस, इतना करो बस' कहकर पूछने लगे कि तुम्हारा सबका स्वाध्याय तो पूर्ववत चल रहा होगा....... आदि।

आज हम सभी साधर्मीजन पण्डितजी के सान्निध्य में बिताये लगभग 8वर्षों की मधुर स्मृतियाँ एवं प्रेरणायें हमारे जीवन का पाथेय बन गई है। उसी की सुफल है कि आज ग्यारसपुर तारण तरण दिगम्बर चैत्यालय तिमंजिला होकर अपने विशाल स्वाध्याय कक्ष में जिनोपदेशों से अनुगुंजित होता रहता है। यह सब तत्त्व अभ्यास कराने के धुनी व्यक्तित्व के कठोर अनुशासन एवं व्यक्तित्व का प्रतिफलन है। आदरणीय पण्डित साहब ख्याति-लाभ-पूजा से दूर, तत्त्वज्ञान के निशंक एवं उत्कृष्ट शिक्षण प्रदाता है। उनके शिक्षण क्रम में लगता था कि गुरुदेव कानजीस्वामी की तरफ से ही जिनवाणी का मर्म खोल रहे हैं।

हमने उनकी इस अल्प सुसंगति में पाया कि वे चंदा-फंड-उगाई एवं आयोजनाओं से अति दूर, मात्र तत्त्वज्ञान के पथ प्रदर्शक के रूप में विख्यात हुए। आज ग्यारसपुर समाज उनके इन उपकारों को विरासत के रूप में सहेजकर कृतज्ञतापूर्वक तत्त्वज्ञान की अदृश्य पूंजी द्वारा स्वाध्याय-सेवा एवं धर्म प्रभावना के प्रभावनामयी कार्यों के माध्यम से सपरिवार सानंद है। आज प्रेषकगणों का स्वाध्याय क्रम जो भी जिस स्थिति में है, वह पूज्य पण्डितजी से अर्जित तत्त्वाभ्यास का ही सुपरिणाम है।

पुनश्च, हमारी मनोकामना है कि आदरणीय पण्डितजी स्वस्थ एवं दीर्घ जीवी होकर अपनी प्रेरणाओं से स्थापित 'मङ्गलायतन' द्वारा सभी का मङ्गल करते रहें, ऐसी मङ्गलभावना है।

आभार : पण्डित कैलाशचन्द्रजी के प्रति

— **मदनलाल पालीवाल,** अशोकनगर

अगस्त माह की मङ्गलायतन पत्रिका से विदित हुआ कि मङ्गलायतन टाइम्स प्रकाशन समिति ने पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी जैन बुलन्दशहरवालों के जीवन पर आधारित एक संस्मरण विशेषांक प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। समाचार पढ़कर यहाँ के समस्त मुमुक्षु समाज में अत्यन्त खुशी एवं आनन्द की लहर छा गयी।

पण्डितजी लगभग सन् 1962 से पंद्रह वर्ष तक अशोकनगर से जुड़े रहे, वे प्रतिवर्ष अशोकनगर आते थे, और एक-एक माह और दो-दो माह रहकर हमें गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित तत्त्व सम्बन्धी प्रवचन करते तथा कक्षा के माध्यम से पढ़ाते भी थे। उनकी पढ़ाने की शैली भी बड़ी अद्भुत थी। जब तक विषय को हमें मुखाग्र न करवा देते, तब तक बार-बार दोहराकर-पढ़ाकर याद करवा देते थे।

तत्सम्बन्धी उन्होंने देहरादून से जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला, भाग-1 से भाग-7 तक छपवाई थी। एक बार तो पण्डितजी अपने साथ पण्डित श्री नेमचन्दजी को भी देहरादून से लाये थे, वे भी एक माह रहकर दो टाइम क्लास लेते थे। **पण्डितजी ने अशोकनगर समाज पर जो उपकार किया है, वह अविस्मरणीय ही नहीं, अपितु बेजोड़ भी है।**

अभी भी यहाँ की मुमुक्षु समाज पण्डितजी को याद करती है। यहाँ दो-दो माह निस्वार्थभाव से रहकर हमें जो तत्त्वबोध दिया है, अशोकनगर समाज अत्यन्त लाभान्वित हुई है, उपकृत हुई है।

मङ्गलायतन तीर्थ, पण्डितजी की ही देन है, जो आज पूरे भारत में ही नहीं, अपितु देश-विदेश में भी सुविख्यात है।

पण्डितजी के इस उपकार को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

हम सभी पण्डितजी की दीर्घायु की मङ्गल कामना करते हुए, उनके स्वस्थ रहने की एवं उज्ज्वल भविष्य की भावना भाते हैं।

मुमुक्षु समाज के सुदृढ़ आधार

— प्रेमचन्द जैन

अध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल, अजमेर

आदरणीय पण्डित कैलाशचन्दजी जैन, अजमेरनगर में दशलाक्षणिक पर्व व अष्टाह्निकापर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु कई बार पधारे हैं तथा अपने ओजपूर्ण व्यक्तित्व, वात्सल्य व तत्त्वपूर्ण भाषा से मुमुक्षु समाज का सुदृढ़ गढ़ खड़ा किया है। वे यहाँ के मुमुक्षु समाज को सुदृढ़ आधार देने को प्रमुख स्तम्भ व प्रेरणा स्रोत रहे हैं।

उस समय मुमुक्षु मण्डल का निजी स्थान नहीं होने से पंचायती गोधों के धड़े की नसियांजी में शास्त्रसभा एवं प्रवचन होते थे, जहाँ पर पंचायत की गतिविधियों के फलस्वरूप, निहालचन्द्रजी सोगानी जो कि गुरुदेव के अनन्य भक्त, पक्के स्वाध्यायी एवं सम्यक्त्वी थे, उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनूपबाई सोगानीजी भी निहालभाई की तरह पक्की स्वाध्यायी एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की परम शिष्या थी, जो सेठ भागचन्दजी सोनी की नसियांजी (सिद्धकूट चैत्यालय) के सामने स्वयं के सोगानी भवन में निवास करती थी। श्रीमान पण्डित कैलाशचन्दजी की प्रेरणा से सोगानीभवन का भूतल भाग जो करीब 500 वर्ग गज है, को स्वाध्याय के लिये वर्ष 1982-83 में उनके द्वारा मुमुक्षु समाज को समर्पित किया। तत्कालीन मुमुक्षुओं में से श्रीमान् प्रेमचन्दजी जैन, महावीर टेन्ट हाऊस, केसरगंज, अजमेर जो कि मुमुक्षु मण्डल अजमेर के तत्कालीन अध्यक्ष थे, वे आज 80 वर्ष की आयु में भी अध्यक्ष पद पर पदस्थापित हैं व पूर्णतया सक्रिय हैं, वे आज भी नियमित दो किलोमीटर दूर से स्वाध्याय हेतु आते हैं। उन्होंने पण्डितजी व श्रीमती अनूपबाई को यह आश्वासन दिया था कि जब तक यह शरीर रहेगा व अजमेर में रहूँगा, तब तक नियमितरूप से स्वाध्याय में आता रहूँगा व अन्य को भी प्रेरित करता रहूँगा। सोगानीजी के सुपुत्रों द्वारा भी उनके द्वारा प्रदत्त स्थान पर नियमित स्वाध्याय की गतिविधियाँ देखकर इस भवन को स्वाध्याय हेतु जीर्णोद्धार कर, आधुनिक रूप देने की भावना व्यक्त की है। इसी के फलस्वरूप उन्होंने उनके द्वारा प्रकाशित 'स्वानुभूति-प्रकाश' पत्रिका के सितम्बर 2009 के अंक में इस भवन का उल्लेख किया है।

श्रीमान् पण्डित कैलाशचन्दजी की प्रेरणा का ही सुफल है कि उनकी प्रेरणा से उपलब्ध कराये गये स्थान पर आज भी अजमेर मुमुक्षु मण्डल का स्वाध्याय नियमितरूप से चल रहा है एवं अखिल भारतीय युवा फैडरेशन शाखा, अजमेर का भी कार्यालय इसी भवन प्रांगण में है। जहाँ से युवा प्रकोष्ठ की भी नियमित गतिविधियाँ चल रही हैं। हम पण्डितजी के जन्म-शताब्दी पर इस उपकार के लिए उनके श्री चरणों में नतमस्तक हैं।

संस्मरण

— मनोजकुमार जैन
शाहदरा, दिल्ली

पण्डित श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन,

सम्पादक मङ्गलायतन,

सादर जयजिनेन्द्र !

मङ्गलायतन पत्रिका सितम्बर 2011 के अनुसार मेरे नानाजी आदरणीय पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी जैन के सम्बन्धी एक विशेषांक के बारे में जानकारी मिली।

आदरणीय पण्डितजी साहब यहाँ दिल्ली में अनेकों बार पधारे, शिक्षण-शिविर लगाये, प्रवचन किये तथा पाठशालाएं चलाईं। गांधीनगर दिल्ली जैन मन्दिर गली में कई बार शिविर लगाए और पाठशालाएँ चलायी, जिसका प्रबन्ध श्रीमती कमलादेवी धर्मपत्नी श्री कृपारामजी जैन के द्वारा कराया जाता था।

आप शाहदरे में भी अनेकों बार पधारे और दिल्ली मुमुक्षु मण्डल के द्वारा प्रथम श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जिन मन्दिर बनाया गया। मन्दिर भवन बनने से पूर्व उसी जगह पर 1982 के आस-पास प्रथम शिविर आदरणीय पण्डितजी द्वारा 15 फरवरी से 27 फरवरी तक लगाया गया। दूसरा शिविर नये भवन में 19 अप्रैल से 30 अप्रैल 1992 तक श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर ट्रस्ट शिवाजी पार्क शाहदरे में होते रहे हैं, जिनमें विशेषरूप से भाई नेमचन्दजी जैन देहरादून तथा दिनेश जैन कैलाशनगर और दिल्ली के आस-पास के मुमुक्षु भाई-बहन शिविर का धर्म लाभ लेते रहे हैं।

पण्डितजी साहब, जब श्री कुन्दकुन्द-कहान दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर द्वारा बनाया गया तथा श्री शान्तिनाथ भगवान जिन मन्दिर, जिसके पञ्च कल्याणक के अवसर पर जन्म-कल्याणक के दिन पधारे थे। सभी मुमुक्षु उनके दर्शन पाकर अति प्रसन्न हुए थे।

हम पण्डितजी के प्रति हार्दिक श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए उनके स्वस्थ एवं मङ्गल जीवन की कामना करते हैं।

परम आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द्रजी का मेरे जीवन में योग

— सी. एस. जैन
प्रधान, मुमुक्षु मण्डल, देहरादून

आदरणीय पण्डितजी श्री कैलाशचन्द्र जैन, बुलन्दशहरवाले के नाम से जाने जाते हैं। मैं जब इनके सम्पर्क में आया तो मैंने इनमें एक दृढ़ प्रतिज्ञ, पूर्ण निष्ठावान, अध्यात्म सराबोर, सरल व्यक्तित्व, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति पूर्ण समर्पित, एक स्पष्टवादी, कड़क शिक्षक, उत्तम कार्यों को समापन कराने में अति निपुण, सभी को साथ लेकर चलने की भावनावाले व्यक्ति की छवि के दर्शन किये। अति सरल उदाहरण द्वारा गूढ़ विषयों को समझाना उनकी विशेषता है।

यद्यपि पण्डितजी के विषय में मैं 1985 में ही अपने रुड़की उपमंडल दूरसंचार के नियुक्तिकाल में आदरणीय भाई श्री कान्तिप्रसादजी, शिवाजी पार्क दिल्लीवालों के माध्यम से कुछ जानकारी प्राप्त किए हुए था, क्योंकि यदाकदा इनका जिक्र अवश्य आता था। यहाँ यह लिखना अप्रासंगिक न होगा कि यह एक संयोगमात्र था कि श्री कान्तिप्रसादजी का सान्निध्य मुझे रुड़की प्रवास के दौरान मिला और उनकी स्नेहप्रियता व लगन के कारण ही मैं गुरुदेवश्री का साहित्य व मोक्षमार्गप्रकाशक आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय नित्य करने लगा। उन्होंने बहुत उत्साहित किया, जिसके फलस्वरूप मैं भी मुमुक्षु की कतार में खड़ा हो सका।

मैं पण्डितजी के सम्पर्क में व्यक्तिगतरूप से दिसम्बर 1990 में रुड़की से देहरादून स्थानान्तरण के पश्चात् आया। आप श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमन्दिर में (सरनीमल दिगम्बर जैनमन्दिर के पास) तीन समय स्वाध्याय करा रहे थे। मैंने आपकी स्वाध्याय कक्षाओं में दो समय जाना प्रारम्भ किया तो वास्तव में पाया कि जैसा आपके बारे में सुना था, आपका ज्ञान उससे बहुत अधिक है। ऐसा मैंने प्रथम बार ही देखा कि प्रत्येक श्रोता से वे सम्पर्क करते थे और उसको सभा को सम्बोधन के लिए अपने बराबर में खड़ा करके उससे पूरा विषय दोहराने के लिए प्रेरित करते थे। इसके माध्यम से श्रोताओं में आत्मविश्वास बढ़ता था व विषय के बारे में स्पष्टता आ जाती थी। पण्डितजी की स्वाध्याय सभा में मुझे आपके द्वारा रचित 'जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला' के रूप में भाग 1 से 8 तक को पढ़ने-सुनने का अवसर मिला, मैं देखकर गद्‌गद्‌ हो गया कि इतने गहन अध्यात्म के सिद्धान्तों को बहुत सरल प्रश्नोत्तर के माध्यम से हम जैसे अल्पज्ञों व जिज्ञासु को अध्यात्म की गहराईयों में पहुँचाने की कला पण्डितजी के पास ही है, ऐसा विश्वास दृढ़ हो गया। अन्य किन्हीं ग्रन्थों में अध्यात्म का इस रूप में प्रस्तुतिकरण मेरे ज्ञान में अन्यत्र कहीं नहीं आया।

मङ्गल समर्पण

आपकी व्याख्यान शैली इतनी गजब है कि नये श्रोता भी सरलता से समझ सकता है कि जैनदर्शन क्या है ? जैनदर्शन में क्या विशेषता है ? नर से नारायण बनाने की इतनी सरल व्याख्या देखकर, पढ़कर व सुनकर मैंने जो प्राप्त किया, उसको शब्दों में नहीं लिख सकता। पण्डितजी नये श्रोताओं को देखकर ही विषय चुनते थे, ताकि उसमें रुचि बढ़े। जो श्रोता सम्पर्क में आया, वह भविष्य के लिए पूर्ण समर्पित हो जाता था, वे नये श्रोता को बहुत उत्साहित करते थे। यही कारण है कि उत्तर भारत के इस भाग में इतने स्वाध्याय केन्द्र बने। मेरा जीवन इस अध्यात्म शैली को पाकर उसके द्वारा जैनदर्शन के रहस्यों को जानकर एकदम परिवर्तित हो गया। आपकी प्रश्नोत्तर शैली इतनी सरल व स्वाभाविक है, जिसकी जितनी प्रशंसा की जाये, कम है। उस शैली का अधिक निरूपण इस लेख में तो नहीं हो सकता, परन्तु जिन्होंने यह शैली नहीं देखी या सुनी, उन जिज्ञासु के लिए पण्डितजी रचित 'जैन सिद्धान्त प्रवेश रत्नमाला, भाग-6' में निश्चय-व्यवहार सम्बन्धित दस प्रश्नोत्तर में से मैं यहाँ एक प्रश्न का उल्लेख कर रहा हूँ। इन प्रश्नोत्तर में पण्डितजी ने आचार्यकल्प पण्डित टोडरमल द्वारा रचित मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ में से उभयभाषी मिथ्यादृष्टि की मान्यता को समझाया है, जरा ध्यान दें व प्रश्नोत्तरशैली को जानें —

प्रश्न : आप कहते हो कि 'मैं पण्डित कैलाशचन्द्र जैन हूँ - ऐसे व्यवहार के श्रद्धान से मिथ्यात्व होता है, इसलिए उसका त्याग करना तथा पण्डित कैलाशचन्द्र जैन नामरूप पुद्‌गलद्रव्यों से सर्वथा भिन्न (ज्ञान-दर्शन आदि) स्वाभावों से अभिन्न (मैं) स्वयंसिद्ध ज्ञायक भगवान आत्मा हूँ' - ऐसे निश्चयनय के श्रद्धान से सम्यक्त्व होता है, इसलिए उसका श्रद्धान करना, यदि ऐसा है तो जिनमार्ग में तो दोनों नयों का ग्रहण कहा है, सो कैसे ?

उत्तर : जिनमार्ग में कहीं तो पण्डित कैलाशचन्द्र जैन नामरूप पुद्‌गलद्रव्यों से सर्वथा भिन्न, स्वाभावों से अभिन्न, स्वयंसिद्ध ज्ञायक भगवान आत्मा हूँ - ऐसे निश्चय की मुख्यता लिए व्याख्यान है, उसे तो सत्यार्थ जानकर 'यह ऐसी ही है' ऐसा जानना, तथा कहीं मैं पण्डित कैलाशचन्द्र जैन हूँ - ऐसे व्यवहारनय की मुख्यता लिए कथन है, उसे 'ऐसे है नहीं, ऐसे है नहीं' निमित्तादि (शरीर आदि) की अपेक्षा उपचार किया है - ऐसा जानना। मैं पण्डित कैलाशचन्द्र जैन नहीं हूँ, मैं तो पण्डित कैलाशचन्द्र जैन नामरूप पुद्‌गलद्रव्यों से सर्वथा भिन्न (ज्ञान-दर्शन आदि) स्वभावों से अभिन्न, स्वयंसिद्ध ज्ञायक भगवान आत्मा हूँ, इस प्रकार जानने का नाम ही निश्चय-व्यवहार दोनों नयों का ग्रहण है।

(पाठक, जहाँ पण्डितजी ने अपना नाम लिखा है, वहाँ अपना नाम लगाकर पढ़ें।)

जरा ध्यान दे तो एक प्रश्नोत्तर में ही निश्चय-व्यवहार की समझ में क्या शेष रहता है ?

पण्डितजी ने इस प्रकरण में दस प्रश्नोत्तर में इस प्रकार समझाया है कि इस निश्चयनय-व्यवहारनय को समझने में किसी को कोई संशय न रहे। स्वाध्याय कक्षाओं में पण्डितजी एक-एक जिज्ञासु श्रोता से इन प्रश्नोत्तर को सुनना चाहते थे, याद कराना चाहते थे, व बार-बार दोहरवाकर विषय में पारंगत बनाना चाहते थे। यह उनकी गजब की कथनशैली का ही योग है कि देहरादून मुमुक्षुओं में अधिकतर को बहुत से प्रश्नोत्तर पूरे-पूरे याद थे। मेरे जीवन में भी सत्य को समझने में पण्डितजी की इस शैली का बड़ा भारी योग है।

इसी प्रकार अध्यात्म के जटिल विषयों को पण्डितजी ने चार्टों के माध्यम से (जिन्हें वे नक्शा कहते थे) इतना सरल किया कि किसी को समझने में कठिनाई न हो। प्रत्येक सामान्यजन जो धर्म समझने की जरा भी रुचि रखता हो, उसे निज आत्मा की समझ आ जाये। आपने श्री समयसार, प्रवचनसार आदि महान ग्रन्थों के विषय को भी प्रश्नोत्तर व चार्ट के माध्यम से सरलरूप में समझा दिया है, परन्तु समझे वही जो रुचिपूर्वक पढ़े। पण्डित दौलतराम कृत छहढाला की दूसरी ढाल में कुछ पदों पर आपने चार्टमय एक पूर्ण पुस्तक की रचना की, जिसमें लगभग 25 चार्टों के माध्यम से गृहीत-अगृहीतमिथ्यात्व को समझा कर उसे दूर करने के उपाय पर चर्चा की गयी। इस पुस्तक का देहरादून मुमुक्षुओं को बहुत बार स्वाध्याय कराया तथा आदेश किया कि 'चेतन को है उपयोगरूप बिनमूरत चिनमूरत अनूप' पद का पाठ चार्ट के माध्यम से नित्य करे तो हमारा उपकार होगा। इस पुस्तक का एक चार्ट, इस चार्ट शैली को अवलोकनार्थ प्रस्तुत करते हुए मुझे गर्व का अनुभव होता है कि किस प्रकार एक चार्ट से आत्मस्वरूप का श्रद्धान हो सकता है।

प्रश्न 1- चेतन को है उपयोगरूप, अर्थात् मैं ज्ञान-दर्शन उपयोगमयी जीवतत्त्व हूँ - इस वाक्य पर जीवतत्त्व सम्बन्धी जीव की भूल-अभूल का आठ बोलों द्वारा स्पष्टीकरण।

यह जीव, चारों गतियों में घूमते हुए निगोद में क्यों चला जाता है ?

उत्तर -

ताको न जान	विपरीत मान कर	करे देह में निज पहचान	इसका फल
मैं ज्ञान-दर्शन उपयोगमयी जीवतत्त्व हूँ, इस बात को नहीं जानकर।	कैलाशचन्द्र नामरूप अनन्त पुद्गलद्रव्यों में अपनापन मान कर।	कैलाशचन्द्र नामरूप पुद्गलद्रव्यों से ही अपनी पहचान करता है।	चारों गतियों में घूमकर निगोद है।

मुझे तो निगोद नहीं जाना है, मोक्ष जाना है तो क्या करूँ – तो इस बात को जान। किस बात को ?

इस बात को जान	अविपरीत मान कर	करे आत्म में निज पहचान	इसका फल
मैं ज्ञान–दर्शन उपयोगमयी जीवतत्त्व हूँ, इस बात को जान।	कैलाशचन्द्र नामरूप पुद्गलद्रव्यों में सर्वथा भिन्न ज्ञान–दर्शन उपयोगमयी जीवतत्त्व में अपनापन मान कर।	ज्ञान–दर्शन उपयोगमयी निज जीवतत्त्व से ही अपनी पहचान करता है।	तुरन्त संवर, निर्जरा की प्राप्ति होकर मोक्ष है।

उपरोक्त चार्ट के आठ बोलों से स्पष्ट ज्ञान होता है कि मैं कौन हूँ, मेरी भूल क्या है, व भूल दूर करने का उपाय क्या है ? यह अध्यात्म का सीधा अन्तरंग में उतरने का सरलतम माध्यम है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पण्डितजी की ये शैलियाँ अद्भुत रोचक, सरल व हृदयांगामी है। पण्डितजी स्वाध्याय कराते हुए सदैव कहते थे कि **'मैं तो पूज्य गुरुदेव का सेवक हूँ, उनका ही माल मैं आपको परोस रहा हूँ; इसमें मेरा कुछ नहीं है।'** इतना बहुमान पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति उनको है। अपने स्वाध्यायसभा में अनगिनत बार पूज्य गुरुदेवश्री का स्मरण करते और बहुत मुदित होते थे। पूज्य गुरुदेवश्री की वाणी के प्रचार–प्रसार में आपका अमूल्य योगदान है, जिसका उदाहरण देहरादून मुमुक्षु मण्डल, मङ्गलायतन आदि संस्थाएँ हैं।

मैं 1990 में पण्डितश्री कैलाशचन्द्रजी के सम्पर्क में आया था परन्तु कुछ ही समय पश्चात् पण्डितजी को दिल का आपरेशन कराना पड़ा, जिस कारण उनके अधिक बोलने पर चिकित्सकों की राय से, प्रतिबन्ध लगने से उनकी स्वाध्यायसभा सीमित हो गयी। देहरादून आना–जाना भी अधिक अन्तराल से होने लगा परन्तु पण्डितजी का पुरुषार्थ अवचनीय रहा, उन्होंने इसी समय में एक अद्भूत मात्र 78 पृष्ठ की पुस्तक की रचना कर डाली, जिसका नाम है – 'आत्महित' अर्थात् आत्महित करने का अपूर्व उपाय। क्या पुस्तक है, एक बार यदि कोई रुचिवान जीव इसका स्वाध्याय करे तो अवश्य ही आत्महित हुए बिना न रहे। सम्पूर्ण द्वादशांग

का रहस्य इस छोटी सी पुस्तक में विद्यमान है। पण्डितजी ने यह पुस्तक विशेषकर देहरादून के मुमुक्षुओं के लिए, हमारे लिए रची। पण्डितजी भी इसका आद्योपांत प्रतिदिन प्रात: स्वाध्याय करते रहे। जब आपका स्वास्थ्य आपका साथ देने में आनाकानी करने लगा तो आपने हमारे कल्याण हेतु — विश्व किसे कहते हैं ? विश्वव्यवस्था किस प्रकार की है ? – का मात्र दो पेज का संकलन लिखवाकर आत्महित पुस्तक की जिल्द के अंतर कवर पर चिपकवाया, जिसमें आपने –

(1) मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ, पृष्ठ 52 से – अनादि-निधन वस्तुएँ भिन्न-भिन्न अपनी मर्यादा लिए परिणमित होती हैं, अनादि-कालीन वस्तुएँ भिन्न-भिन्न हैं, कोई किसी के परिणमित कराने से परिणमित नहीं होता – वाला मन्त्र।

(2) प्रवचनसार, गाथा 93 का मर्म – जिनेन्द्रकथित विश्वव्यवस्था का रहस्य

(3) श्री समयसार, गाथा 3 का मर्म – एक द्रव्य, दूसरे को नहीं स्पर्श करता आदि...

(4) तथा कार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा 321 से 323 तक में विश्व किसे कहते हैं व विश्व व्यवस्था किस प्रकार है ? – में 'जिस जीव को जिस देश में, जिस काल में, जिस विधि से सर्वज्ञदेव के ज्ञान में आया है, वह नियम से होता है, आदि....'

केवलज्ञान का रहस्य व उसको मानने का फल। इस प्रकार इन चार बोलों से केवलज्ञान का रहस्य वस्तुस्वरूप की स्वतन्त्रता आदि बताकर हमको आदेश दिया कि जीवनभर इन चार बोलों का प्रतिदिन स्वाध्याय करें।

मेरे जीवन में जो भी कुछ अध्यात्म का अंश है, उसका पूरा श्रेय पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी को है। मैं उनके समझाये गये मार्ग पर चलता रहूँ, इस भावना से विराम लेता हूँ।

मुझे गर्व है.....

— **ज्ञायक जैन,** देवलाली

तीर्थधाम मङ्गलायतन के प्रथम बैच में होने का एक बड़ा फायदा यह था कि हमें पण्डित कैलाशचन्द्रजी की कक्षा का लाभ मिला। उनके पढ़ाने की कला और शैली से तो सभी बहुत परिचित हैं, पर सन् 2003 में उनकी उम्र 93 वर्ष थी, तब भी उनमें जोश व उससे भी ज्यादा बच्चों को पढ़ाने की उत्सुकता देखकर मैं स्तब्ध रह गया था। उनकी शैली में साफ था कि यहाँ से सिर्फ सुनकर नहीं, अपितु सीख कर ही आपको उठना होगा।

सन् 2007 में जब गर्मी की छुट्टियाँ बिताने मैं अलीगढ़ में था, तब आदरणीय पवन ताऊजी से उनके बचपन के कई किस्से सुने। पण्डितजी उनको बचपन में कई बार साथ में सोनगढ़ लेकर गये। पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में उन्होंने कक्षाएँ लीं। उन्होंने न केवल गुरुदेवश्री से सीखा, अपितु उस सीख को अपने व अपने परिवार को भी सिखलाया। इस बात की साक्षी तीर्थधाम मङ्गलायतन व मङ्गलायतन विश्वविद्यालय में निर्मित जिनमन्दिर हैं।

मैंने अपने पिताजी से भी पण्डित कैलाशचन्द्रजी के विषय में कई बात सुनी हैं। मैं गर्व महसूस करता हूँ कि मेरे परिवार की उपस्थित सभी पीढ़ियों ने उनसे धर्म लाभ लिया।

आदरणीय पण्डितजी के इस भव में 100 वर्ष पूर्ण करने पर शुभकामनाएँ।

एक महीने के पण्डितजी

— **मङ्गलार्थी अगम जैन,** मङ्गलायतन विश्वविद्यालय, बेसवाँ

इस मैं अपना दुर्भाग्य ही समझता हूँ कि मैं जब तक कुछ समझाने के लायक हुआ, उस समय तक आदरणीय पण्डितजी ने स्वास्थ्य की अस्वस्थता के कारण पढ़ाना बन्द कर दिया। जब मैं मङ्गलायतन में नौवीं कक्षा के छात्र के रूप में प्रविष्ट हुआ, तब तक पण्डितजी का नाम आदरणीय पवन ताऊजी के पिताजी के रूप में ही पहिचानता था। लेकिन हमारे भाग्योदय से और पण्डित जी के स्वास्थ्य में सुधार के चलते प्रारम्भ में ही उनकी कक्षा में बैठने का लाभ प्राप्त हुआ।

हम सभी मङ्गलार्थी बालक अवस्था में होने से मन की चंचलता और चित्त की अस्थिरता के कारण कभी विषय को पूरा ग्रहण नहीं कर पाए थे। परन्तु उसे मैं आश्चर्य ही कहूँगा कि आदरणीय पण्डितजी की कक्षा में सभी उनकी बात एकटक सुनते रहते थे। पता नहीं वह उनके चेहरे का तेज था या दमकता व्यक्तित्व था या ओजस्वी वाणी थी या अद्‌भुत समझाने की शैली थी, जो हमारे शरीर को तो दूर, हमारी आँखों और कानों को भी टस से मस नहीं होने देती थीं।

पण्डितजी मात्र एक महीना ही हमें अलौकिक ज्ञान प्रदत्त कर पाए। जिस प्रकार मोक्षमार्गप्रकाशक अपूर्ण होते हुए भी अपूर्व है, उसी प्रकार पण्डितजी द्वारा दिया ज्ञान अल्प समय में दिया होने पर भी अनन्त समय का सुख दिलानेवाला है। भले ही पण्डितजी अपने 100 वर्ष पूरे कर रहे हों। परन्तु तब से ही पण्डितजी हम सब मित्रों में 'एक महीने के पण्डितजी' के नाम से प्रसिद्ध हो गए। भले ही हमें उनकी कक्षा कम समय के लिए मिली परन्तु समय-समय पर तीर्थधाम मङ्गलायतन में उनका आगमन हमें रोमांचित कर देता था, और हम सभी भागकर अभिवादन करने उनके पास चले जाते थे।

इस बात का व्यक्तिगतरूप से मुझे बहुत दु:ख है कि पूज्य गुरुदेवश्री को देखने में मैं असमर्थ रहा परन्तु पण्डितजी का समागम हमें मिला, यह बात मन को सन्तुष्टि प्रदान करती है। यदि कभी हम हमारे जूनियर मङ्गलार्थियों को अपने अनुभव सुनाते थे, तब इस बात से अवश्य चिढ़ाते थे कि हमको एक महीने ही सही परन्तु पण्डितजी का समागम मिला और तुम सब वंचित रह गए।

निश्चितरूप से वे महान आत्मा हैं और उनकी विशुद्धता ने ही उनके शरीर को अभी तक जीवन्त बनाए रखा है। वे शीघ्र ही मोक्ष को प्राप्त करें – यही भावना है।

मङ्गल समर्पण

मेरे जीवन शिल्पकार

— मङ्गलार्थी अनुभव जैन, करेली

कभी-कभी मेरे दादाजी मुझे जिनधर्म की मनरोचक एवं हृदयटटोलक कथा सुनाया करते थे। शायद वो हमेशा से यही सोचा करते थे कि जैनधर्म के अमूल्य रत्न 'जैन शास्त्रों' का सदुपयोग इसी में है कि वो अमूल्य रत्न एक बन्द कोठरी में पड़े रहे। क्योंकि वो हम जैसे अल्पबुद्धि धारक श्रावकों के पठनगम्य नहीं है बल्कि विशेष ज्ञानधारी मुनिराजों के पठनगम्य है। उन्होंने कभी इस अनन्त अमृत के श्रोत अर्थात् जिनवाणी का अमृत का रसास्वादन का हमें मौका ही नहीं दिया और महाना पुण्योदय से यह अमृत कुण्ड खुले भी तो उनमें से वही जैन कथाएँ निकली और गौण रह गया जिनवाणी का अतुल्य खजाना – 'द्रव्यानुयोग।'

पर वो कहा जाता है न कि – 'कभी भी रात को देखकर उदास मत होओ, क्योंकि रात भी इसी का संकेत है कि एक सुबह भी आयेगी' और उसी सुबह के सूरज के रूप में उदित हुआ – 'कहान' जिनको हम परमपूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के नाम से पुकारते हैं। जिन्होंने अपनी शान्तिपूर्ण पर हजारों मुमुक्षुओं के हृदय को झकझोर देनेवाली वाणी और अपने विशेष बुद्धि उद्योतक ज्ञान के द्वारा जिनवाणी के रहस्य को खोलकर हम जैसे सोये हुए कितने ही मुमुक्षु भाईयों को एक बार फिर मोक्ष किरण दिखायी।

इसी मोक्षमार्ग प्रदायक खेत में गुरुदेवश्री अथवा कई और मेहनती एवं मूल्य विद्वानों ने अपने ज्ञानरूपी जल से इस मोक्षमार्ग प्रकाशक खेत को सींचा, जिससे सीमन्धर भगवान के वचनामृतरूप फसल उगी, जिसको उन्होंने देश के कोने-कोने में पहुँचाया। उन्हीं में से एक अनमोल रत्न, जिनकी बुलन्द आवाज को सुनकर गलत मान्यता का नामोनिशान नहीं रहा, जिनका प्रिय मित्र था – 'डण्डा', जो हम सबके शिक्षा गुरु हैं। वास्तव में तो सच्चा गुरु मोमबत्ती के समान होता है, जो स्वयं ही जलकर भी, अपने शिष्य को सच्चा तत्त्वज्ञान प्रदान करे। शायद उनमें यह सारे गुण विद्यमान हैं। जिन्होंने जिनेन्द्र तत्त्व को पूरे देश-विदेशों में फैलाया पर उसके बदले में कभी कुछ माँगा नहीं, उनकी हर शिक्षा मुफ्त व आनन्द पूर्ण थी, उनकी हर क्रिया मात्र इसी में अभिलिप्त थी कि कैसे न कैसे करके – मैं अपने शिष्यों को वास्तविकता बताऊँ, उन्हें संसाररूपी घने जंगल से बाहर निकालूँ। यही सब लक्षण एक बलिदानी एवं जिनधर्म प्रेमी गुरु में पाये जाने चाहिए और इन्हीं सब गुणों से लबालब थे – 'आदरणीय कैलाशचन्द्र पण्डितजी', जिन्हें हम सम्मानपूर्वक 'पण्डितजी' कहते हैं।

मङ्गल समर्पण

मेरे दादाजी– आदरणी कपूरचन्दजी जैन इन्हीं महत् पुरुष के प्रिय मित्र थे। जो साथ में ही सोनगढ़ की पवित्रधरा पर पण्डितजी के साथ रहे। जिनके ही परिणामरूप मुझे आज भी रोमांचक एवं मनोरंजक कहानियाँ सुनने को मिलती हैं।

उसी का एक आंशिकरूप मैं आपको बताता हूँ –

'पण्डितजी... मुझे एक बात बताइए... हम सच्चा सुख कैसे प्राप्त कर सकते हैं?' पण्डितजी की धर्मसभा में जिज्ञासु ने पूछा।

'सम्यक्दर्शन' पण्डितजी ने बेझिझक उत्तर दिया।

'क्या सुख को प्राप्त करने का कोई सुगम एवं सुलभ रास्ता नहीं है?' दूसरे जिज्ञासु ने उत्साहपूर्वक पूछा।

'मैं भगवान आत्मा हूँ... मैं अपने में ही स्वयं पूर्ण हूँ... इतना तुम्हें श्रद्धा लाने में कितना समय लगता है?... इसी सत्य को स्वीकार करने का नाम सम्यग्दर्शन है... यही सच्चे सुख को प्राप्त करने का सुगम व सरल रास्ता है।' यही उनका सरलताजनक उत्तर था।

वास्तव में पण्डितजी सदैव मेरे आदर्श रहेंगे। उनका दृढ़ निश्चय, उनकी सीख, उनका धर्म के प्रति लगाव, हमेशा मेरे हृदय मध्य विराजमान रहेगा।

उससे क्या हुआ कि मैं पूज्य गुरुदेवश्री को नहीं देख पाया, पर मैंने उनके ही रूप में आदरणीय पण्डितजी को देख लिया।

पण्डितजी, सच में मेरे व मेरे जीवन के शिल्पकार थे, शिल्पकार हैं, व शिल्पकार रहेंगे। उन्हीं के मार्गदर्शन से मुझे सच्चा जैन तत्त्व मिला, उन्हीं ने मुझे सच्चा मार्ग दिखलाया। उन्हीं के प्रभाव से हमारा आश्चर्यकारी तीर्थधाम मङ्गलायतन बना, जिसने मुझे बनाया जो कि आज मैं हूँ....

मैं कभी भी आदरणीय पण्डितजी को समर्पित करने के लिए शब्द जोड़ नहीं पाऊँगा... उन्होंने मुझे जो कुछ भी सिखाया मैं कभी भूल नहीं सकता, उनकी सीख – 'एक द्रव्य दूसरे द्रव्य में कुछ भी नहीं कर सकता' ने मेरा जीवन परिवर्तित कर दिया... मेरा शत–शत नमन – मेरे जीवन शिल्पकार – आदरणीय पूज्य कैलाश पण्डितजी को।

धर्मानुप्रेक्षी आदरणीय पण्डितजी

— मङ्गलार्थी केविन शाह, मुम्बई

वर्तमान युग में पूज्य गुरुदेवश्री के असीम उपकार की महिमा का बखान वाणी में करना असम्भव है, वास्तव में जिन पुण्य पुरुषों को ऐसे धर्मात्मा पुरुष के दर्शन और सान्निध्य का अवसर प्राप्त हुआ हैं, हम तो उनकी भी महिमा गाने में असमर्थ हैं। पूज्य गुरुदेवश्री ने जिन समयसार, पंच परमागम आदि ग्रन्थों रूपी सामग्री का मिश्रण करके आत्मरूपी (भगवान आत्मा) खीर बनाकर हम सबको पिलायी है, उनके बाद वह खीर पूरे भारत में यदि किसी ने भव्य जीवों को परोसी है तो वह एकमात्र आदरणीय पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी हैं। उनका जीवन महात्मा गाँधी के समान सरल, न्यायुक्त एवं नीतिपालक था। उनका जन्म टीकरी नामक एक छोटे से गाँव में हुआ था। वे जहाँ पर भी जाते थे, प्रवचनादि करने, तो आने-जाने का खर्च भी वे संस्था से नहीं लेते थे। उनके प्रवचनादि के श्रवण से हमें कुछ निम्न बिन्दुएँ ख्याल में आते हैं –

(1) सभी उद्धरण को कहाँ पर किस प्रकार दर्शाया है, वह ग्रन्थ खोलकर बताना। ग्रन्थों के उद्धरण का उचित प्रयोग।

(2) विषय भले ही कितना कठिन हो उसे सरलतम तरीके से समझाना / स्पष्ट करना।

(3) मुख्य बातों (सिद्धान्तों) को बार-बार दोहराना।

(4) यदि कोई उनसे प्रश्न करे तो जब तक शंकाकार की शंका समाधान न हो तब उसे समझाना। शंकाकार की शंका को पूर्णरूप से हल करना।

(5) वास्तव में सम्यग्ज्ञान का अंग-बहुमानाचार और अनिह्नवार ये दोनों इनके जीवन में सहज ही दिखायी देता हैं, वह सदैव अपने गुरु का नाम (पूज्य गुरुदेवश्री) एवं उनकी महिमा गाने में कभी नहीं चूकते।

(6) धर्म के प्रति असीम और दृढ़ श्रद्धा है। आदि अनेक गुणों से सुशोभित हैं। मैंने उनको प्रत्यक्ष देखा है, उनकी देशना सुनी है, यह मेरा अमूल्य सौभाग्य है, उनके पुण्य प्रताप से अपूर्व एवं अमूल्य यह तीर्थधाम मङ्गलायतन बना है, जिसमें सौ भावी भगवान अध्ययनरत हैं, जिसमें से एक मैं हूँ। वास्तव में पण्डितजी का हम पर असीमित उपकार है जो कि शब्दों में वर्णित नहीं हो सकता। उनका वर्णन तो अकथनीय है-अवर्णनीय है।

पञ्चम काल के अतुल्य सूर्य.....

— मङ्गलार्थी भावेश जैन

इस पञ्चम काल में–वर्तमान में साक्षात् सच्चे देव–गुरु का तो भरतक्षेत्र में विरह है। इस समय हमारे कल्याण में सच्चे शास्त्र ही निमित्त हो सकते हैं। हमारे ज्ञान का भी विशिष्ट क्षयोपशम नहीं है, और बुद्धि भी मन्द हैं; इसलिए हम जिनवाणी के इस गूढ़ तत्त्वज्ञान को समझने में स्वत: समर्थ नहीं हैं। इस काल में जिनवाणी का पठन–पाठन का कार्य विद्वानों ने ही सँभाला है। इस विद्वानों की शृंखला में पण्डित बनारसीदासजी, टोडरमलजी, दौलतरामजी इत्यादि से लेकर पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी तक का महत्त्वपूर्ण योगदान है। पूज्य गुरुदेवश्री के उत्कृष्ट शिष्यों में पण्डित कैलाशचन्द्रजी भी एक हैं। पण्डितजी अध्यात्मरस के अत्यन्त पिपासु एवं गूढ़ तत्त्वज्ञान के वेत्ता हैं। पण्डितजी ने इस जिनधर्म की पताका को सम्पूर्ण भारतवर्ष में स्वयं ही फहराया। पण्डितजी के व्याख्यान निज स्वरूप पर केन्द्रित होकर, वैराग्यरस का ही पोषण करते हैं। पण्डितजी को अपने गुरु (श्री गुरुदेव) के प्रति भी अति बहुमान हैं, वे कहते हैं **यदि गुरुदेव न होते तो शास्त्र के नाम भी सुनने को नहीं मिलता। गुरुदेव ने तो वर्तमान में तीर्थङ्कर समान कार्य किया है।** पण्डितजी अत्यन्त सरलस्वभावी हैं। उनकी कक्षा लेने की शैली हर परिस्थिति में क्रमबद्ध के सिद्धान्त को सिद्ध करती है। वे भगवान आत्मा को शरीर (मृतक कलेवर) से सर्वथा भिन्न बताकर, धर्म की उत्पत्ति हो – ऐसी प्रेरणा से हमेशा प्रेरित करते रहते हैं। उनका मुख्य प्रसिद्ध आध्यात्मिक मन्त्र है – स्व में बस, पर में खस, आयेगा आत्मा में अतीन्द्रिय रस, यही है अध्यात्म का कस, इतना करो तो बस!

यदि यह जीव, पुद्‌गल की क्रिया को अपना मानता है तो साक्षात् निगोद की टिकट पर स्वर्ण अक्षर में स्वयं हस्ताक्षर कर रहा है – ऐसा पण्डितजी बारम्बार कहकर हमें सचेत करते हैं।

इस शरीर (मृतक कलेवर) का भगवान आत्मा से सर्वथा सम्बन्ध नहीं, ऐसा जब मानेगा, तब ही धर्म की प्राप्ति हो जायेगी। वर्तमान में पण्डितजी के उद्देश्य को तीर्थधाम मङ्गलायतन जीवन्तता प्रदान कर रहा है। तीर्थधाम मङ्गलायतन की मिट्टी में भी पण्डितजी

के गूढ़ तत्त्वज्ञान की सुगन्ध भरी हैं।

नहिं भूला सकते हम उनको, ऐसा किया उपकार है।
पूज्य पण्डितजी के चरणों में, वन्दना शत् बार है॥

इस पञ्चम काल में पण्डितजी (महासमर्थ विद्वान) का बहुमूल्य समागम मिलना एक अचम्भा है और यदि हम सब अपना मनुष्यजन्म सफल बनाना चाहते हैं तो इस महान व्यक्तित्व के प्रत्येक शब्द को हृदयंगम करना आवश्यक है।

मङ्गल समर्पण

अध्यात्मक्रान्ति के सूत्रधार पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अनन्यभक्त
पण्डित श्री कैलाशचन्द्रजी के चरणों में समर्पित

— **वीना जैन,** देहरादून

हे ज्ञानमूर्ति तुम चरणों में वंदन शत शत बार
मुझ पामर पर गुरुवर तुमरा परम परम उपकार।
मङ्गलायतन में दिव्य वाणी की सतत बहाते धार
जयवन्त रहो हे परम गुरु, हे करुणासिंधु अपार॥

अपने ही अन्तर्विवेक, से ढूंढा अपना मार्ग
अपने ही अन्तर्नेत्रों से खोजा निज परमार्थ।
अन्तर की गंगा से बहती आत्मशक्ति की धार
इसी धार से सराबोर इनका जीवन संसार।
भवसागर में पथ भटकों के तटदाता जलयान
आत्म उन्नति के पुष्पों से सुरभित है उद्यान।
हे ज्ञानमूर्ति तुम चरणों.........।

जिनका सच्चा बल है केवल आत्मशान्ति सन्तोष
इस वैभव से भरा हुआ है इनका अन्तर कोष।
मानअमान में शत्रु-मित्र में समता धारें आप
सुख-दुख की सम्पूर्ण दशाएँ हर्ष सहित स्वीकार।
भेदज्ञान के अन्तर्बल से खिला रहे मुख द्वार
सत्य अहिंसा भावना अर सब जीवों से प्यार।
हे ज्ञानमूर्ति तुम चरणों.........।

कहानगुरु ने तीर्थंकर सम दिया है तत्त्व अपार
हे सद्गुरु! गणधर बन तुमने लुटाया तत्त्व का सार।
गाँव गाँव जा जन जन को सुनाया आत्मसंगीत
जीव जुदा अर देह जुदा हर श्वास में एक ही गीत।
तन धन की परवाह नहीं, नहिं तन में तकिन थकान
हे ज्ञानमूर्ति तुम चरणों.........।

मङ्गल समर्पण

नित्य नये उत्साह उमंगें मन में करुणा अपार।
वज्रवाणी से तरुण पुष्पसम तत्त्वों की बौछार
मिथ्या शत्रु पल में भागे 'डण्डेवाले' आप।
कभी कठोर कभी कोमल मन से बरसाते दुलार
गुरु विरह में गुरु कृपा में बहती अश्रु धार।
हे ज्ञानमूर्ति तुम चरणों.........।

'कैलाश' शिखर सा अचल अटल इनका आतम श्रद्धान
'पवन' के झोंके डिगा सकें नहीं इनका आतम ज्ञान।
'आशा' एक अर 'स्वप्न' एक मन 'वीणा' का एक गान
निज आतम में रहूँ मगन अर हो शाश्वत शिवधान॥
ये आध्यात्मिक श्रेष्ठ पुरुष ही मुमुक्षु समाज की लाज
इतनी खरी कसौटी वाले पुरुष एक बस आप॥
हे ज्ञानमूर्ति तुम चरणों.........।

उपकार गुरु का चुकाऊँ कैसे, ये सामर्थ्य नहीं मुझमें
बस चलूँ आपके मारग में, सर्वस्व समर्पित चरणों में।
अन्तर अनुभव करूँ, आत्म सामग्री निज तैयार करुँ
भक्ति करूँ न ऐसी तब तक, चरण शरण तुमरी चहूँ।
चरण शरण तुमरी चहूँ, चरण शरण तुमरी चहूँ,
मार्ग दिखाते रहना गुरु बस इतनी सी मैं विनती करुँ।
इतनी सी मैं विनती करुँ।
हे ज्ञानमूर्ति तुम चरणों...।

आदरणीय पण्डित श्री कैलासचंदजी शिखरपुरुष-अभिनंदन पत्र

— **पण्डित राजेन्द्रकुमार जैन,** जबलपुर

गाँव-गाँव में गली गली में, जिनशासन के गीत गुंजाये।
गुरु कहान से दिव्य देशना, सुनकर जीवन धन जो पाये॥
वो 'पण्डित कैलाशचंद्रजी', बुलन्दशहर वाले सब जानें,
'मङ्गलायतन' तीरथ जिससे, सारा जगत उन्हें पहचानें॥
नगर-नगर में महिनों महिनों रहकर वो शिक्षा देते थे
अपने पैसों से आते थे, कभी विदाई भी नहिं लेते थे॥
जैन प्रवेश रत्नमाला के, सात भाग उनने छपवाये।
जैनधर्म के हीरे मोती, पन्ने पन्ने पर जड़वाये॥
आप अनादि निधन विश्व का, मंत्र सभी को रटवाते थे।
सब रोगों की एक दवा दे स्वस्थ बनाकर ही जाते थे॥
अहो अनादिनिधन वस्तुयें, स्वयं सिद्ध परिणाम असहाई।
नहीं कोई आधीन किसी के, कौन करे किसका क्या भाई?
भ्रम से पीड़ित जगत जीव जन, मृग तृष्णा सम विचर रहे हैं।
आत्म भ्रांति सम रोग न जग में, आत्मज्ञान दे भ्रम हरते हैं।
अरे विश्व यह जड़ चेतन की, अकृत नगरी प्रभु वतलायी।
छहों द्रव्य हिलमिलकर रहते, कभी न उनमें होत लड़ाई॥
द्रव्य और गुण पर्यायों की सुन्दर परिभाषा समझाते।
अस्तित्वादि छहों गुणों से, शाश्वत् हूँ यह बात बिठाते॥
सप्त तत्त्व की गहन व्याख्या जो गुरुदेव श्री से पायी।
स्वयं समझकर अनुभव करके, फिर दुनिया को सीख सिखाई॥
चेतन को उपयोगरूप है, छहढाला की अमर पढ़ाई।
विन्मूरत चिन्मूरत की तो, रोम रोम से कीरत गाई॥
ताको न जान विपरीत मान की, दृष्टांतों से बात बिठाई।
मैंने किया, ब्रुश, मुँह धोया, मिथ्यामति की बहुत धुनाई॥

मङ्गल समर्पण

धन्य आपने मानव जीवन के पल-पल हैं सफल बनाये।
महावीर शासन सरिता की एक लहर तुम भी बन आये॥
मङ्गलायतन एक धरोहर, जैन जगत को सौंप रहे हो।
'पवन' रतन अनमोल जगत का, आप जगत को सौंप रहे हो॥
तूफानी है चाल 'पवन' की, सारी दुनिया देख रही है।
ज्ञानदान की सुगढ़ संस्कृति तुमसे जगती सीख रही है॥
स्वयं अध्ययन अध्यापन में, जीवन अपना लगा दिया है।
जुगों जुगों जिनशासन जीवे ऐसा झण्डा गाड़ दिया है॥
धन्य मुनिदशा रचना अद्भुत भक्ति मुनिश्वर प्रति दिखलाई।
धवल जिनालय धवल जिनेश्वर की प्रतिमा तुमने पधराई॥
सम्यग्दर्शन तुम पाओगे, इक दिन अरहन्त सिद्ध बनोगे।
मंगलार्थी के जीवनशिल्पी, इक दिन सिद्ध शिला शोभोगे॥
श्री कैलास शिखर पर्वत रच, आदीश्वर प्रभु को पधराया।
जिनशासन की शुद्ध संस्कृति का सब जग को पाठ पढ़ाया॥
मानस्तम्भ मान न आने दे मानो इसलिए बनाया।
गुरुदेव की कीर्ति लता फहरायेगी यह भाव समाया।

शुभ-कामना

— ममता जैन 'मणि',
जैनदर्शनाचार्य, रोहिणी, दिल्ली

जैन सिद्धान्त प्रवेशिका की घुट्टी, जन-जन के कण्ठ में उतारी।
पण्डित श्री कैलाशचन्द की, महिमा जग में न्यारी॥
शत आयु तो हुई देह की, आप हुए अमरायु।
यश गाथायें व्याप्त सदा हो, ज्यों नभ मांहि वायु॥

मङ्गल समर्पण

(तर्ज - रोम रोम से निकले)

— **नेमीचन्द पहाड़िया,** पीसांगन(राज०)

गुरुवर कैलाशचन्दजी को, शत शत नमन हमारा ॥ हो शत शत... ॥
जीवन जिनका हुआ समर्पित, तत्त्वज्ञान प्रचारा ॥ हो शत शत... ॥
जिनवाणी की महिमा आई, भव तन से विरक्ति समाई।
निज-पर के कल्याण हेतु आपने ज्ञान ध्वजा फहराई।
नगर-नगर धर्मोपदेश दे, किया जगत उपकारा ॥ हो शत शत... ॥

चिर मिथ्यात्व छुड़ाया, सत् शिव मग समझाया।
भ्रम अज्ञान ही है दु:ख कारण, दृढ़ श्रद्धान कराया।
ग्रन्थ मोक्षमार्गप्रकाशक का, जिनने लिया सहारा ॥ हो शत शत... ॥

गुरु कहान मन भाये, प्रमुख शिष्य कहलाये।
शुद्धातम की चर्चा सुन जिनके, रोम रोम हुलसाये।
आत्मज्ञान बिन कभी न होता, भव दु:ख से छुटकारा ॥ हो शत शत... ॥

जागे थे भाग्य हमारे, पीसांगन आप पधारे।
सुन दस दिन उपदेश आपका, खुल गये नेत्र हमारे।
तीस वर्ष भये ना भूले अरु ना भूलेंगे, महा उपकार तुम्हारा ॥ हो शत शत... ॥

तत्त्वज्ञान की गंगा बहाई, अमृतवाणी वर्षायी,
भरि भरि अंजुली जिनने पान किया, अपनी प्यास बुझाई।
तीर्थधाम मङ्गलायतन में, बज रहा आज नगारा ॥ हो शत शत... ॥

सौम्य मुद्रा अति सोहे, लख भविजन का मन मोहे।
मधुर लगे प्रियवाणी आपकी, मोह महा तम खोवे।
आदर्श रूप है जीवन आपका, लगता सबको प्यारा ॥ हो शत शत... ॥

आप प्रसाद ये ही चाहूं निज चेतन में रम जाऊँ।
ध्रुव ज्ञायक अविनाशी तत्त्व को, ज्ञान का ज्ञेय बनाऊँ।
निज वैभव अविलम्ब प्राप्त हो, ये ही लक्ष्य हमारा ॥ हो शत शत... ॥

दूध का दूध पानी का पानी....

— **रमेशकुमार जैन,** कहान क्लोथ स्टोर, सोनगढ़

दूध का दूध पानी का पानी,
सुनो क्या कहती है जिनवाणी ॥टेक ॥
सब तत्त्वों को पृथक् जानकर
नहीं किसी को कर्ता लखकर
बन जाओ तुम भेदविज्ञानी ॥ दूध का दूध.......

सामान्य–विशेष वस्तु पहचानो,
विशेष को गौण करना जानो
अकर्ता हो कर्ता न मानो
समझो मात्र स्वयं हो ज्ञानी ॥ दूध का दूध.....

बुलन्दशहर से पण्डितजी आते
डण्डा ठोंककर हमें जगाते
हम सबका मिथ्यात्व भगाते
सुना रहे हमको जिनवाणी । दूध का दूध......

गुरुदेव का माल वो लायें
प्रश्नोत्तर–माला समझायें
सात भागों को याद जो कर ले
हो जाये वह सम्यग्ज्ञानी । दूध का दूध......

पवनजी के पिता कहाये
स्वप्निल के दादा कहलाये
हम सब के प्यारे पण्डितजी
कहते हमसे होजा ज्ञानी ॥ दूध का दूध.....

मङ्गलायतन जिनकी प्रेरणा
स्वाध्याय तुम नित–प्रति करना
लोग कहें सौ वर्ष हुए हैं
(कहते) हम तो अजर अमर है ज्ञानी । दूध का दूध.....

शतायू होवें ....

— पण्डित ऋषभकुमार शास्त्री, प्रत्यूष जैन

अखिल भारतीय जैन युवा फेडरेशन एवं सीमन्धर संगीत सरिता, छिन्दवाड़ा

शतायू होवें चिरायु हावें डण्डे वाले पण्डितजी
कृतज्ञता से तुम्हें नमन है डण्डे वाले पण्डितजी

गौरव गाया गाने की आज मंगल घड़ियाँ आई हैं
मङ्गलायतन के प्रांगण में अद्‌भुत खुशियाँ छाई हैं
जो निजज्ञायक रस में भीगे उनका ये सम्मान है
हृदय में जिनके जिनेन्द्र भक्ति, उनका गौरव गान है।
शतायू होवें........ कृत्यज्ञता से............

कहीं न तृप्ती मिली आपको, रहे भटकते उमर गंवाई
जो सोनगढ़ का मिला समागम, अचिन्त्य तृप्ती हृदय में आई
कहान गुरु से जो बात पाई, वहीं तो बातें हमें सिखाई
गजब की शैली पड़ाने वाली, विस्मृत कभी भी वे हो न पाई
शतायू होवें........ कृत्यज्ञता से............

गिरी कैलास शिखर सम दृड़ता, ब्रह्मचर्य की धारण की
सुनी ना मानी जगत की बातें, जो कि व्यर्थ अकारण भी
दृढ़ संकल्पों का प्रतीक यह, मङ्गलायतन का उपवन
अनुगामी बन सींच रहे हैं, धर्म अनुरागी पुत्र पवन
शतायू होवें........ कृत्यज्ञता से............

स्वप्निल था जो स्वप्न सरीखा, आज वही साकार हुआ
भूत भविष्य अरु वर्तमान, त्रय पीढ़ी पर उपकार हुआ
तीर्थधाम अरु भव्य जिनालय, युगों-युगों तक उपकारी
गुरुदेव के तत्त्व प्रभाव से, अंतर दृष्टी उर धारी
शतायू होवें........ कृत्यज्ञता से............

कैसे भुला सकेगें.....

— **डॉ. सुरभि समकित जैन,** खण्डवा

गुरु ने किए उपकार अनैको, कैसे उनको भुला सकेगे ॥टेक ॥
तत्त्वज्ञान की अद्‌भुत निधियाँ, खुब लुटाई शिविरों में।
तीर्थङ्कर का विरह भूला दिया, ज्ञान का सागर बहा दिया।
गणधरों सी भूमिका निभाई, जन-जन का मिथ्यात्व नशाया।
किए अगणित उपकार हम पर, कैसे उनकों भूला सकेंगे।
गुरुदेव चरणों में शत-शत बार वंदन।
जिनका है करुण निर्भर मन, जिनके है अमृत स्नेह वाचन।
जिनके है निश्चल शांत नयन, सत्य प्रेम से भीगे है वचन।
किया गुरुदेव को अर्पित जीवन, अमित अनादि है जिनके सृजन।
दिए आपने चारों दान, और किया निर्मित मङ्गलायतन।
किया जैनधर्म को बुलन्द, शिक्षा, ज्ञानदान कर बने महान।
किये जीवन में सब सार्थक काज, निज कल्याण में लगी लगन।
आपके पद चिह्नों का प्रशय पाकर, हम भी करें समकित से सुरभित जीवन।
ऐसे आदरणीय पण्डितजी के चरणों में मेरा सविनय सादर प्रणाम- ।

महावीर से कुन्दकुन्द तक.....

— **प्रत्यूष जैन,** छिन्दवाड़ा

महावीर से कुन्दकुन्द तक, आयी जो श्रुतधारा।
गुरुवरश्री कानजीस्वामी ने उसको ही विस्तारा॥

अनुगामी बन पण्डितजी ने, सतत प्रचारी जिनवाणी।
सार्थक नरभव हुआ आपका, उर धारी जिनवर वाणी॥

सतत भावना यही आपकी, जिनवाणी हृदयंगम हो।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरणमय, रत्नत्रय का संगम हो॥

निस्पृह, निरपेक्ष, निर्भय, निरभिमान, स्वाभीमानी।
साधर्मी वात्सल्य आपका, अनुकरणीय सत् ज्ञानी॥

जो त्रिकाल से स्वयं सिद्ध, ध्रुव ज्ञायक की महिमा जानी।
जिनशासन की प्रभावना, महापुरुष दृढ़ श्रद्धानी॥

अणु-अणु की स्वतंत्रता के, शंखनाद का है उद्घोष।
कर्ताबुद्धि का अभाव है, धन्य-धन्य जीवन निर्दोष॥

भीग रहा अन्तर्मन सारा, शुद्धातम की सौरभ से।
मङ्गलायतन की शुभ रचना, मुमुक्षुओं का गौरव है॥

जिनशासन की प्रभावना में, पूर्ण समर्पित पुत्र पवन
स्वप्निल और परिवारजनों का, भाव भरा है अभिनंदन।

जन्म मरण का हो अभाव और, शाश्वत् सुख प्रगटाएँ आप।
यही भावना है पण्डितजी, सिद्ध स्वपद पा जाएँ आप॥

मङ्गल समर्पण

हमारे पण्डित जी की कुछ और ही बात है।

क्यों बात न करे हम सब उनकी अपनी
वे कहते हैं जीव अनन्त, पुद्गल अनन्तानंत है
धर्म-अधर्म आकाश एक; काल असंख्यात है
अनादि से करते रहे हम चिन्ता पर की
ऐसे न मिलेगी मंजिल इस सफर की
हमारे पण्डितजी.................

तू अमूर्तिक प्रदेश का पुञ्ज ज्ञानादि गुणों का धारी है
अनादि-निधन वस्तु, फिर क्यूँ चिन्ता इतनी सारी है
मूल में भूल पड़ी रही जीवन भर
ओढ़ी चुनरी सदा ही आडम्बर की
हमारे पण्डितजी.................

जिन-जिनवर-जिनवरऋषभ ने कहा
तू अनादि-निधन वस्तु आप है
पर से भिन्न, अपने से अभिन्न है
कोई किसी के आधीन नहीं यह
धारण करले बात धर्म दिगम्बर की
हमारे पण्डितजी.................

अब स्व में बस पर से खस
आयेगा अतीन्द्रिय रस इतना करो तो बस
चलो चलें अशोक प्रण लेकर उस पथ पर
राह दिखाई गुरु ने जो अजर अमर की
हमारे पण्डितजी.................

सिद्ध स्वपद पा जाएँ आप

— **अशोक जैन,** छिन्दवाड़ा, मुमुक्षु मण्डल

महावीर से कुन्दकुन्द तक आई जो श्रुतधारा,
परमपूज्य श्री कहान गुरुवर ने उसको ही विस्तारा।

अनुगामी बन पण्डितजी ने सतत् प्रचारी जिनवाणी,
सार्थक नरभव हुआ आपका उरधारी जिनवरवाणी।

एक भावना यही आपक जिनवाणी हृदयंगम हो,
सम्यक् दर्शन ज्ञान-चरणमय रत्नत्रय का संगम थो।

रे! निष्पद्व निरपेक्ष निर्भय, निरभिमान, स्वाभीमानी,
साधर्मी वात्सल्य आपका, अनुकरणीय है ज्ञानी।

जो त्रिकाल से स्वयंसिद्ध, ध्रुव ज्ञायक की महिमा जानी,
जिनशासन की प्रभावना की महापुरुष दृढ़ श्रद्धानी।

भीग रहा अन्तरमन सारा, शुद्धात्म की सौरभ से,
मङ्गलायतन की शुभ रचना, मुमुक्षुओं का गौरव है।

जिनशासन की प्रभावना में पूर्ण समर्पित पुत्र पवन,
स्वप्निल और परिवारजनों का भाव भरा है, अभिनन्दन।

जन्म मरण का हो अभाव और शाश्वत सुख प्रगटायें आप,
यही भावना है पण्डितजी सिद्ध स्वपद पा जाएँ आप।

अन्तः भावना

— केशवचन्द्र जैन, कुरावली (मैनपुरी)

सुज्ञान दृढ़ हुआ, मिल गुरु कहान से।
मिट गया मोह अब, स्व के प्रकाश से॥
झकझोरा प्रथम निज के, विपरीत भाव को।
क्यों इतने भव काट दिये, भूल निज स्वभाव को॥
उतरे सोपान द्वारा, निरखत स्वयं को।
पल भर ही रहे अविचल, देख सौख्य भाव को।
कैलाश शिखर, नजरों वाला।
पर आत्म शिखर, अनुभववाला॥
एकाग्र रहूँ निज वैभव में रत, वन ज्ञान शरीरी सिद्धोंवाला।
सदा से मैं कारण परमात्मा, पर्यायें तो गौंण रही हैं।
श्रद्धा, ज्ञान, लीनता अभेद हो, चिर टिकने का भाव वहीं हैं॥
शुभ-अशुभ भाव की महिमा, दृष्टि से तो उतर गयी है।
स्व-स्वमय की गरिमा अब तो, पल-पल में महक रही है।

वरिष्ठ व श्रेष्ठ जिनवाणी-सेवक

— नरेन्द्रकुमार जैन, जबलपुर

पं. – पंचम परमभाव का आश्रय ले, त्वरित करें वे निज कल्याण।
कै – कैवल्य कला के ज्ञेय अनन्तों, किन्तु ज्ञेय एक है आतमज्ञान॥
ला – लाभ-हानि से रहित ध्रुव ज्ञायक में ही करो विराम।
श – शक्ति अनन्त बताते श्री गुरु, खिलने पर बनते भगवान॥
च – चरणानुयोग की चर्या धर्म नहीं, बहुजन को सिखलाया अविराम।
न्– न्याय नीति से जीवन जीकर, शुद्ध भाव में हो विश्राम॥
द्र – द्रव्य-गुण-पर्याय बताते, किया समर्पित यह जीवन।
जी – जीव-द्रव्य ही उपादेय है, यही देशना है भविजन॥
जै – जैन धर्म शुभ मङ्गल पाया, जन्म-मरण का हो अवसान।
न – नगर देश अरु सकल विश्व के, प्राणी जानें निज तत्त्व महान॥

मुक्तक

— दुलीचंद जैन

अध्यक्ष श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, खैरागढ़

सम्यक्त्व दीप ले हाथों में, मिथ्यात्व अन्धेरा किया दूर।
जिनवाणी अमृतधारा की, मानस मानस में दिया पूर॥

फूल खिलते हैं मगर कुछ ही महकते हैं,
तारे उगते हैं मगर कुछ ही चमकते हैं।
आते-जाते लोग तो बहुत हैं वसुन्धरा पर,
गुरु कैलाशजी से तत्त्वज्ञानी विरले ही जन्मते हैं॥

आत्मार्थी जन धन्य हुए पाकर तुमसे गुरु को,
तत्त्वज्ञान की शिक्षा देकर बता दिया निजपुर को।
सींच दिया ज्ञानामृत जल से सिंचित दुआ चमन,
हे गुरुवर! तुमको मेरा श्रद्धा भरा नमन है॥

समर्पण प्रति समर्पित

— मङ्गलार्थी विक्रम विशाल जैन, 9 वीं

हमारे प्यारे पण्डितजी कैलाश जिन्हें हम कहते।
जैन धर्म की एबीसीडी जो हमें सिखलाते॥
डण्डे वाले पण्डितजी, वह ही कहलाते।
पूछते प्रश्न सभी से, जो स्वाध्याय में पढ़ाते॥
उत्तर अगर कोई न बताते, तो प्यार की फटाकर लगाते।
गुरुदेव श्री के हैं भक्त, जिनवाणी के हैं अति निकट॥
लेकिन योग ऐसा है आया, शरीर ने साथ न निभाया।
जब तक योग ऐसा न आया, गये अलग-अलग गाँवों में वो॥
दोनों हाथों को उठाकर, करी धर्म प्रभावना फैलाकर।
मङ्गलार्थी जिन्हें चाहते अति ऐसे हैं हमारे प्यारे पण्डितजी॥

समर्पण प्रति समर्पित

— मङ्गलार्थी सर्वार्थ जैन, दसवीं

शंखनाद जिनधर्म का, किया दिशा चहुँ ओर।
काँप उठा मिथ्यात्व भी, गर्जन सुनकर घोर॥
शुद्ध सदा परमात्मा, गिरि कैलाश समान।
धाम एक मुक्तिपुरी, निज में बस विश्राम।
मन्त्र बताया जगत को, कैसे सुख को पाय।
विनाशीक नहिं खण्ड नहिं, जो स्वाधीनता लाय॥
महिमा श्री गुरुदेव की, ज्योति जले तुम माँहि।
चाहे कोई हो तूफान, बुझा सके उसे नाँहि॥
सहज आप व्यक्तित्व था, मन जल सम या साफ।
समकित अन्तर प्रगट हो, मात्र ध्येय या आप॥
स्वप्न में एक था हृदय में, होवे ऐसा धाम।
फैलावे जिनदेशना, मङ्गलायतन हो नाम॥
घर-घर पहुँचें सात तत्व, चहकें सब मन मोर।
धारा बरसे धर्म की, नगर-नगर चहुँ ओर॥
धन्य तुम्हारी भावना, धन्य समर्पण भाव।
गुरुदेव प्रति विनय अरु, जिनवाणी प्रति चाव॥
स्व में बस हो पर से खस, आए अतीन्द्रिय रस।
यही है कश अध्यात्म का, और इतना करो तो बस॥

मङ्गल समर्पण

— मङ्गलार्थी आकाश जैन, केसली

तुम्हें चाहता हूँ मैं सुनाना महिमा समर्पण भाव की,
भाव समर्पण का है उनका जिनवर तत्त्व महान प्रति।

ज्ञान पूज्य गुरुदेव से पाकर मन में जागा अनुपम भाव,
मैं भी कुछ ऐसा ही करूँगा जिससे हो संसार अभाव।

नाम बताऊँ मैं तुम्हें उनका जिनके यश का नहीं है पार,
इन शब्दों में नहीं है ताकत बता सकूँ वह भाव अपार।

जैसा नाम है उनका भाई वैसा भाव समर्पण है,
ऐसे पुरुष महान का जीवन तत्त्वज्ञान में अर्पण है।

जैसे जग में जग से उन्नत पर्वत है 'कैलाश' महान,
यही नाम है उनका भाई तत्त्वज्ञान है जिनकी शान।

पण्डित हैं वो 'डण्डावाले' सदा था उनको 'आर्जव' भाव,
ज्ञान गुरु का सबको बाँटा करना चाहा भव का अभाव।

एक दिवस जब मन में उनके एक मङ्गलमय भाव जगा,
हो कोई एक मङ्गल आयतन तत्त्वज्ञान भी बटे जहाँ।

कह अपने फिर पुत्र 'पवन' को एक मङ्गल निर्माण किया,
इस मङ्गल निर्माण कृति को 'मङ्गलायतन' नाम दिया।

जहाँ विराजते आदि प्रभु की छाँव में भावी सिद्ध अहा,
सभी मङ्गल के अर्थी भविजन पाते, तत्त्व का ज्ञान जहाँ।

हम सब भावी सिद्ध आपके 'स्वप्नो' को अब पूर्ण करें,
'प्रिय' मात्र बस यही 'आशा' है, सद्गुरु का सम्मान करें।

वंदित है वह भाव 'समर्पण' जो 'आकाश' में गूँजित है,
यह शताब्दी मङ्गलमय उनके चरणों में समर्पित है।

आदरणीय कैलाशचन्द्रजी पण्डितजी

— **मङ्गलार्थी अनितेश जैन,** कक्षा 9

बुलन्दशहर से उदित हुआ सूर्य, तत्त्व रोशन करता रहा।
अपनी अमृतवाणी से, भविजन मन बाग को करता हरा॥
भव–भव की दुःख ज्वाला छोड़कर, शीतल आतम की बात गही।
गुरुओं के उपकार को हम तो भूला सकते नहीं॥

गुरुदेवश्री के प्रति स्नेह उमड़ता, सम्पूर्ण हृदय समर्पित थे।
प्रवचनों में महिमा कहते, सेवा में हर दम अर्पित थे॥
गुरुदेवश्री के बिन हम धूल, मिट्टी उनसे ही सब बात लही।
गुरुओं के उपकार को हम तो भूला सकते नहीं॥

भारतवर्ष के कोने–कोने में, जाते 'डण्डेवाले पण्डित'।
तत्त्वज्ञान को रोशन करने, विपरीत मान्यता को करने खण्डित,
वाणी का इतना प्रभाव था, पुण्य–पाप की इच्छा भी मरी।
गुरुओं के उपकार को हम तो भूला सकते नहीं॥

अब समझ नहीं आता, कैसे चुकाये इनका उपकार ?
फूल चढ़ाऊँ, माला चढ़ाऊँ या चढ़ाऊँ इनको हार ?
उपकार चुकाना है तो मात्र करो, अपनी बुद्धि को सही।
गुरुओं के उपकार को हम तो भूला सकते नहीं॥